www.shriramedu.com

✆ 9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

1. पर्यावरण समस्याएं

PAGE NO.
DATE : / /

ओज़ोन परत क्षरण :-

→ ओज़ोन परत समताप मंडल में [20 km – 35 km] स्थित है।

ओज़ोन परत का कार्य :-

(1) सूर्य से आने वाली पराबैंगनी [हानिकारक] विकिरणों का अवशोषण करना
(2) ओज़ोन परत को "पृथ्वी का सुरक्षा कवच" कहते हैं।

ओज़ोन परत को हानि पहुँचाने वाली गैसें :-

1. CFC
2. HCFC
3. मिथाइल ब्रोमाइड
4. फ्रियॉन

→ सर्वप्रथम 1895 में फॉरमेन नामक वैज्ञानिक ने अण्टार्कटिका महाद्वीप पर ओज़ोन परत ~~परत~~ पर छिद्र का पता लगाया था।

→ ओजोन परत की मोटाई मापने की इकाई :- डॉबसन

ओजोन परत छिद्र के हानिकारक प्रभाव :-

(1) चर्म कैंसर का होना
(2) मुलायम घास का नष्ट होना
(3) मोतिया बिन्द

→ विश्व ओजोन दिवस :- 16 सितम्बर

→ 16 Sep. 1987 में कनाडा के मांट्रियल शहर में ओजोन परत को हानि पहुँचाने वाली गैसों पर संयुक्त राष्ट्र के देशों द्वारा कदम उठाया गया।

→ ओजोन परत का सर्वाधिक हानि :- Sep. - Oct. में

→ सुबह के समय ओजोन परत की मोटाई अधिक तथा सांयकाल के समय कम होती है।

Q.1 भारत के कौनसे शहर के ऊपर ओजोन परत की मोटाई अधिक होगी :- श्रीनगर

Q.2 किस महाद्वीप में ओजोन परत छिद्र के कारण चर्म कैंसर रोगी पाये जायेंगे → ऑस्ट्रेलिया

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

2. ग्लोबल वार्मिंग | वैश्वीकरण | ग्रीन हाउस प्रभाव | पौधा घर प्रभाव

→ पृथ्वी का औसत तापमान :- 15°C

→ पृथ्वी के वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि होना भूतापन | ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है।

→ ग्लोबल वार्मिंग के लिए उत्तरदायी गैसें | ग्रीन हाउस गैसें

(1) CO_2 – सर्वाधिक

(2) CH_4 – मिथेन [गोबर, दलदली क्षेत्रों में, जुगाली]

(3) CFC – क्लोरो फ्लोरो कार्बन [फ्रीज] ओजोन पर के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार

(4) N_2O – नाइट्रस ऑक्साइड (ज्वालामुखी)

(5) HF_6 – हेक्सा फ्लोराइड (फ्रीज)

(6) SO_2 – सल्फर डाई ऑक्साइड [यातायात]

हानिकारक प्रभाव :- (1) ध्रुवीय क्षेत्रों की बर्फ का पिघलना।

(2) महासागरों एवं सागरों के जल स्तर में वृद्धि होना।

(3) भीषण चक्रवातों एवं सूखा की स्थिति उत्पन्न होना।

(4) जैव - विविधता का नष्ट होना।

(5) मच्छर, मक्खी आदि की संख्या में वृद्धि होना।

Note:- ग्लोबल वार्मिंग | भूतापन के बारे में सर्वप्रथम 1970 ई. में वोरस ब्रोकर नामक व्यक्ति ने उल्लेख किया था।

→ 11 Dec. 1997 को जापान के क्योटो शहर में UNO के 180 देशों का सम्मेलन आयोजित हुआ था। जिसमें विकसित तथा विकासशील देशों द्वारा 2012 तक 5.2% ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की कटौती पर हस्ताक्षर किये गये थे।

→ इस संधि पर USA ने हस्ताक्षर नहीं किये थे।

→ सर्वाधिक ग्रीन हाउस गैसें उत्सर्जित करने वाले देश →

(1) USA → 26% [विश्व में सबसे ज्यादा]
(2) चीन → 18% [एशिया में सबसे ज्यादा]
(3) भारत → 1.70%

अम्लीय वर्षा

→ वर्तमान में तेजी से बढ़ता हुआ औद्योगिकरण तथा मोटर वाहनों के द्वारा SO_2 गैस तथा N_2O (नाइट्रस ऑक्साइड) का उत्सर्जन किया जा रहा है।

→ यह प्रदूषणकारी गैसें वायुमण्डल में जलवाष्प से क्रिया करके H_2SO_4 [सान्द्र सल्फ्यूरिक अम्ल] तथा HNO_3 [नाइट्रिक अम्ल] बनाती है।

→ जब वर्षा के साथ इन अम्लों की पृथ्वी पर वर्षा होती है तो इस प्रकार की वर्षा को अम्लीय वर्षा कहते हैं।

अम्लीय वर्षा के लिए उत्तरदायी गैसें :-

(1) SO_2 → 70%
(2) N_2O → 20%

→ भारत का सबसे प्रदूषित शहर → कानपूर
राज० " " " " → कोटा

→ सर्वप्रथम अम्लीय वर्षा 1972 में स्वीडन में हुई

→ अम्लीय वर्षा के फलस्वरूप सान्द्र सल्फ्यूरिक अम्ल [H_2SO_4] सर्वाधिक क्षति/नुकसान ताजमहल को पहुँचा रहा है।

→ सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में अम्लीय वर्षा अधिक होती है।
→ भारत के प्रमुख प्रदूषित शहर :- (1) कानपूर
(2) चैन्नई
(3) दिल्ली

www.shriramedu.com

9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

वायुमंडल

PAGE NO.
DATE : / /

→ "पृथ्वी के चारों ओर वायु के आवरण को वायुमंडल कहते हैं।"

→ वायुमंडल में पाये जाने वाले तत्व :- (1) गैसें
(2) जलवाष्प
(3) धूल के कण

(1) गैसें

(1) नाइट्रोजन (N_2) → 78%
(2) ऑक्सीजन (O_2) → 21%
(3) ऑर्गन (Ar) → 0.93%
(4) कार्बनडाइ ऑक्साइड (CO_2) → 0.03% [सबसे भारी]
(5) हिलियम (He) → 0.005% [सबसे हल्की]
(6) हाइड्रोजन (H) → 0.01 %

(1) नाइट्रोजन गैस :- यह वायुमंडल का स्थायी तत्व है। पौधे इस गैस को [लेग्यूमिनेसी कुल] के पौधे इस गैस को नाइट्रेट के रूप में ग्रहण करते हैं।

(2) ऑक्साइड :- जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पौधों के लिए प्राणदायिनी गैस है। ऑक्सीजन की उपस्थिति में वस्तुएँ जलती है। परन्तु यह गैस स्वयं नहीं जलती है।

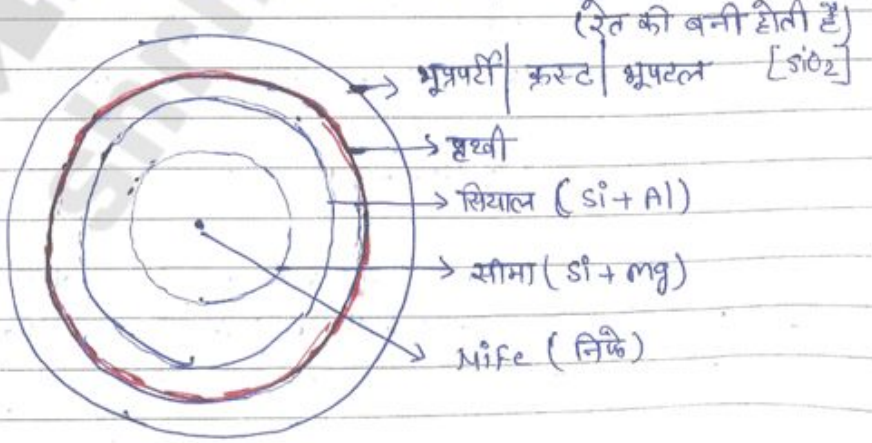

→ भू-प्रपर्टी | क्रस्ट | भू पटल में सर्वाधिक पाया जाने वाला तत्त्व
ऑक्सीजन [40.9%], सिलिकॉन [28%], एल्यूमिनियम [8.1%], आयरन | लोहा [5%]

(3) ऑर्गन :- (Ar) → यह वायुमंडल में पायी जाने वाली एक अक्रिय गैस है। जो विद्युत बल्ब में भरी जाती है।
अन्य अक्रिय गैसें :- [आर्गन, हीलियम, नियॉन, जिनॉन, क्रिप्टॉन, रेडॉन]

[4] कार्बन डाई ऑक्साइड [CO_2] :- वायुमंडल में पायी जाने वाली यह एक भारी गैस है। वर्तमान में यह ग्रीन हाउस गैस के रूप में जानी जाती है। पेड़-पौधे प्रकाश संश्लेषण में यही गैस लेते हैं। जबकि श्वसन में O_2 लेते हैं। यह गैस आग बुझाने में सहायक है।

[5] हीलियम :- यह एक अक्रिय [जो वायुमंडल में दूसरी गैस के साथ क्रिया नहीं करती है।] गैस है। तथा हल्की होने के कारण वायुयानों के टायरों तथा गुब्बारों में भरी जाती है।
→ पर्वतारोही, गोताखोर तथा रोगी व्यक्ति श्वसन के रूप में हीलियम तथा ऑक्सीजन का मिश्रण के रूप में गैस लेते हैं।

[6] हाइड्रोजन :- यह सबसे हल्की गैस होती है। इसे भविष्य का ईंधन भी कहते है। यह गैस परमाणु ईंधन के रूप में सर्वाधिक [71%] सूर्य के अन्दर पायी जाती है।

(2) जलवाष्प

→ वायुमंडल में इसकी मात्रा 0 से 4% पायी जाती है
→ उष्ण आर्द्र क्षेत्रों [जहाँ गर्मी भी ज्यादा हो व बरसात भी ज्यादा हो] में जलवाष्प की मात्रा सर्वाधिक होती है।

→ भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर जलवाष्प की मात्रा में कमी आती है।

→ वायुमंडल में मौजूद जलवाष्प बादलों के द्वारा [संघनन क्रिया द्वारा] जलबूंदों के रूप में अर्थात् वर्षा के रूप में धरातल पर बरसता है।

(3) धूल के कण

→ वायुमंडल में धूल के कण, राख, फ्लाई ऐश [कोयले के जलने के पश्चात् जो राख बनती है। वह वायु में उड़ती है।] ज्वालामुखी, अपशिष्ट पदार्थ, धुआँ आदि के कण वायुमंडल में पाये जाते हैं।

वायुमण्डल की परतें/भाग

→ वायुमंडल में मुख्यतः (5) परतें पायी जाती हैं —

(1) क्षोभमंडल/ट्रोपोस्पीयर/परिवर्तन मंडल/संवहन मंडल
(2) स्वमताप मण्डल/स्ट्रेटोस्पीयर
(3) मध्य मण्डल/मीजोस्पीयर
(4) आयन मण्डल/आयनोस्पीयर
(5) बहिर्मण्डल/एक्सोस्पीयर/आयतन मंडल

(1) क्षोभमण्डल :- यह वायुमण्डल की सबसे निचली परत है।

ऊँचाई :- 0-18 km

ध्रुवों पर ऊँचाई :- 8-9 km

∴ भूमध्य " " :- 16-18 km

औसत " :- 13 km / 11 km
I II

→ वायुमण्डल में उपस्थित 75% गैसों की मात्रा इसी मंडल में पायी जाती है।

→ इसमें सभी प्रकार के मौसम परिवर्तन [आंधी, तूफान, वर्षा आदि] घटनायें घटित होती है।

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- **भूगोल** | **REET L-I & L-II**

→ इसी मंडल में घरेलू वायुयान | उड़ानें उड़ती हैं।

→ इसे परिवर्तन मंडल तथा संवहन मंडल भी कहते हैं।

विशेषता :- (i) सर्वाधिक मौसम परिवर्तन

(2) तापमान ह्रास दर → 165 m की ऊँचाई पर → 1°C की कमी
- 1000 m " " " → 6.5°C " "
- 1000 फीट " " " → 3.6 F " "

क्षोभ सीमा :- यह 1½ मीटर से 2 km मोटी होती है।
यह क्षोभमण्डल एवं समताप मण्डल को अलग करती है।

(2) **समताप मण्डल :-** 20 km → 50 km तक [विस्तार]

ओजोन परत → 20 km → 35 km

→ यह परत समताप मण्डल में पायी जाती है।

→ इसका कार्य :- हानिकारक पराबैंगनी किरणों को रोकना। इसलिए इसे पृथ्वी का सुरक्षा-कवच कहते हैं।

→ समताप मण्डल में मौसम सदैव एक समान रहता है। तथा इसमें वायुयान उड़ते हैं। [प्रमुख रूप से विदेशी उड़ानें]

Note :- उड़ान (2) प्रकार की होती है (1) घरेलू उड़ान :- क्षोभमंडल में
(2) विदेशी उड़ान :- समताप मंडल में
वायुयान उड़ते हैं → समताप मंडल में।

[3] **मध्यमंडल :-** 50 km → 80 km [विस्तार]

→ इसमें तापमान में कमी घटकर −100°C हो जाती है।

[4] **आयन मंडल :-** 80 km → 640 km

→ इस मंडल में वायु के कण विद्युत आवेशित (+, −) होते हैं।

→ इस मंडल से रेडियो चुम्बकीय तरंगे परावर्तित होकर पृथ्वी पर पहुँचती हैं।

सम मंडल — 80 km तक सभी गैसों का अनुपात समान

www.shriramedu.com
9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

उल्का पिण्ड :- उल्का का वह भाग जो जमीन पर गिर जाए वह उल्का पिण्ड कहलाता

→ इस मंडल में उल्काएँ वायु के तीव्र घर्षण के कारण जलकर नष्ट हो जाती हैं। [जैसे:- रात में तारे का टूटना।]

→ इस मंडल में उल्काएँ को विषम मंडल भी कहते हैं।

[5] बहिर्मण्डल :- भू स्थैतिक उपग्रह इसी मंडल पर स्थापित होते हैं।

→ पृथ्वी का पलायन वेग :- 11.2 Km/sec.

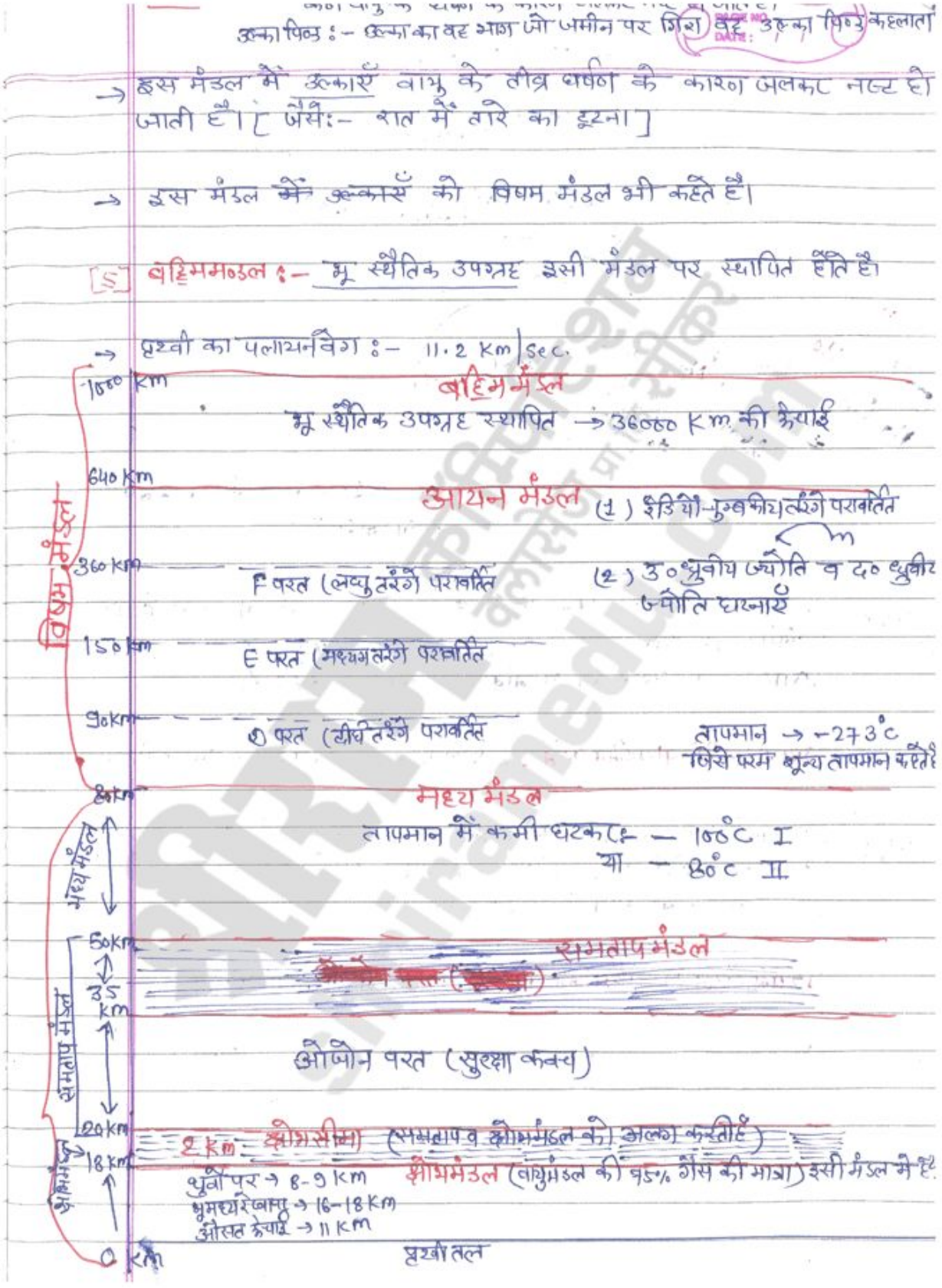

www.shriramedu.com

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

CO_2 भारी गैस है जो धरातल पर पायी जाती है।

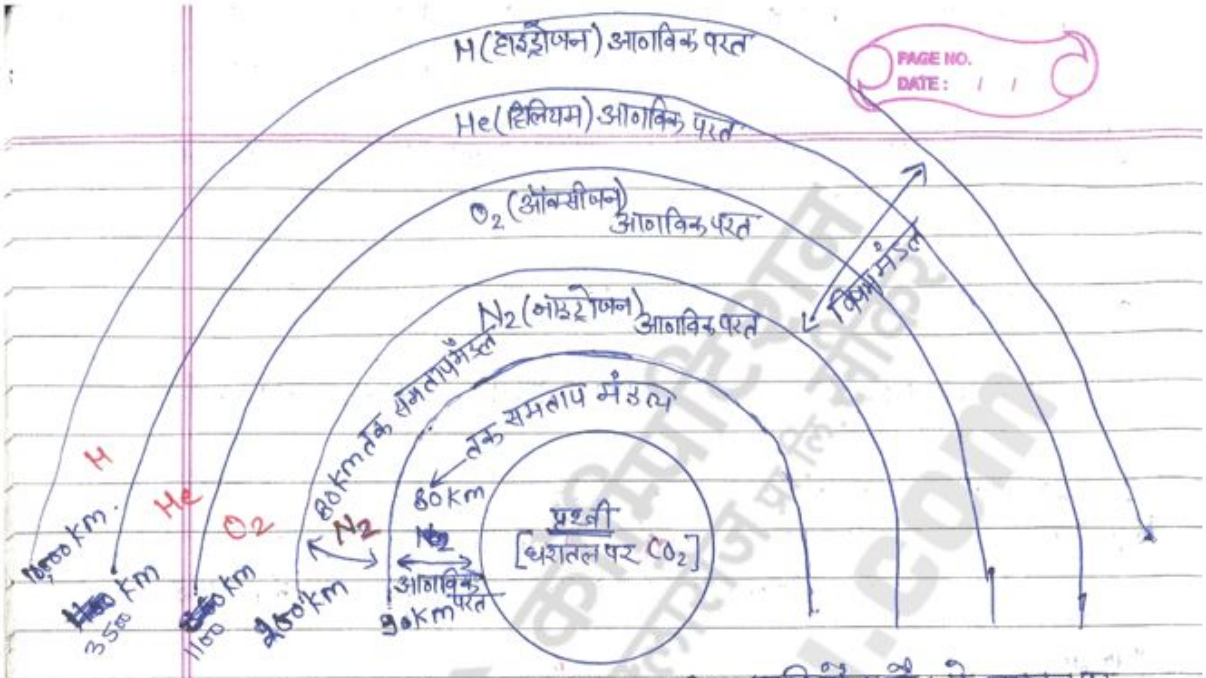

Note :- 80km तक की ऊँचाई तक वायुमंडल में गैसों का मिश्रण समान होता है। [जैसे:- N_2 [78%], O_2 [21%], Ar [0.93%], CO_2 [0.03%]] इसलिए इस परत को सममंडल| होमोस्फीयर कहते है

सम मंडल में सम्मिलित परतें :- क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्य मंडल.

Note :- 80km से अधिक ऊँचाई पर [N_2, O_2, He, H] गैसों की विभिन्न आणविक परतें पायी जाती हैं। इसलिए इस भाग को विषम मंडल| हेट्रोस्फीयर के नाम से जाना जाता है।

विषम मंडल में सम्मिलित परतें :- आयन मंडल, बहिर्मंडल

जहाँ सफलता के सपने संस्कारों के साथ सच होते हैं ... – श्रीराम कोचिंग, सीकर

www.shriramedu.com

9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

वायु प्रदूषण

PAGE NO.
DATE: / /

→ वायु में जब अवांछित तत्व मिल जाते हैं तो उसे वायु प्रदूषण कहते हैं।

(1) CO [कार्बन मॉनो ऑक्साइड] :-

स्रोत :- कोयला एवं लकड़ी के अपूर्ण दहन से

हानिकारक प्रभाव :- श्वसन संबंधी रोग। अर्थात् इसे दमघोटू गैस भी कहते हैं। जैसे :-

"बंद कमरे में अंगीठी जलाने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।"

(2) SO_2 [सल्फर डाइ ऑक्साइड] :-

स्रोत :- मोटर वाहनों, तथा उद्योगों में प्रयुक्त ईंधन के पूर्ण दहन से निकलती है।

हानिकारक प्रभाव :- (1) अम्लीय वर्षा के लिए उत्तरदायी है।
(2) जी मचलना, आँखे लाल होना, उल्टी-आना आदि सिरदर्द होना।

→ इसे क्रेकिंग गैस भी कहते हैं। क्योंकि लगातार पत्थर पर इसे प्रवाहित करने से पत्थर के टुकड़े हो जाते हैं।

(3) CO_2 [कार्बनडाइ-ऑक्साइड] :-

स्रोत :- उद्योगों द्वारा तथा अत्यधिक वनों की कटाई द्वारा।

हानिकारक प्रभाव :- सर्वाधिक भूतापन/ ग्लोबल वार्मिंग के लिए उत्तरदायी है।

(4) CH_4 (मिथेन) :-

स्रोत :- आर्द्र भूमि, गोबर, पशुओं की जुगाली से, धान के खेतों से, कोयले की खान से आदि।

हानिकारक प्रभाव :- ग्लोबल वार्मिंग के लिए उत्तरदायी।

→ यह गैस ज्वलनशील होती है।

→ इस गैस को मार्श गैस भी कहा जाता है।

अनुभवी, चयनित एवं विख्यात विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा अध्यापन - श्रीराम कोचिंग, सीकर

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर
विषय :- भूगोल
REET L-I & L-II

DATE : / /

(5) NO_x (नाइट्रोजन के ऑक्साइड) :-

स्रोत :- जेट विमानों के द्वारा छोड़ा गया धुआँ।

हानिकारक प्रभाव :- अम्लीय वर्षा के लिए उत्तरदायी। क्यों कि यह जलवाष्प के साथ क्रिया करके HNO_3 बनाती है

(6) CFC (क्लोरोफ्लोरो कार्बन) :-

स्रोत :- (1) जेट विमानों के द्वारा
(2) एयरकंडिशनर / गोल्ड स्टोरेज, परफ्यूम आदि के द्वारा।

हानिकारक प्रभाव :- ओजोन परत छिद्र के लिए उत्तरदायी।

वायुप्रदूषण को फैलाने वाले तत्व / प्रभाव

(1) शीशा / लेड :- औद्योगिक गतिविधियों एवं मोटर वाहनों द्वारा।

प्रभाव :- शीशा वायुमंडल में ऑक्सीजन गैस के साथ मिलकर लेड ऑक्साइड बनाता है। जो श्वसन के दौरान शरीर में पहुँचकर तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है।

→ लेड ऑक्साइड के कारण मस्तिष्क संबंधी तथा किडनी संबंधी रोग हो जाते हैं।

(2) कैडमियम (Cd) :-

स्रोत :- वायुमंडल में फैला रहता है।

हानिकारक प्रभाव :- इसके कण श्वसन विष की तरह कार्य करते हैं। तथा इससे हृदय संबंधी बिमारियाँ हो जाती है तथा उच्च रक्तदाब (BP) बढ़ जाता है।

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

जल मण्डल

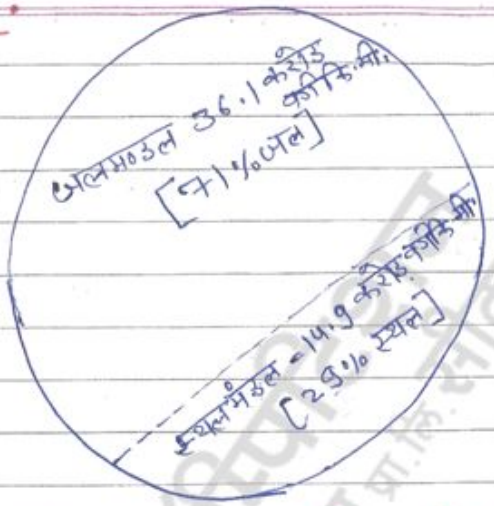

PAGE NO.
DATE : / /

पृथ्वी जल :-

→ पृथ्वी का कुल क्षेत्रफल :- 51.0 करोड़ वर्ग कि.मी.
जलमण्डल = 36.1 करोड़ वर्ग कि.मी. [71% जल]
स्थलमण्डल = 14.9 करोड़ वर्ग कि.मी. [29% स्थल]

→ जल मण्डल में प्रमुखतः (4) महासागर हैं। —
(1) प्रशान्त महासागर
(2) अटलांटिक | अन्ध महासागर
(3) हिन्द महासागर
(4) आर्कटिक महासागर

→ स्थल मंडल में प्रमुखतः (7) महाद्वीप हैं। —

(1) एशिया
(2) अफ्रीका
(3) उ० अमेरिका
(4) द० अमेरिका
(5) अण्टार्कटिका
(6) यूरोप
(7) ऑस्ट्रेलिया

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

क्रस्ट/भूपर्पटी/भूपटल में प्रमुख तत्व	वायुमंडल में गैसें	म हासागरों में लवणता
Imp ① O_2 → 46.9 %	① N_2 → 78%	NaCl [सोडियम क्लोराइड] 77.8%
Imp ② Si → 28 %	② O_2 → 21 %	MgCl [मैग्नेशियम क्लोराइड] 10.9 %
③ Al → 8.1 %	③ Ar → 0.93 %	$MgSO_4$ [मैग्नेशियम सल्फेट] 4.7%
④ Fe → 5 %	④ CO_2 → 0.03 %	$CaSO_4$ [कैल्शियम सल्फेट] 3.6%
	⑤ Ne → 0.01 %	
	⑥ He → 0.005%	

पृथ्वी पर उपस्थित जल का वितरण/विभाजन :-

Imp (1) महासागर :- 97.2 %
(2) वायुमंडल :- 0.001 %
(3) नदी/सरिता :- 0.0001 %
(4) 800 m की गहराई तक भूमिगत जल :- 0.031 % [ट्यूबवेल व कुओं से जो पानी लेते हैं]
(5) ताजे पानी की झील :- 0.09 %
(6) हिमनद :- 2.15 %
→ पृथ्वी का केवल 2½ % पानी पीने योग्य है।

→ महासागरों के जल में औसत लवणता :- 35 प्रति हजार/‰
Imp → सर्वाधिक लवणता वाला सागर :- मृत सागर/डेड सी
लवणता :- 238 ‰ [जोर्डन + इजराइल]

Notes- समुद्र तल से सबसे नीचा सागर :- मृत सागर

→ लवणता के आधार पर सबसे खारी झील :- लेकवॉन झील
लवणता :- 330 ‰ [तुर्की]

जहाँ सफलता के सपने संस्कारों के साथ सच होते हैं ... - श्रीराम कोचिंग, सीकर

→ लवणता के आधार पर दूसरी सबसे खारी झील :- ग्रेट सॉल्ट झील
लवणता :- 220 ‰ [USA]

→ क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व की सबसे बड़ी खारे पानी की झील :-
कैस्पीयन सागर झील [मध्य एशिया] लवणता :- 17-21 ‰

अन्य लवणीय सागर :-

① लाल सागर :- लवणता [36-41 ‰]
② अरब सागर :- लवणता [38-40 ‰]
③ लारस की खाड़ी :- लवणता [35-40 ‰]
④ बंगाल की खाड़ी :- लवणता [28-33 ‰]

जल-प्रदूषण

→ "जब जल में अवांछित तत्व मिल जाते हैं, तो जल पीने योग्य नहीं रहता है, तो इसे जल प्रदूषण कहा जाता है।"

	प्रदूषित जल में पाया जाने वाला तत्व	उत्पन्न रोग
(1)	नाइट्रेट	ब्लू बेबी सिन्ड्रोम रोग [बच्चे के मुँह में नीला झाग आता है]
(2)	पारा	मिनिमाता [यह रोग सर्वप्रथम जापान में पाया गया]
(3)	कैडमियम	इटाई-इटाई [इससे आँखों में सिकुड़न होती है]
(4)	आर्सेनिक (भूमिगत व नदियों के पानी में सर्वाधिक तत्व)	ब्लैक फूट [पैर काले पड़ जाते हैं]
(5)	फ्लोराइड (भूमिगत व नदियों के पानी में सर्वाधिक तत्व)	फ्लोरोसिस [पानी से, हड्डियाँ कमजोर, दाँत खराब]

Note:- भारत में भूमिगत जल में सर्वाधिक मात्रा में पाये जाने वाले तत्व :-
फ्लोराइड व आर्सेनिक

→ भारत की सबसे प्रदूषित नदी :- अमेलीखेड़ा (गुजरात)
→ यमुना नदी अधिक प्रदूषण के कारण :- ग्रीन सूप नदी के नाम से जानी जाती हैं।
→ गंगा नदी के जल में [पश्चिम बंगाल] में एक प्रदूषित तत्त्व संखिया पाया जाता है। जिससे बीमार हो जाते हैं।

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि :- ध्वनि में जब अवांछित तत्त्व मिल जाते हैं तो यह ध्वनि प्रदूषण कहलाता है।

→ ध्वनि की तीव्रता मापने की इकाई :- डेसीबल
→ सामान्य बातचीत की ध्वनि तीव्रता :- 60 डेसीबल
→ UNO के द्वारा आदर्श ध्वनि तीव्रता :- 55 डेसीबल
→ ध्वनि की आवृत्ति मापने की इकाई :- हर्ट्ज (H_z)
→ ध्वनि को आवृत्ति के आधार पर (3) भागों में बांटा जा सकता है
→

(1) श्रव्य ध्वनियाँ :- मनुष्य द्वारा सुनी जा सकने वाली ध्वनियाँ।
आवृत्ति :- 20 H_z → 20,000 H_z

(2) पराश्रव्य ध्वनियाँ :- इस प्रकार की ध्वनियों को सुना नहीं जा सकता है।
आवृत्ति :- 20,000 H_z से अधिक

Note :- कुत्ता, बिल्ली, चमगादड़ आदि इस प्रकार की ध्वनि को सुन सकते हैं।
→ सोनार स्टेशन से पराश्रव्य प्रकार की ध्वनि छोड़ी जाती है।

(3) अश्रव्य ध्वनियाँ :- इस प्रकार की ध्वनि सुनायी नहीं देती है।
आवृत्ति :- 20 H_z से कम

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- **भूगोल**

REET L-I & L-II

शोर प्रदूषण :- उच्च तीव्रता वाली ध्वनि जो कानों को प्रिय नहीं होती है शोर प्रदूषण कहलाती है।

→ जब ध्वनि में अवांछित तत्व मिल जाते हैं। तो ध्वनि प्रदूषित हो जाती है।

Note:- 60 डेसीबल से अधिक तीव्रता की ध्वनि को ध्वनि प्रदूषण माना जाता है।

→ 90 डेसीबल से अधिक तीव्रता की ध्वनि श्रवण तीव्रता में ह्रास लाती है अर्थात् बहरापन शुरू हो जाता है

→ ध्वनि का वेग :- 320 मीटर/सैकेण्ड

→ सर्वाधिक वेग :- ठोस
द्रव्य/तरल
गैस

Note:- निर्वात में ध्वनि गमन/गति नहीं करती है। जबकि प्रकाश का सर्वाधिक वेग निर्वात में होता है। [3×10^8] / 3 लाख कि.मी./Sec. / 1 लाख 84 हजार मील/Sec.
(प्रकाश का वेग)

→ "केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड" द्वारा दिन के समय औद्योगिक क्षेत्रों में ध्वनि तीव्रता 75 डेसीबल मानी है।

[ध्वनि स्रोत]

ध्वनि	स्रोत
150db	जेट/वायुयान का उतरना
130db	असहनीय शोर
110db	फैक्ट्री का बॉयलर
100db	स्वचालित वाहन एवं शेर की दहाड़
90db	जोर से चिल्लाना/कानों में शोर
80db	ट्रक की आवाज
70db	टेलीविजन
60db	सामान्य बातचीत मे
50db	टाईपराइटर
40db	कार्यालय/कमरे की ध्वनि
30db	फुसफुसाहट करना
20db	अतिशान्त स्थान की ध्वनि
10db (Imp)	पत्तियों की रगड़
0db	देहरी प्रवेश द्वार

190db	ज्वालामुखी विस्फोट
180db	रॉकेट इंजन

Note:- ध्वनि के वेग से अधिक गति से चलने वाले विमानों को "जेट-सॉनिक बूम" विमान कहते हैं। इनकी गति मापने की इकाई मैक होती है।

★→ ध्वनि प्रदूषण से शारीरिक हानिकारक प्रभाव :-

(1) उच्च रक्तचाप।
(2) उत्तेजना आना।
(3) हृदय रोग
(4) आँखों की पुतलियों में खिंचाव।
(5) मानसिक तनाव।
(6) पेट में अल्सर।

Note:- जेट विमानों की उच्च तीव्रता की ध्वनि के कारण गर्भवती महिलाओं में गर्भपात हो जाता है।

Note:-
→ वायुमण्डल प्रथम प्रदूषण :- SO_2, CO_2, CO, CFC, Nox
द्वितीय प्रदूषण :- CH_4, PAN [परऑक्सी नाइट्रेट]

वायुप्रदूषण → PAN [परऑक्सीएसाइड नाइट्रेट]
जलप्रदूषण → BOD [बायो ऑक्सीजन डिमांड | जैव ऑक्सीजन डिमांड (माँग)]

विश्व की वनस्पति

(1) भूमध्य रेखीय वन :- (निम्न अक्षांश)

क्षेत्र :- भूमध्य रेखा के दोनों ओर [0° से 10° अक्षांशों के मध्य]

विस्तार :- ब्राजील [सर्वाधिक], मध्य अफ्रिका, श्रीलंका, इंडोनेशिया, मलेशिया अंडमान - निकोबार द्वीप [भारत]।

तापमान :- सालभर उच्च तापमान [औसत तापमान 20°C]

वर्षा :- साल भर वर्षा [संवहनीय वर्षा] → 200cm से अधिक।

प्रमुख वृक्ष :- महोगनी, रबड़ [सर्वाधिक थाइलैंड में], साल, सिनकोना [सर्वाधिक इंडोनेशिया में] (इसकी छाल से कुनैन की दवा बनती है)

नारियल [भारत], रोजवुड, ताड़, आबनूस [इससे साबुदाना बनता है]

विशेषता :- (1) इन वनों में सर्वाधिक जैवभार मिलता है। अर्थात यहाँ पर वनस्पति व जीवों की बहुत सारी प्रजाति रहती है।

(2) इन वनों को रबड़ के बगीचे / विश्व का फेफड़ा कहते हैं

(3) आर्थिक दोहन की दृष्टि से महत्वपूर्ण नही हैं।

Note :- भूमध्य रेखीय वृक्षों के चारों ओर लताओं का जाल लिपटा हुआ होता है इन लताओं को "लियाना" कहते हैं।

→ हाथी घास बायोम सवाना प्रकार की है।

(2) मानसूनी वन :- (मध्य व निम्न अक्षांश के मध्य)

क्षेत्र :- कर्क तथा मकर रेखा के आस-पास → प्रमुख रूप से उत्तरी गोलार्द्ध में [20° N से 35° N के मध्य]

विस्तार :- दक्षिण एशिया [भारत [सर्वाधिक], चीन, बांग्लादेश पाकिस्तान]
दक्षिणी-पूर्वी एशिया [इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार आदि]
[पूर्वी अफ्रिका]
दक्षिणी पूर्वी चीन], उ० पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया

तापमान :- ग्रीष्मकाल में उच्च तापमान [27°C से 32°C]
शीतकाल में → " [10°C से 25°C]

औसत वर्षा :- 150cm - 200cm [80% वर्षा ग्रीष्मकाल में]

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

प्रमुख वृक्ष :- (1) साल [रेलवे के स्लीपर बनते हैं।]
(2) शिशम (3) बांस (4) सागौन [म्यांमार] (5) जामुन,
(6) महुआ [मध्यप्रदेश (भारत] (7) आम [भारत (U.P. में सर्वाधिक)], (8) पीपल (9) बरगद (10) नीम।

→ केरल मे शीशम की लकड़ी काटने वाले लोगों को उलबयिया कहते है
विशेषता :- वर्तमान में इन वृक्षों की अत्यधिक कटाई हो रही है या आर्थिक दोहन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
→ इस प्रकार की वनस्पति में प्रमुख रूप से पर्णपाती वन पाये जाते हैं
→ (ग्रीष्मकाल के प्रारंभ में अपने पत्ते गिरा देते है)
→ इन वृक्षों की ऊंचाई लगभग 20-25 मीटर होती है।
→ इन वनों में पाये जाने वाले जीव-जन्तुओं में मौसमी परिवर्तन पाया जाता है

V.Imp

(3) भूमध्य सागरीय / रूम सागरीय वनस्पति :- (मध्य अक्षांश मे)
क्षेत्र :- दोनों गोलार्द्धों में 30° - 45° अक्षांशों के मध्य
[विशेषत: महाद्वीपों के पश्चिमी तटीय भागों पर]

विस्तार :- यह भूमध्य सागर के आस-पास के सभी क्षेत्रों में, मध्य कैलिफोर्निया [U.S.A का प्रांत], मध्य चिली [दक्षिण अमेरिका] दक्षिणी पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया, द०प० [द० अफ्रिका],

तापमान :- 20°c से 27°c [ग्रीष्मकाल में]
4°c से 10°c [शीतकाल में]

औसत वर्षा :- 35 - 70 cm [शीतकाल मे]
प्रमुख वृक्ष :- ओक, चीड़, चेस्टनट, मैपिल, लॉरेल, वालनट, एल्म।

विशेषता :- (i) पत्तियाँ मोटी, तना कठोर तथा तनों की छाल मोटी होती हैं

(2) इस प्रकार की वनस्पति को विश्व में फलोद्यान के नाम से जाना जाता है।

→ इन वनों में प्रमुख रूप से रसदार फल, अंगूर, जैतून (इटली) फल पाये जाते हैं।

→ इन वनों में कंगारू [ऑस्ट्रेलिया], दरियाई घोड़ा [दक्षिण अफ्रीका], बॉबनॉस बंदर [यूरोप]

→ इन वनों में पायी जाने वाली झाड़ी और लताओं को कहते हैं।
- यूरोप में → मैक्यूस — Imp.
- कैलिफोर्निया में → चैपरेल — Imp.
- द० अफ्रिका → फाइनबोस
- चिली [द० अमे०] → मेटोरेल
- ऑस्ट्रेलिया में → मैली

[4] टैगा / कोणधारी वन / शंकुधारी वन (उच्च अक्षांशों में) :- ये वन उच्च अक्षांशों अर्थात् ध्रुवों के आस-पास पाये जाते हैं।

क्षेत्र :- उ० गोलार्द्ध में 50° - 70° अक्षांशों के मध्य

विस्तार :- कनाडा [सर्वाधिक], ग्रीनलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, फीनलैंड [झीलों का देश], साइबेरिया

तापमान :- [ग्रीष्म काल में] 10°C
शीतकाल में] 0°C → 40°C तक

औसत वार्षिक वर्षा :- 38 cm.

प्रमुख वृक्ष :- कोणधारी वन, स्प्रूस, पाइन, फर, लॉर्च

विशेषता :-
→ इन वृक्षों की लकड़ी मुलायम होती है।
→ आर्थिक दोहन (कटाई) की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण वन है।

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

कुल अक्षांश → 180
90+90

→ कनाडा में कोणधारी वनों को काटने वाले लोगों को लम्बरजैक कहते हैं।

(5) टुण्ड्रा वनस्पति :- उत्तरी गोलार्द्ध में →
क्षेत्र :- 70° - उच्च अक्षांशों तक (अर्थात् ध्रुवीय क्षेत्रों में)

विस्तार :- उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्रों में
→ यहाँ तापमान माइनस (तथा वर्षा हिमपात के रूप में होती है)
अतिन्यूनतापमान

प्रमुख वृक्ष :- छोटे-2 फूलदार झाड़ियाँ एवं घास के रूप में।

→ यहाँ पायी जाने वाली वनस्पति को अल्पाइन वनस्पति कहा जाता है।

Note:- हिमालय के 3600 मीटर की ऊँचाई पर इस प्रकार की वनस्पति पायी जाती है।

→ यहाँ पर रेण्डियर जानवर (इसमें दूध में सर्वाधिक वसा पायी जाती है) तथा एस्किमो जनजाति पायी जाती है।

प्रमुख घास के मैदान

(1) उष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान :- इस प्रकार के घास के मैदानों को सवाना वनस्पति के नाम से जाना जाता है।

घास के मैदान		क्षेत्र
सवाना	–	मध्य अफ्रीका (कांगो गणराज्य)
लानोज	–	वेनेजुएला / कोलम्बिया देश (द. अमेरिका)
कैंपास	–	ब्राजील

अनुभवी, चयनित एवं विख्यात विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा अध्यापन - श्रीराम कोचिंग, सीकर

9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर
विषय :- भूगोल
REET L-I & L-II

(2) शीतोष्ण घास के मैदान :- इस प्रकार के घास के मैदान मध्य अक्षांशों में [45° से 60° के मध्य] पाये जाते है। [शीतोष्ण घास के मैदानों को अन्न का भण्डार भी कहते है।] विशेषत : प्रेरीज

	घास के मैदान	क्षेत्र
1.	प्रेयरी	U.S.A. + कनाडा (उ० अमेरिका)
2.	स्टेपी	यूरोप
3.	पुश्टैज	हंगरी
4.	पम्पास	अर्जेन्टीना
5.	वेल्ड	द० अफ्रिका
6.	डाउन्स	ऑस्ट्रेलिया
7.	केन्टबरी	न्यूजीलैण्ड
8.	मन्च्यूरियन	चीन

→ मध्य हिमालय में स्थित घास के मैदान को जम्मू कश्मीर में मर्ग तथा मध्य उत्तराखण्ड में बुग्याल/पयार कहते है।

Q.1 आर्थिक दोहन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वन है —
Ans कोणधारी व टैगा वन

Q.2 सर्वाधिक जैव भार/जैव विविधता की उपमा किस प्रकार के वनों को दी जाती है -
Ans भूमध्य रेखीय/विषुवत रेखीय

Q.3 सागौन, महुआ, शीशम किस प्रकार के वनों में मिलते है
Ans मानसूनी वन

Q.4 जल उद्यान के नाम से किस प्रकार के वनो को जाना जाता है
Ans भूमध्यसागरीय वन

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

Q.5 एण्डीज पर्वत के पूर्वी ढाल पर पाये जाने वाली वनस्पति को कहा जाता है.

Ans सेल्वा

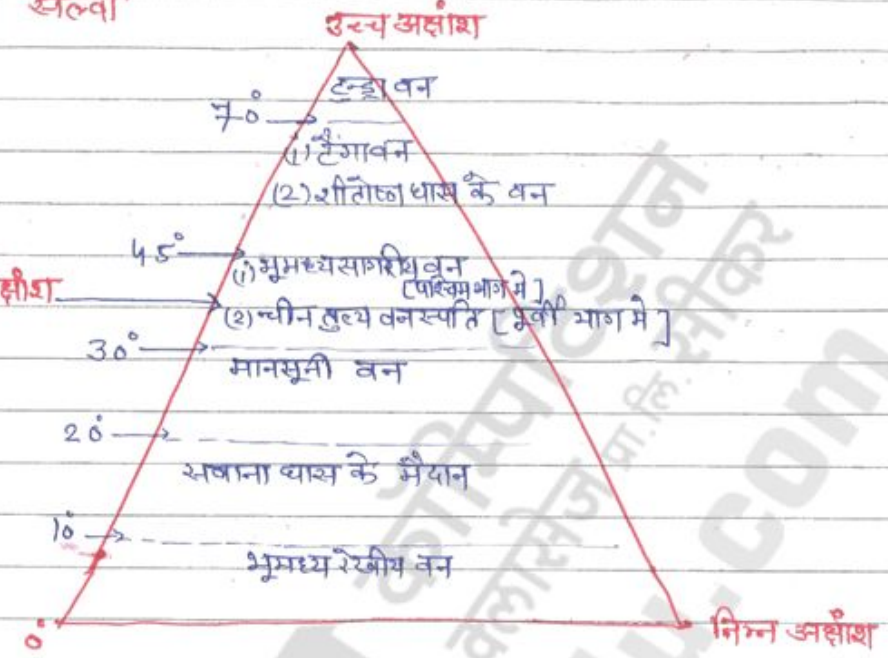

भारत की वनस्पति

→ भारत की वनस्पति को निम्न भागों में बांटा गया है.

(1) उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन :-

(A) क्षेत्र :- पश्चिम घाट का पर्वत का पश्चिम ढाल,
पूर्वी हिमालय :- [असम, मेघालय, मिजोरम,]
अण्डमान-निकोबार

(B) औसत वर्षा :- 200 cm से अधिक

(C) तापमान :- उच्च तापमान (22 से 27°C)

(D) प्रमुख वृक्ष :- ताड़, महोगनी, आबनूस, बेंत, बांस (मेघालय)
नारियल (केरल), एबोनी

(c) विशेषताएँ :-
(1) घने वन (जंगल)
(2) वृक्षों की बहुरूपता
(3) कठोर लकड़ी का औद्योगिक महत्त्व
(4) हजारों वन्य प्राणी
(5) दलदली भूमि

Note:- आर्थिक दोहन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। (कटाई)

(2) उष्ण कटिबन्धीय पतझड़ | मानसूनी वन :- [देश में सर्वाधिक]

क्षेत्र :- मध्य भारत [मध्य प्रदेश [सर्वाधिक], महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, सीमान्ध्र, उड़ीसा, प. बंगाल, झारखण्ड, U.P.]

वर्षा :- 100-200 cm

तापमान :- 22°c - 28°c [उच्च तापमान]

Notes:- इस प्रकार के वन भारत में सर्वाधिक पाये जाते हैं। तथा ये वन कर्क रेखा के आस-पास मिलते हैं। आर्थिक दोहन की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वन है।

प्रमुख वृक्ष :- शीशम, चन्दन (कर्नाटक) → राज (खमनौर) बनास नदी, महुआ (M.P), खैर, तेंदू (M.P.) II → उड़ीसा (सर्वाधिक) RPSC I, पीपल, आम (U.P.)

विशेषताएँ :- → कम लंबे एवं खुले वन।
→ व्यावसायिक दृष्टि से अतिमहत्त्वपूर्ण वन।
→ भारत में सर्वाधिक
→ आर्थिक दोहन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वन

(3) उष्णकटिबन्धीय वन / शुष्क वन :-

क्षेत्र :- उ० प० मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, द० प० राज० उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, बिहार आदि।

वर्षा :- 50-100 cm

तापमान :- —

प्रमुख वृक्ष :- साल, सागौन, चन्दन, शीशम, आँवला,

www.shriramedu.com

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल | REET L-I & L-II

सागू, हरण

विशेषता :-

→ इन वनों की लकड़ी मुलायम, मजबूत, टिकाऊ होती है।

→ इन वनों से चारागाह तथा कच्चे माल (लकड़ी, गोंद) की आपूर्ति होती है।

(4) उष्णकटिबन्धीय घास के मैदान :-

क्षेत्र :- कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, M.P., छत्तीसगढ़

वर्षा :- 50-100 cm

Note :- आर्द्र | नम भूमि तथा नदियों के किनारे इस प्रकार के घास के मैदान पाये जाते हैं।

(5) उष्णकटिबन्धीय कांटेदार वन | मरुस्थलीय वन :-

क्षेत्र :- राजस्थान (सर्वाधिक), गुजरात, द.प. उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा।

वर्षा :- 50 cm से कम

प्रमुख वृक्ष :- बबूल, खजूर, खेजड़ा, नागफनी, कैर (पत्तियाँ नहीं होती है), बैर, आँवला, रोहिड़ा, करील।

विशेषताएँ :-

(i) इनकी जड़े लम्बी, पत्तियाँ कांटों के रूप में तथा तने गुदेदार होते हैं।

(2) इनकी लकड़ियाँ ईंधन (जलाने) के रूप में प्रयोग में ली जाती है।

V.V. Imp. (6) ज्वारीय | डेल्टाई वन :- (दलदली क्षेत्रों में पाये जाते हैं)

क्षेत्र :- नदी के तटीय क्षेत्रों में अर्थात् सुन्दरवन का डेल्टा (सर्वाधिक), कृष्णा, गोदावरी नदी का डेल्टा, खम्भात की खाड़ी आदि।

विलो की लकड़ी से क्रिकेट का बल्ला बनता है

प्रमुख वृक्ष :- मैंग्रोव, ताड़, कैसुरिना, गोरेन, बांस, नारियल आदि।

विशेषताएँ :-

→ इन वनों की लकड़ी कठोर तथा छाल क्षारीय होती है। जो नाव बनाने के काम आती है।

→ यह वन दलदली एवं क्षारीय मिट्टी में पाये जाते हैं।

→ इन वनों की छाल का प्रयोग चमड़ा पकाने में किया जाता है।

→ यहाँ पर सुन्दरी का पेड़ सर्वाधिक पाया जाता है।

→ इन वनों में खूंटे के समान श्वसन मूल बाहर निकले होते हैं। जिन्हें न्यूमेटोफोर कहा जाता है।

(7) पर्वतीय वन :- इस प्रकार के वन भारत में हिमालय पर्वतीय क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

प्रमुख वृक्ष :-

(i) देवदार :- → यह वृक्ष 30m तक ऊँचा तथा 6-10 m मोटा होता है। (→ 3300 m की ऊँचाई पर)

→ इसकी लकड़ी कठोर, भूरि, टिकाऊ, सुगन्धित होती है।

→ इससे सुगन्धित तेल प्राप्त होता है।

क्षेत्र :- H.P. उत्तराखण्ड (सर्वाधिक)

(2) चीड़ :- → यह नुकीली पत्तियों वाला सदाबहार वन होता है। जो - 1200-2100 m की ऊँचाई पर पाया जाता है।

→ इसकी लकड़ी का प्रयोग इमारती लकड़ी के रूप में करते हैं

(3) नीलापाइन :- → इस प्रकार के वन 1800-3600 m की ऊँचाई पर पाये जाते हैं।

→ इन वृक्षों की ऊँचाई 30-45 m होती है।

→ इन वनों से तारपीन का तेल प्राप्त होता है।

www.shriramedu.com

9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

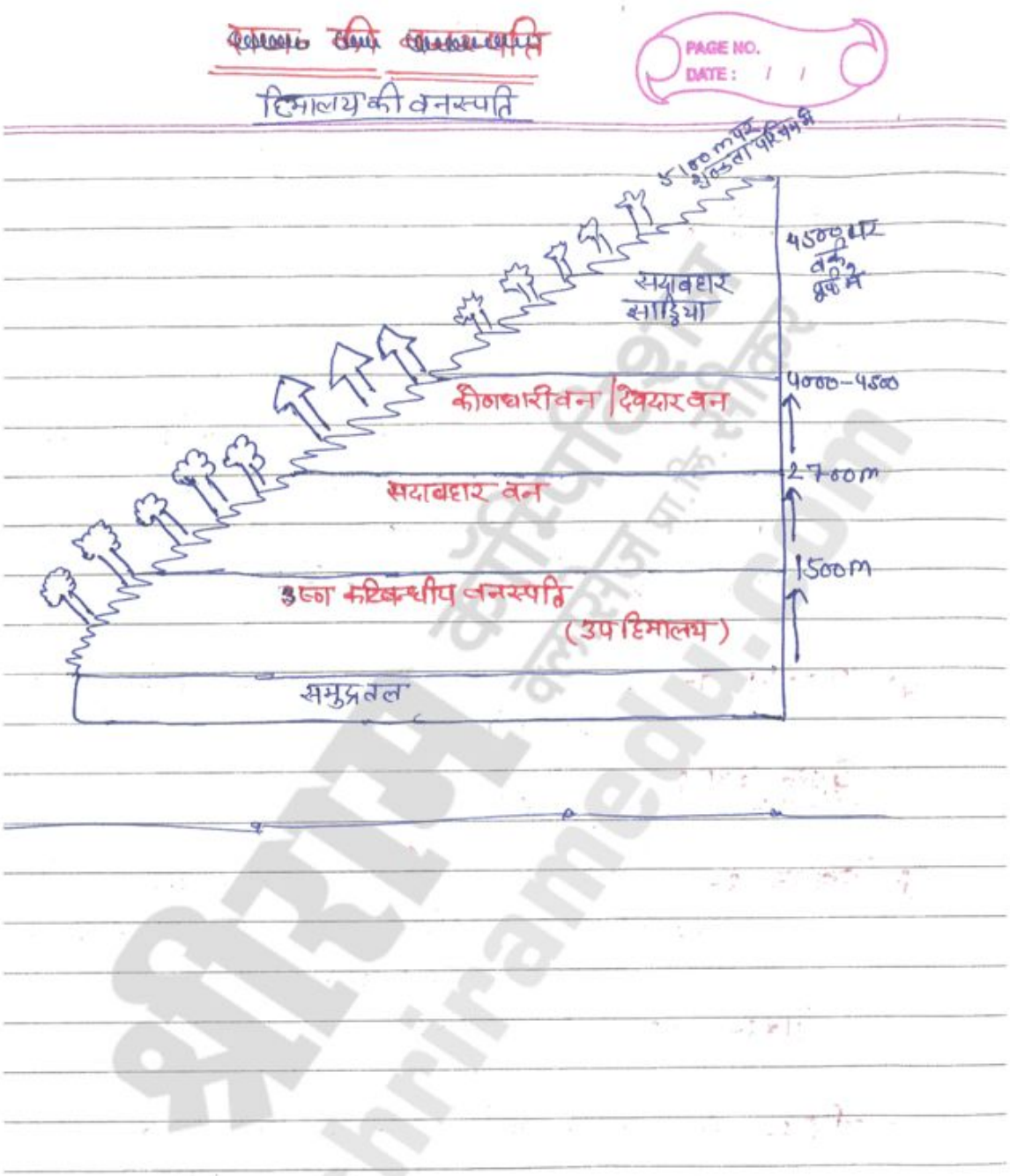

वर्ष दर वर्ष सफलता की बुलंदियों को छूता - श्रीराम कोचिंग, सीकर

9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

→ राज० की वनस्पति को निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है।→

(1) उपोष्ण सदाबहार वन → 0.39 % (राज० के कुल क्षे० का) [सबसे कम वन राज० में]
(2) शुष्क सागवान वन → 6.89 % (" " ")
(3) उष्ण कटिबन्धीय पतझड़ | मिश्रित वन → 28.55% (" " ")
(4) अर्द्ध शुष्क कँटीला वन | झाड़ियाँ → 58.18 % (" " ") [सबसे ज्यादा राज० में]
(5) शुष्क वन | मरुस्थलीय वन → 6.14 % (" " ")

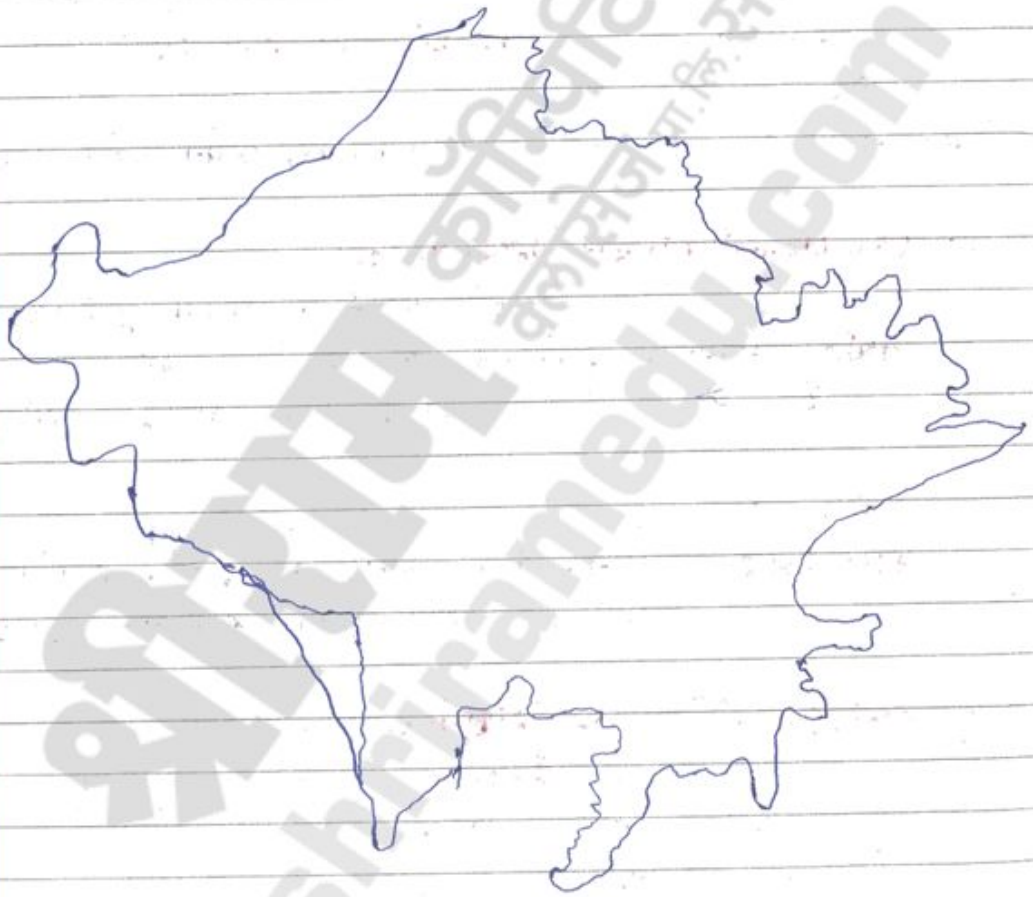

[1] उपोष्ण सदाबहार वन :-
क्षेत्र :- आबू पर्वत (सिरोही) के चारों ओर
वर्षा :- 150cm
प्रमुख वृक्ष :- बाँस, जामुन, बिल, शूलर

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर shriramedu.com

(2) शुष्क सागवान वन :-

क्षेत्र :- बाँसवाड़ा [सर्वाधिक], डूंगरपुर, द. उदयपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, झालावाड़।

वर्षा :- 75 - 110 cm

प्रमुख वृक्ष :- देशी सागवान, साल, महुआ (देशी शराब), आम, ढाक/पलास, (टिमरू) तेंदू, बाँस, सालर

Note :-
(i) सीतामाता अभ्यारण में सर्वाधिक सागवान के पेड़ पाये जाते हैं
(ii) महुआ वृक्ष के कच्चे फलों से आदिवासी भील देसी शराब बनाते हैं। तथा इसे "आदिवासियों का कल्प वृक्ष" कहा जाता है।
(iii) महुआ वृक्ष के कोटरों में उड़न गिलहरी अपने बच्चे देती है

(3) उष्णकटिबन्धीय पतझड़ | मिश्रित वन :-

क्षेत्र :- अरावली के दक्षिणी - पूर्वी भाग में

वर्षा :- [राजसमंद, चित्तौड़गढ़, सिरोही, टोंक, भीलवाड़ा, कोटा, बूंदी, करौली, सवाई माधोपुर, भरतपुर आदि]

वर्षा :- 50 - 80 cm

प्रमुख वृक्ष :- शीशम, नीम, आम, तेंदू, धौंक [सबसे मजबूत लकड़ी], बरगद, चन्दन, खैर [कत्था बनता है], अर्जुन

(4) अर्द्ध शुष्क काँटेदार वन | झाड़ियाँ :-

क्षेत्र :- अरावली का उ० प० भाग

[सिरोही, जालौर, बाड़मेर, पाली, जोधपुर, नागौर, शेखावाटी, गंगानगर, हनुमानगढ़]

वर्षा :- 30 - 60 cm

प्रमुख वृक्ष :- बबूल, किकर, खेजड़ी, नागफनी, थूहर, कूमट, बेर, कैर, रोहिड़ा

(5) शुष्क वन / मरुस्थलीय वन / मरुद्भिद वन :-

क्षेत्र :- थार का मरुस्थलीय क्षेत्र [जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर आदि]

वर्षा :- 30 cm से कम / 0-30 cm

प्रमुख वृक्ष :- कँटीली झाड़ियाँ तथा सेवण, धामण, मुरात, अंजन, खिनकारिया आदि घासें।

Note :- मरुस्थलीय क्षेत्रों में पाये जाने वाली वनस्पति को मरुद्भिद वनस्पति / जीरोफाइट कहते हैं।

Note :- डॉ. बी.सी. मिश्रा :- ने राज. की वनस्पति को (7) भागों में बाँटा है,

(1) शुष्क देसी सागवान [बांसवाड़ा, डूंगरपुर]
(2) आर्द्र चौड़ी पत्ती वाले वन [दक्षिणी-पूर्वी राज.]
(3) मिश्रित पतझड़ वन [सिरोही से बूंदी तक]
(4) सालर आदि के वन [द. राज.]
(5) नदीघाटी के वन [नदियों के किनारे]
(6) उष्ककटिबन्धीय काँटेदार वन [उ.प. राज.]
(7) उपोष्ण सदाबहार वन [आबू पर्वत]

Date :- 27.3.15

राज. में वनों के आंकड़े :-

→ राज. का कुल क्षेत्र :- 3,42,239.74 वर्ग कि.मी.
→ राज. के कुल क्षेत्र. का वन क्षेत्र. → 32,737 वर्ग कि.मी.
→ कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का वन प्रतिशत :- 9.57% [2013 के अनुसार]
9.54% [2011 के अनुसार]

→ भारतीय वन सर्वेक्षण अनुसंधान केन्द्र :- देहरादून
→ भारतीय वन प्रबंध संस्थान :- भोपाल

→ राज. के वनों को (3) भागों में विभाजित किया गया है —

① आरक्षित वन :- न लकड़ी काट सकते हैं न शिकार कर सकते हैं
② रक्षित वन :- पशुचारण कर सकते हैं। लकड़ी नहीं काट सकते हैं
③ अवर्गीकृत वन :- कुछ भी कर सकते हैं।

① आरक्षित वन :- 12,475 वर्ग कि॰ मी. → 38.11%
② रक्षित वन :- 18,217 वर्ग कि॰ मी. → 55.65%
③ अवर्गीकृत वन :- 2045 वर्ग कि॰ मी. → 6.24%

Note:- रक्षित वन → राज॰ में सर्वाधिक

→ राज॰ में सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले जिले :-
उदयपुर I
राजसमंद II
चित्तौड़ III
करौली IV

→ राज॰ में न्यूनतम वन क्षेत्रफल वाले जिले :-
चूरू I
हनुमानगढ़ II
नागौर III
जोधपुर IV

→ राज॰ में सर्वाधिक वन प्रतिशत वाला जिले :-
करौली [32.77%]

→ न्यूनतम वन प्रतिशत वाले जिले :-
चूरू [0.43%]

Note:- भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (32,87,263) का राज॰ में वन प्रतिशत :-
0.99%

भारत के कुल वन क्षेत्रफल का राज॰ में वन क्षेत्रफल :-
4.25%

→ राज. में प्रतिव्यक्ति वन क्षेत्र :- 0.05 हैक्टेयर

		राज.	भारत
प्रमुख वृक्ष :-	नारियल →	—	केरल
	रबड़ →	—	केरल
	शीशम →	—	केरल
	चंदन →	राजसंमद (खमनौर)	मैलागिरि (कर्नाटक)
	केला →	बाँसवाड़ा	महाराष्ट्र
	आम →	चित्तौड़	U.P.
	सागौन →	बाँसवाड़ा	M.P.
	महुआ →	बाँसवाड़ा	M.P.
	तेंदू / टिमरू →	उदयपुर	उड़ीसा Tripura/Nagaland
	बाँस →	बाँसवाड़ा	मेघालय
	खेजड़ी →	नागौर	राज.
	ढाक / पलाश →	राजसंमद	राज.
	सुन्दरी →	—	सुन्दरवन का डेल्टा (प. बंगाल)
	साल →		(M.P.)

→ रेल के डिब्बे सागौन की लकडी से बनते हैं।

→

(1) ढाक / पलाश :- राजसंमद, चित्तौड़गढ़, उदयपुर।
वैज्ञानिक / वानस्पतिक नाम :- ब्यूटिया मोनोस्पर्मा
विशेषता :- अपने सुर्ख लाल-पिले रंग के फूलों के कारण इसे जंगल की आग / जंगल की ज्वाला कहते हैं।

(2) खेजड़ी :- नागौर, जोधपुर, शेखावाटी
वैज्ञानिक नाम :- प्रोसोपिस सिनेरेरिया
विशेषता :- (1) राज. का कल्पवृक्ष
(2) राज. का गौरव

→ इसे राज्य वृक्ष घोषित किया गया → 1983 में
→ स्थानीय नाम :- जांटी
→ दशहरे पर शमीवृक्ष (खेजड़ी) की पुजा होती है।

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

→ गोगाजी का थान खेजड़ी वृक्ष के नीचे स्थापित किया जाता है।

(3) रोहिड़ा :- उ॰प॰ मरूस्थलीय राज्य॰
वैज्ञानिक | ~~बोटेनिकल~~ नाम :- टिकोमेला अण्डूलेटा
उपनाम :- रेगिस्तान का सागवान | मरूशोभा
→ 1983 में राज्य पुष्प घोषित।

जहाँ सफलता के सपने संस्कारों के साथ सच होते हैं ... – श्रीराम कोचिंग, सीकर

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

भारत के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य

→ भारत में कुल राष्ट्रीय उद्यान :- 102

→ प्रथम राष्ट्रीय उद्यान :- हैली | कार्बेट नेशनल पार्क [उत्तराखण्ड [स्थापना 1935
कुमाऊँ हिमालय में
1950 में जिम कार्बेट के नाम पर इसका नाम बदलकर कार्बेट कर दिया गया।

→ क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान :- हेमिस [लेह लद्दाक (J&K)]

→ भारत में सर्वाधिक संख्या में राष्ट्रीय उद्यान :- M.P. → (9) है।
अण्डमान निकोबार द्वीप → (9)

→ भारत में प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान

Date :- 30.3.15

	राष्ट्रीय उद्यान	स्थिति	विशेषता
(1)	पूर्वी भारत के →		
(1)	काजीरंगा	असम	एक सींग का गेंडा (गैं... पाया जाता है।
जैवमंडल 2.	मानस	असम	हाथियों के लिए प्रसिद्ध
3.	नामदफा	अरुणाचल प्रदेश	-
Imp. 4.	केबुल लामजाओ	लोकटक | लोकताक झील (मणिपुर)	एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान
2008 5.	बुक्सा	पश्चिम बंगाल	बाघों के लिए प्रसिद्ध
जैव मंडल 6.	सुन्दरवन का डेल्टा	पश्चिम बंगाल	रॉयल बंगाल टाइगर के लिए प्रसिद्ध।
जैवमंडल 7.	डिब्रू सिखोवा	असम	
8.	दुधवा	U.P.	-
9.	कैम्पबेल	अण्डमान-नि० द्वीपसमूह	-
10.	बांधवगढ़	M.P.	सफेद बाघों के लिए प्रसिद्ध
11.	बांदीपुर	कर्नाटक	हाथियों के लिए प्रसिद्ध।

www.shriramedu.com
9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

12.	पेरियार	केरल, तमिलनाडु	हाथियों के लिए प्रसिद्ध
13.	गिर	गुजरात	एशियाई शेरों के लिए "
14.	इंदिरागाँधी	तमिलनाडु	पक्षियों के लिए प्रसिद्ध
15	इन्द्रावती	छत्तीसगढ़	" " "
16.	कान्हा राष्ट्रीय उद्यान	M.P.	बाघों के लिए प्रसिद्ध
17.	माधव राष्ट्रीय उद्यान	M.P.	–
18.	महात्मा गाँधी मैरीन	अण्डमान-नि.	–
19.	मिडल-बटन आइलैण्ड	" "	–
20.	वन-विहार राष्ट्रीय उद्यान	M.P.	–
21.	वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान	बिहार	–
22. (Imp. V.V.)	सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान	हरियाणा	पक्षियों के लिए प्रसिद्ध
23.	फूलों की घाटी	उत्तराखण्ड	जैव-विविधता के लिए प्रसिद्ध
24.	सिमलीपाल रा. उद्यान	उड़ीसा	रिड्ले कछुएँ के लिए
25.	संजयगांधी राष्ट्रीय उद्यान	महाराष्ट्र	–
26.	संजय राष्ट्रीय उद्यान	M.P., छत्तीसगढ़	–
27.	डॉ. सलीमअली रा. उद्यान	जम्मू-कश्मीर	–

इनका संबंध राज्य. के केवलादेव रा. उद्यान से है।

28.	सैडलपीक राष्ट्रीय उद्यान	अण्डमान-निकोबार	–

→ यह अण्डमान-नि. की सबसे ऊँची चोटी है।

29.	रानी झांसी मैरीन रा. उ.	अण्डमान-नि.	–
30.	राजाजी राष्ट्रीय उद्यान	उत्तराखण्ड	–
31.	पिनवैली राष्ट्रीयउद्यान	H.P.	–
32.	ब्लू माउंटेन रा. उद्यान	मिजोरम	–
33.	पन्ना राष्ट्रीय उद्यान	M.P.	–
34.	नोकरेक राष्ट्रीय उद्यान	मेघालय	–
35.	नन्दा देवी " "	उत्तराखण्ड	–
36.	हमिस राष्ट्रीय उद्यान	J&K	कस्तूरीमृग [हंगुल] के लिए प्रसिद्ध।

37. Note:- फॉसिल्स पार्क राष्ट्रीय उद्यान → भोपाल
फॉसिल्स अभ्यारण्य → राज.

38 ग्रेट हिमालय रा० उद्यान → H.P.

भारत की प्रमुख परियोजनाएँ

(1) बाघ परियोजना :- इसे "टाइगर परियोजना" भी कहते हैं।

प्रारंभ :- 1 अप्रैल 1973 [कान्हा किसली अभ्यारण्य से शुरू m.p. की]
कुल बाघ परियोजनाएँ :- (42)
राज. में :- (3) → (1) रणथंभौर [पहली] (स.माधोपुर)
(2) सरिस्का [अलवर]
(3) मुकुन्दरा हिल्स [नई]

भारत में कुल बाघ → 2305
सर्वाधिक → कर्नाटक [445]
राज. में कुल बाघ → 46

Note:- वर्तमान में कर्नाटक में सर्वाधिक बाघ है। परन्तु m.p. को टाइगर स्टेट / बाघों का शहर कहते हैं।

(2) हाथी परियोजनाएँ :-

प्रारंभ :- 7 दिसम्बर 1992 [झारखंड की सिंहभूमि से प्रारंभ]
कुल हाथी परियोजनाएँ :- (29)
राज. में :- एक भी नहीं है।

(3) हंगुल परियोजना :- यह एक रेडियर प्रजाति का सरल स्वभाव का हिरन होता है। जो भारत में सर्वाधिक (क्योंकि सर्वाधिक मात्रा पाये जाते हैं) [दाचीगांव रा.उ. J&K] में पाया जाता है।
प्रारंभ :- ↓ 1970

→ हंगुल को रेड डेटा पुस्तक में शामिल कर लिया गया है।

Note:- → रेड डाटा पुस्तक :- इस पुस्तक में संकटापन्न प्रजातियों का संकलन किया जाता है। जिन्हें गुलाबी पन्नों पर दर्शाया जाता है।

(4) गैंडा परियोजना :- एक सिंग वाले गैंडे | राइनो केवल भारत में पाये जाते हैं।

भारत में राईनों प्रमुख रूप से मानस अभ्यारण, काजीरंगा ", जाल्दापारा (प.बं.) में पाया जाता है।

प्रारंभ :- 1987

(5) घड़ियाल परियोजना :-

प्रारंभ :- 1975

→ भारत में सर्वाधिक घड़ियाल :- भीतरकनिका अभ्यारण (उड़ीसा)

→ राज्य " " " :- जवाहर सागर अभ्यारण (कोटा, बूंदी)

→ भारत के जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्र :- कुल (18)

	जैवमण्डल क्षेत्र	स्थिति	घोषित वर्ष
1.	नीलगिरी (पहला)	तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक	1986 (प्रथम भारत का)
2.	नोकरेक	मेघालय	1988
3.	नंदादेवी / फूलों की घाटी	उत्तराखण्ड	1988
4.	ग्रेट-निकोबार	अण्डमान-निकोबार द्वीप	1989
5.	मन्नार की खाड़ी	तमिलनाडु	1989
6.	मानस	असोम	1989

7.	सुन्दरवन का डेल्टा	प. बंगाल	1989
8.	सिमली पाल	उड़ीसा	1994
9.	डिब्रू सिखोवा	असोम	1997
10.	देहांग/दिवांग	अरुणाचल प्रदेश	1998
11.	पंचमढ़ी	M.P.	1999
12.	कंचन जंगा	सिक्किम	2000
13.	अगस्त मलाई	केरल	2005
14.	अचानक मार अमरकंटक	M.P, छत्तीसगढ़	2005
15.	कच्छ का रन	गुजरात	2008
16.	शीत मकस्थल/कॉल्ड स्टोरेज	हिमाचल प्रदेश	2009
17.	शेषाचलम	सीमांध्र	2010
18.	पन्ना (नवीनतम)	M.P.	2011-12

यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल भेंवमण्डल आरक्षित क्षेत्र :-

AMNgPS2

(1) नीलगिरी
(2) सुन्दरवन का डेल्टा
(3) मन्नार की खाड़ी
(4) नंदादेवी/फूलों की घाटी
(5) पंचमढ़ी
(6) सिमली पाल
(7) नोकरेक
(8) अचानक मार अमरकंटक

यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल राष्ट्रीय उद्यान :- भारत में कुल (102) राष्ट्रीय उद्यान हैं, जिनमें से (5) राष्ट्रीय उद्यान को UNESCO में शामिल किया गया है।

(1) काजीरंगा → असोम (जोहाट जिला)
(2) केवलदेव राष्ट्रीय उद्यान → भरतपुर (राज.) [1985 में शामिल]
इसे पक्षियों का स्वर्ग कहा जाता है।

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

(3) मानस राष्ट्रीय उद्यान → असोम
→ ये हाथियों के लिए प्रसिद्ध है।
(4) सुन्दरवन राष्ट्रीय उद्यान → प. बंगाल [रॉयल बंगाल टाईगर]
(5) नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान → उत्तराखण्ड

→ **रामसर संधि (ईरान)**

→ यह विश्व में आर्द्र भूमि के संरक्षण हेतु की गई संधि है।
→ भारत में 1 फरवरी 1982 को इस संधि में शामिल होगया था।
→ भारत में कुल (6) आर्द्र भूमियों को शामिल किया गया है–

(1) चिल्का झील (उड़ीसा)
(2) वूलर झील (J&K)
(3) केवलादेव (भरतपुर (राज.))
(4) सांभर झील (जयपुर (राज.))
(5) हरि के बैराज (पंजाब)
(6) लोकटक | लोक्ताक झील (मणिपुर)

राज. के अभ्यार.

→ राज. में कुल राष्ट्रीय उद्यान :- (3)
(1) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान (सवाई माधोपुर) :- 1980 (पहला)
केवलादेव (2) केवला देव " " (भरतपुर) :- 1981 (दूसरा)
(3) मुकुन्दरा हिल्स " " (कोटा) :- 09 जनवरी (2012)

→ राज. में कुल अभ्यारण :- (26)

टाईगर प्रोजेक्ट योजनाएँ :- (1) रणथंभौर (सवाई माधोपुर)
1 अप्रैल 1973
(2) सरिस्का (अलवर)
(1978)

अनुभवी, चयनित एवं विख्यात विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा अध्यापन – श्रीराम कोचिंग, सीकर

(3) मुकुन्दरा हिल्स (कोटा) → 11 अप्रैल 2013

→ आखेट निषिद्ध क्षेत्र :- कुल (33)

→ राज॰ में जैविक उद्यान कुल → (4)
(i) नाहरगढ़ → जयपुर (देश का प्रथम)
(2) सज्जनगढ़ → उदयपुर
(3) माचिया सफारी → जोधपुर
(4) अभेड़ा → कोटा

→ राज॰ में आर्द्रभूमि कुल → (2)
(i) केवलादेव → भरतपुर
(2) सांभर झील → जयपुर

→ यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल स्थान :-
(i) केवलादेव → भरतपुर [1985 में शा
(2) जन्तर-मंतर → जयपुर [2010 में शा
(यह एक सौर वेधशाला है)

राज॰ के राष्ट्रीय उद्यान

→ कुल (3) राष्ट्रीय उद्यान है —

(1) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान (सवाईमाधोपुर) :-
क्षेत्रफल :- 282.03 वर्ग कि॰मी॰

विशेषता :-
(i) 1955 में अभ्यारण्य घोषित
(2) 1973 में बाघ परियोजना में शामिल
(3) 1980 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित

→ राज्य का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान [सर्वाधिक बाघ पाये जाते हैं]

Note:- " " " " मरु उद्यान →

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा. लि. shriramedu.com

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

खड़े गणेश → कोटा
बाजना गणेश → चित्तौड़

→ इस अभयारण्य को शेरों की जन्मभूमि | मातृभूमि कहा जाता है।
→ इसमें त्रिनेत्र गणेश मंदिर स्थित है।

② केवलादेव | घना पक्षी विहार राष्ट्रीय उद्यान :-

क्षेत्रफल :- 28.73 वर्ग किमी. [राज. का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान]

विशेषता :-
→ 1956 में अभयारण्य घोषित
→ 1981 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित
→ 1982 में रामसर भूमि में शामिल
→ 1985 में यूनेस्को की विश्व सूची में शामिल।
→ इसमें सर्वाधिक पक्षियों की प्रजाति पायी जाती है।
→ इसे पक्षियों का स्वर्ग कहते हैं।
→ इसमें साइबेरियन सारस आते हैं। [केवल प्रजनन हेतु]
→ पक्षी विशेषज्ञ डॉ. सलीम अली का संबंध इसी अभयारण्य से है

→ मार्टिन ब्वान्स द्वारा यहाँ के पक्षियों पर "दी बर्ड पैराडाइज" पुस्तक लिखी गई है।
→ इसमें पाइथन प्वॉइंट (अजगर बिन्दु) स्थित है जहाँ हमेशा अजगर, साँप पाये जाते हैं

→ इसमें जंगली मुर्गी तथा खसखस घास (उत्पादक है) पायी जाती है
जंगली मुर्गी ↓ सर्वाधिक → माउंटआबू I, भरतपुर II, टोंक - III
खसखस ↓ (टोंक, भरतपुर, स.माधो.)

③ मुकुन्दरा हिल्स (कोटा) :- विस्तार, [कोटा, चित्तौड़गढ़, झालावाड़]

क्षेत्रफल :- 199.50 वर्ग किमी.
विशेषता :-
(i) 9 जनवरी 2012 को राष्ट्रीय उद्यान घोषित।

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर
विषय :- भूगोल
REET L-I & L-II

वन्य जीव → चिंकारा → 1981
(राज्य पशु)

DATE : / /

(2) 11 अप्रैल 2013 को बाघ परियोजना में शामिल
(3) इसमें हिरामन / हरियल तोते पाये जाते हैं।
(4) इसमें प्राचीन काल की गुफाएँ पायी जाती हैं।

राज० के अभ्यारण्य

कुल → (26)

(1) राष्ट्रीय मरु उद्यान / ऑकल वुड फॉसिल्स पार्क :- जैसलमेर I , बाड़मेर II
क्षेत्रफल :- 3162.50 वर्ग कि.मी. / 3200 वर्ग कि.मी.

→ क्षेत्रफल की दृष्टि से राज० का सबसे बड़ा अभ्यारण्य।
→ इसमें राज्य पक्षी गोडावन [1981 में घोषित] तथा राज्य पशु चिंकारा [1981] पाया जाता है।

Note:
राज्य पक्षी → गोडावन / ग्रेट इंडियन बस्टर्ड [1981]
राज्य पशु (वन्य जीव) → चिंकारा / गजेला-गजेला [1981]
राज्य वृक्ष → खेजड़ी / प्रोसेप्रिस सिनेरेरिया [1983]
राज्य पुष्प → रोहिड़ा / टिकोमेला अन्डूलेटा [1983]
राजकीय पशु (पशुधन में) → ऊँट — [20 जून 2014]

(2) सरिस्का 'अ' :- अलवर
क्षेत्रफल :- 3.0122 वर्ग किमी.

→ क्षेत्रफल की दृष्टि से राज० का सबसे छोटा अभ्यारण्य

सरिस्का (अलवर) :-
क्षेत्रफल :- 492.29 वर्ग कि.मी.
विशेषता :-
(i) 1948 में बाघ परियोजना में शामिल

DATE: / /

→ इसमें हरे कबूतर पाये जाते हैं।

→ इसमें भर्तृहरि (उज्जैन का राजा), पाण्डुपोल हनुमान, नीलकंठ महादेव धार्मिक स्थल स्थित हैं।

→ इसमें क्वांसका तथा कांकणवाड़ी पठार स्थित हैं।

(3) माउन्ट आबू अभ्यारण :- सिरोही

क्षेत्रफल :- 326.10 वर्ग किमी.

विशेषता :-

→ राज. का सबसे ऊँचा अभ्यारण

→ इसमें सर्वाधिक जंगली मुर्गे पाये जाते हैं।

→ इस अभ्यारण में गुरु शिखर (1722) चोटी स्थित है।

अन्य अभ्यारण (पूर्वी राज. मे)

(1) कैलादेवी अभ्यारण :- करौली

क्षेत्रफल :- 676.82 वर्ग किमी.

→ इसमें धोंक के वन पाये जाते हैं।

→ इसमें कैलादेवी का मंदिर स्थित है जिसकी याद में लांगुरिया गीत गाया जाता है जो एक भक्ति गीत है

(2) सवाईमानसिंह अभ्यारण :- सवाईमाधोपुर

(3) बंध बारेठा :- भरतपुर

(4) केसरबाग अभ्यारण :- धौलपुर

(5) वन विहार अभ्यारण :- धौलपुर

(6) रामसागर अभ्यारण :- धौलपुर

(7) नाहरगढ़ अभ्यारण :- जयपुर [देश का प्रथम जैविक उद्यान]

(8) जमुवारामगढ़ अभ्यारण :- जयपुर

(9) तालछापर अभ्यारण :- चुरू (सुजानगढ़)

→ क्षेत्रफल :- 7.19 वर्ग किमी.

विशेषता :- → कृष्ण मृग हेतु प्रसिद्ध। Imp
→ चकवा - चकवी पक्षी पाये जाते हैं।
→ कुरजा पक्षी पाये जाते हैं। कुरजा एक गीत भी है। जिसके माध्यम से एक पत्नी अपने पति को संदेश भेजती है।
→ गुरु द्रोणाचार्य की तपो स्थली।

(10) फुलवारी की नाल :- उदयपुर

→ इसमें सोम, मानसी, वाकल नदियाँ बहती हैं।

(11) जयसंमद अभ्यारण :- उदयपुर
(12) सज्जनगढ़ अभ्यारण :- उदयपुर
→ क्षेत्रफल :- 5.19 वर्ग कि.मी.
→ राज्य का दूसरा सबसे छोटा अभ्यारण।
Note :- पहला → सरिस्का
→ राज्य का दूसरा जैविक उद्यान।

Imp
(13) कुंभलगढ़ अभ्यारण :- उदयपुर, राजसमंद, पाली
→ जंगली बघेरों के लिए प्रसिद्ध
→ इस अभ्यारण में रणकपुर जैन मंदिर [मथाई नदी के किनारे (पाली)] Imp स्थित है।

(14) सीतामाता अभ्यारण :- प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, उदयपुर

→ उड़न गिलहरी पायी जाती है।
→ इसे चितल की मातृ-भूमि [इसे स्थानीय भाषा में भेड़ल कहते हैं] कहते है
→ इसमें बारहसिंहा हिरण पाया जाता है। [इसे स्थानीय भाषा में आड़हुला कहते हैं]
→ सर्वाधिक सागवान के वन पाये जाते हैं
→ दुर्लभ प्रकार की वनस्पति पायी जाती हैं
→ इसमें लव (ठंडा), कुश (गर्म) पानी के (2) झरने हैं।

Note:- उदयपुर में सर्वाधिक (5) अभ्यारण है — (1) फुलवारी की नाल अभ्यारण
→ (2) सज्जनगढ़ "
(3) कुम्भलगढ़ " "
(4) जयसंमद " "
(5) सीतामाता " "

(14) भैंसरोड़गढ़ अभ्यारण :- चित्तौड़गढ़
→ घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध।
→ चम्बल व बामनी नदियाँ बहती हैं।

(16) बस्सी अभ्यारण :- चित्तौड़गढ़
→ इसमें ब्राह्मणी तथा ओरई नदियाँ बहती हैं।
→ इसमें जोलेश्वर महादेव का मंदिर है।

(17) जवाहरसागर अभ्यारण :- कोटा, बूंदी
→ सर्वाधिक संख्या में घड़ियाल पाये जाते हैं।

(18) शेरगढ़ अभ्यारण :- बारां
→ सांपों की शरण स्थली।
(19) इसमें परवन नदी बहती है।

(19) दर्रा वन्यजीव अभ्यारण :- कोटा, झालावाड़
→ गागरोनी तोते पाये जाते हैं।
→ इसमें गागरोन का किला (झालावाड़) तथा अबली-मीणी का महल (कोटा) स्थित है

(20) रामगढ़ विषधारी अभ्यारण :-
→ इसमें बाघ पाये जाते हैं परन्तु बाघ परियोजना में शामिल नहीं है

(21) रावली टॉडगढ़ अभ्यारण :- (अजमेर, राजसमंद, पाली)
(22) राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण :-
विस्तार :- m.P., चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, स० माधोपुर, करौली,

→ (3) राज्यों व राज. के (6) जिलों में फैला हुआ है।
→ इसमें घड़ियाल तथा मगरमच्छ पाये जाते हैं।

प्रमुख घासें :-

(1) खसखस घास :- सवाईमाधोपुर, टोंक, भरत [सूत्र:- सवाई टोंक भरत न]
→ इससे सुगन्धित इत्र बनाई जाती है।
→
(2) बांस :- बांसवाड़ा
→ ये सबसे लम्बी घास है।
→ इसे आदिवासियों का हरा सोना कहते हैं। क्योंकि आदिवासियों का कुटीर उद्योग इसी पर निर्भर है।

(3) सेवण घास :- लाठीसीरिज (जैसलमेर)
पशुओं की पौष्टिक घास।
→ वैज्ञानिक नाम :- लसियुरूस सिंडीकुस
→

(4) मोधिया घास :- ताल छापर (चुरू)
(5) मोथा घास :- भरतपुर
(6) धामासा घास :- जयपुर
(7) हाथी घास :- भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में [अफ्रिका के सवाना घास के मैदानों में]
(8) धामण, मुरात, अंजन, चिनकारिया घास :- उ.प. मरुस्थलीय राज. में।

सब्जियाँ :-
पंचकूटा :- (कैर, सांगरी (→ खेजड़ी), काचरी, कूमट (→ सन्त्री) के फल, कुमठ के बीज)
→ राजस्थानी पाँच सब्जियों का समूह।

www.shriramedu.com

9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

राज० का सामान्य परिचय

PAGE NO.
DATE : / /

→ राज० भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित है।

(1) अक्षांशीय स्थिति :-

→ उत्तरी गोलार्द्ध में

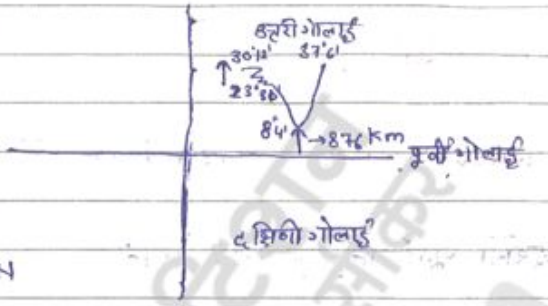

(2) अक्षांशीय विस्तार :-

→ 23°3'N → 30°12'N

(3) अक्षांशीय अन्तर :- 23°3'N − 30°12'N

= 7°9'

→ कर्क रेखा → 23°30'N

→ कर्क रेखा की राज० में लम्बाई :-

→ कर्क रेखा राज० के (2) जिलों से गुजरती है → डूंगरपुर की दक्षिणी सीमा को स्पर्श तथा बांसवाड़ा के मध्य से।

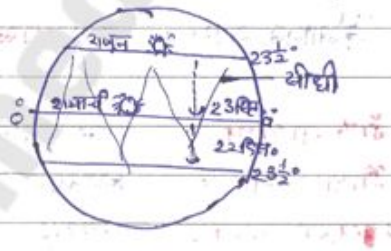

→ 21 जून को सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर लम्बवत् / सीधी पड़ती है। बांसवाड़ा में सर्वाधिक सीधी तथा गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी।

(4) देशान्तरीय स्थिति :- पूर्वी गोलार्द्ध में

(5) देशान्तरीय विस्तार :- 69°30' → 78°17'

(6) देशान्तरीय अन्तर :- 8°47'

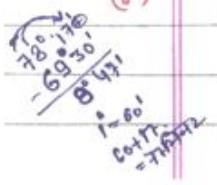

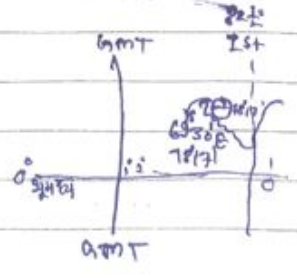

अनुभवी, चयनित एवं विख्यात विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा अध्यापन – श्रीराम कोचिंग, सीकर

→ 1 देशान्तर को तय करने में सूर्य का प्रकाश (4) मिनट का समय लगता।

(7) क्षेत्रफल में स्थिति :- देश में प्रथम स्थान [3,42,239.74 वर्ग कि.मी.]

(8) कुल क्षेत्रफल :- 3,42,239.74 वर्ग कि.मी.

→ देश के कुल क्षेत्रफल का राज्य में प्रतिशत :- 10.41%

(9) जनसंख्या में स्थिति :- सातवां [दो जून 2014 को तेलंगाना के गठन के बाद]

(10) कुल जनसंख्या :- 6,85,48,437

→ देश की कुल जनसंख्या का राज्य में प्रतिशत :- 5.66%

(11) कुल लम्बाई :- उत्तर से दक्षिण → 826
पश्चिम से पूर्व → 869

(12) लम्बाई चौड़ाई में अन्तर :- 43 km

(13) आकृति | आकार :- विषमकोणीय | चतुर्भुजाकार | पतंगाकार

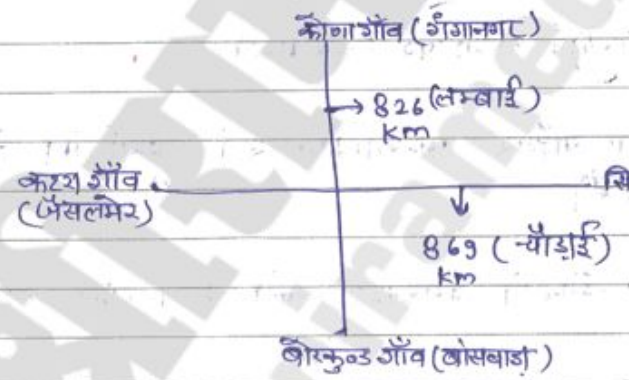

(14) कटिबन्ध :- उपोष्ण कटिबन्ध

बांसवाड़ा व डूंगरपुर का कुछ क्षेत्र → उष्ण कटिबंध में आता है।

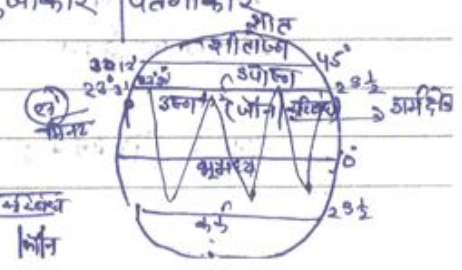

Note:- कर्क रेखा के दक्षिण का भाग (बांसवाड़ा, डूंगरपुर का कुछ भाग) उष्ण कटिबंध के अन्तर्गत आता है।

(15) राज० की कुल स्थलीय सीमा/घेरा :- 5920 km
अन्तर्राज्यीय सीमा → 4850 km
अन्तर्राष्ट्रीय सीमा → 1070 km

→ राज० के सीमावर्ती जिले :- (25)
→ राज० के अन्तर्वर्ती जिले :- (08) [सूत्र:- भाषा जो आटा बुराद़ो]
→ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित जिले :- गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर

→ केवल अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित जिले :- (2) बीकानेर, जैसलमेर

→ अन्तर्राज्यीय सीमा पर स्थित जिले :- (23)

→ केवल अन्तर्राज्यीय सीमा पर स्थित जिले :- (21)

→ गंगानगर तथा बाड़मेर अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तर्राज्यीय दोनों सीमा बनाते हैं।

→ पाकिस्तान की ओर से बहावलपुर सबसे लम्बी सीमा बनाता है।

→ राज० के (4) जिले पाकिस्तान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।
→ राज० (भारत) तथा पाक० के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को रेडक्लिफ रेखा कहते हैं।
निर्धारण वर्ष :- (17) अगस्त 1947
मानचित्र पर अंकन :- 1948

→ राज० के (4) जिले :-
गंगानगर → 210 km
बीकानेर → 168 km (न्यूनतम)
जैसलमेर → 464 km (अधिकतम)
बाड़मेर → 228 km
कुल सीमा 1070 km

9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

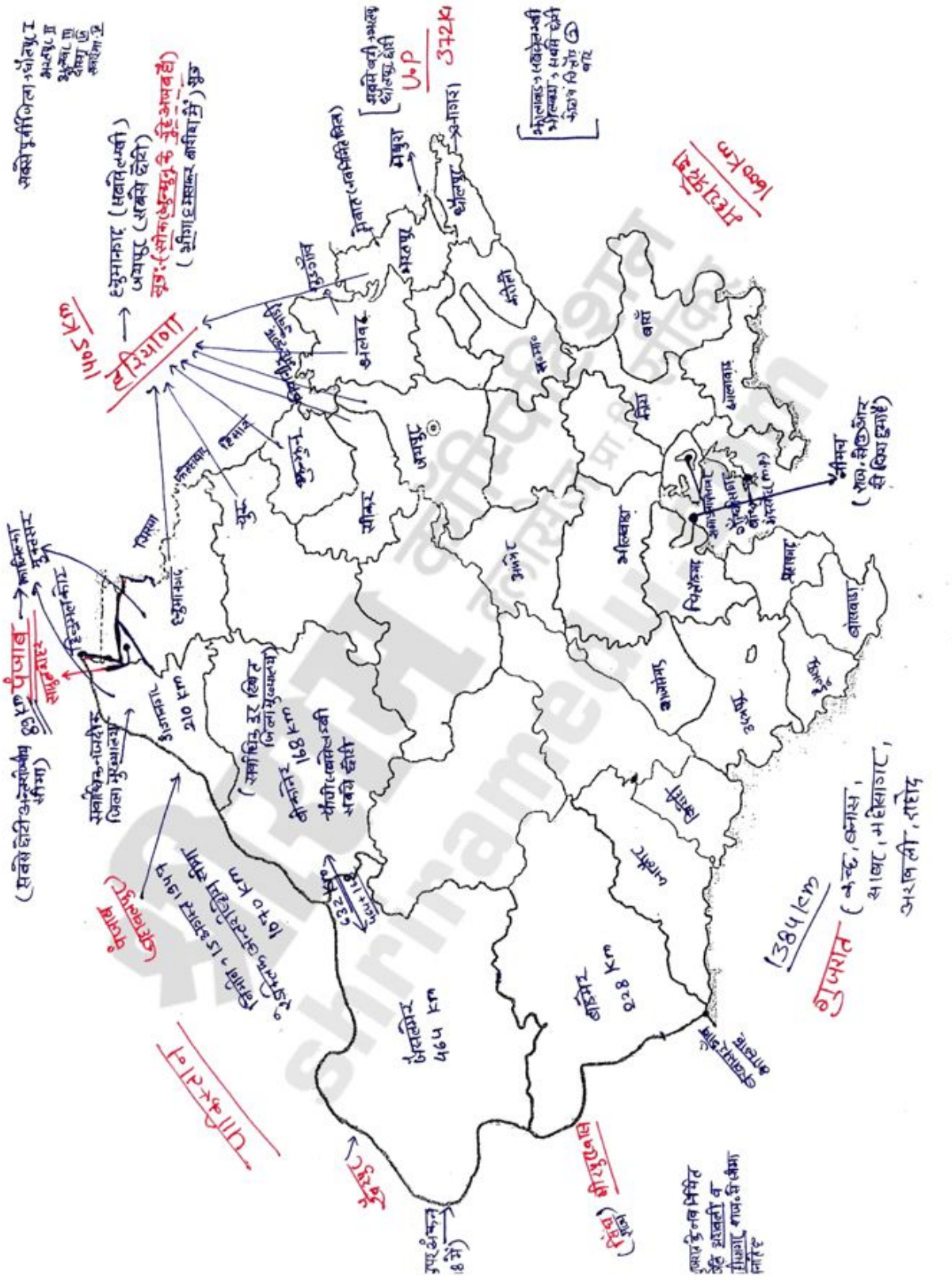

→ रेडक्लिफ रेखा का राज० में →
प्रारंभिक बिन्दु :- हिन्दूमल कोट (गंगानगर)
अंतिम बिन्दु :- बरखासर गाँव (शाहगढ़) बाड़मेर

→ रेडक्लिफ रेखा से राज० का →
निकटतम शहर | जिला मुख्यालय :- गंगानगर
सबसे दूर शहर | जिला मुख्यालय :- बीकानेर

अन्तर्राज्यीय सीमा :- 4850 km

→ राज० 5 राज्यों के साथ अन्तर्राज्यीय सीमा बनाता है।

राज० के दक्षिण-पश्चिमी सीमा :- गुजरात [1384 km]
राज० " दक्षिण-पूर्वी " :- मध्यप्रदेश [1600 km] → सर्वाधिक
राज० " उत्तरी-पूर्वी " :- उत्तर प्रदेश [572 km]
राज० " उत्तरी-पूर्वी " :- हरियाणा [1405 km]
राज० " उत्तरी सीमा :- पंजाब [89 km] → न्यूनतम

कुल सीमा → 4850 km

→ गुजरात के साथ अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले :- 1384 km

राज० → 6 जिले	गुजरात → 6 जिले
Imp. बाड़मेर [न्यूनतम]	1 कच्छ
जालोर	2 बनास कांठा
सिरोही	3 साबर कांठा
Imp. उदयपुर [सर्वाधिक]	4 महीसागर
डूंगरपुर	5 अरावली
बाँसवाड़ा	6 दाहोद

(महीसागर, अरावली → पहले यहाँ पंचमहाल था जिसे समाप्त कर दिया गया है)

→ मध्यप्रदेश के साथ अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले :- 1600 km

राज. के (2) जिले विखंडित है → अजमेर, चित्तौड़गढ़

राज. → (10) जिले	M.P. के → (10) जिले
(1) बांसवाड़ा	रतलाम
प्रतापगढ़	नीमच
चित्तौड़गढ़	मंदसौर
भीलवाड़ा [न्यूनतम]	शिवपुरी
कोटा	राजगढ़
झालावाड़ [सर्वाधिक]	गुना
बारां	श्योपुर
सवाईमाधोपुर	शाहजहाँपुर को हटाकर (जोड़ा गया) → मालवा
करौली	झाबुआ
धौलपुर	मुरैना

→ उत्तरप्रदेश के साथ अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले :- 872 km

राज. के	उ. प्र.
भरतपुर — मथुरा, आगरा	भरतपुर — मथुरा
धौलपुर	धौलपुर — आगरा

→ हरियाणा के साथ अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले :- 1405 km

राज. के	हरियाणा
(1) हनुमानगढ़ [सर्वाधिक]	(1) सिरसा
(2) चुरू	(2) हिसार
(3) झुन्झुनू	(3) महेन्द्रगढ़
(4) सीकर	(4) फतेहाबाद
(5) जयपुर → [न्यूनतम]	(5) भिवानी
(6) अलवर	(6) रेवाड़ी
(7) भरतपुर	(7) गुड़गाँव
	(8) मेवात

[भीगा हमसफर जारी है फूट !]

→ पंजाब के साथ अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले :- 89 km

राज. के	पंजाब (2)
गंगानगर [सर्वाधिक]	मुक्तसर
हनुमानगढ़ [न्यूनतम]	फाजिल्का

9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर © 01572-254777
HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

→ अन्तर्राष्ट्रीय तथा अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले :-
श्रीगानगर → पाकिस्तान + पंजाब
बाड़मेर → पाकिस्तान + गुजरात

→ दो राज्यों के साथ अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले :- (4) जिले

बांसवाड़ा → गुजरात + M.P.
धौलपुर → M.P. + U.P.
भरतपुर → U.P. + हरियाणा
हनुमानगढ़ → पंजाब + हरियाणा

→ अन्तर्राष्ट्रीय तथा अन्तर्राज्यीय दोनों प्रकार की सीमाएँ (स्थलीय सीमा) :-
बनाने वाले कुल राज्य → (25)

→ केवल अन्तर्राज्यीय सीमा बनाने वाले राज्य :- (21)
→ पाली जिला सर्वाधिक (8) जिलों के साथ सीमा बनाता है।

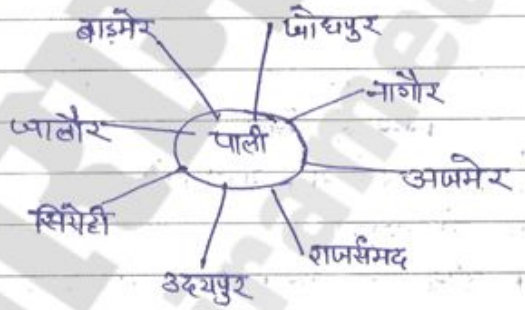

संभाग

→ राज. में कुल (7) संभाग एवं (33) जिले हैं।
(1) बीकानेर संभाग :- श्रीगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरू, झुंझुनूं, सीकर
→ (6) जिले
(2) जोधपुर संभाग :- जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, पाली
→ (6) जिले
→ क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग सूत्र :- [जोसीपा बाजेजा] (1 3 2)

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

(3) उदयपुर संभाग :- (6) जिले
उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़
प्रतापगढ़।

→ सर्वाधिक अभ्यारण इसी संभाग मे है।

सूत्र :- उदयप्रताप रांची में डूबा

(4) अजमेर संभाग :- (4) जिले
अजमेर, भीलवाड़ा, नागौर, टोंक

सूत्र :- अभीना टोंक

(5) जयपुर संभाग :- (5) जिले
जयपुर, दौसा, अलवर, सीकर, झुन्झुनू

→ जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग।

(6) कोटा/हाड़ौती संभाग :- (4) जिले सूत्र :- (कोझा बाबू)
कोटा, बूंदी, बाराँ, झालावाड़

→ जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा संभाग
→ सर्वाधिक नदियाँ भी इसी संभाग में बहती है।

(7) भरतपुर संभाग :- (4) जून 2005 को ~~[जयपुर संभाग से जिले व कोटा]~~ निर्माण हुआ।
भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर

→ सबसे नया संभाग।
→ क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा संभाग है।

कुछ विशेष तिथियाँ :-

→ 30 मार्च → राज॰ दिवस
→ 1 Nov. → राजस्थान स्थापना दिवस (पूर्ण एकीकरण)
→ 1 Nov. 2000 → देश का सबसे बड़ा राज्य बना (M.P. से छत्तीसगढ़ अलग होने पर)
→ 26 वाँ जिला अजमेर → 1 Nov. 1956 को बना।

→ 27 वाँ जिला धौलपुर → 15 अप्रैल, 1982

→ 28 वाँ → बाराँ → 10 अप्रैल, 1991
29 वाँ → दौसा → 10 अप्रैल 1991
30 वाँ → राजसमंद → 10 अप्रैल 1991
31 वाँ → हनुमानगढ़ → 12 जुलाई 1994
32 वाँ → करौली → 19 जुलाई 1997
33 वाँ → प्रतापगढ़ → 26 जनवरी, 2008

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर shriramedu.com

विषय :- **भूगोल**

REET L-I & L-II

www.shriramedu.com
9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

राज० के भौतिक प्रदेश

PAGE NO. :
DATE : / /

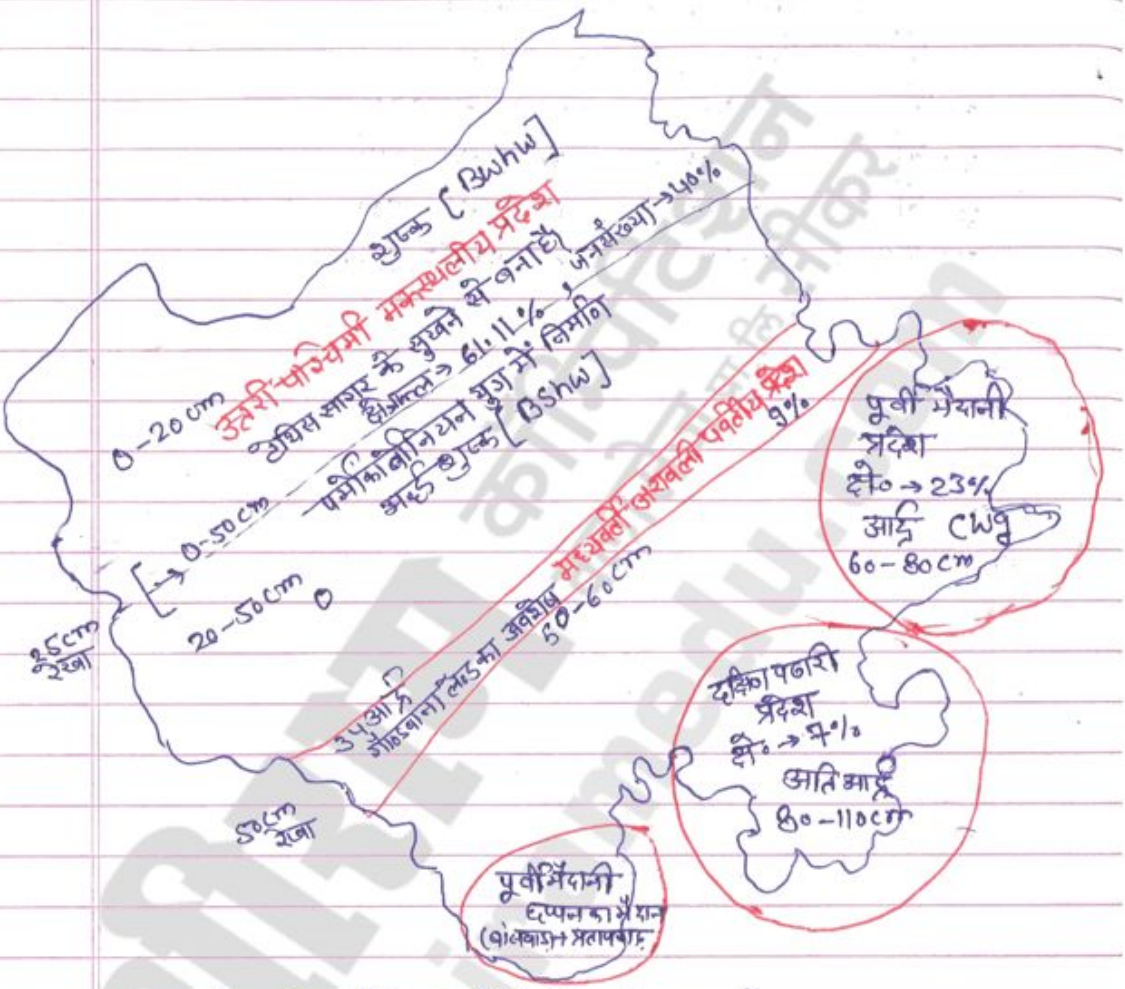

→ राज० को (4) भौतिक प्रदेशों में बांटा गया है —

1. उत्तरी पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
2. मध्यवर्ती अरावली पर्वतीय प्रदेश
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश
4. दक्षिण पठारी प्रदेश

1. उत्तरी पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश :— निर्माण :— पर्मोकार्बोनियन युग में टेथिस सागर के सूखने से

www.shriramedu.com
श्रीराम
SHRIRAM COMPETITION CLASSES PVT. Ltd. SIKAR
An ideal institute for
Competitive Exams
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विस्तार :- (12) जिलों में [गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरू, जोधपुर, बाड़मेर, जालोर, जैसलमेर, नागौर, सीकर, झुन्झुनू, पाली]

क्षेत्रफल :- 61.11% | 60% से अधिक | लगभग 2/3

जनसंख्या :- 40%

[redacted] जलवायु :- शुष्क एवं अर्द्धशुष्क [अर्थात् विषम मरुस्थलीय प्रकार की]

कॉपेन :- के अनुसार BWhw [शुष्क]
BShw [अर्द्धशुष्क]

औसत वर्षा :- 0-50 cm [शुष्क → 0-20] cm
[अर्द्धशुष्क → 20-50] cm

मिट्टी :- रेतीली बलुई मिट्टी [राज्य में सर्वाधिक क्षेत्रफल पर]

वनस्पति :- मरुस्थलीय वनस्पति | शुष्क एवं अर्द्धशुष्क [अर्थात् कंटीले झाड़ियां]

सिंचाई के साधन :- प्रमुख रूप से नहरों द्वारा, कुएँ एवं नलकूपों से।

प्रमुख नहर :-

(1) I.G.N.P. | इंदिरा गाँधी नहर :- उद्गम :- हरि के बैराज [पंजाब]

जल → सतलज + व्यास का पानी आता है।

सिंचाई → (7) जिलों में [हनु॰ + गंगा॰ + जैस॰ + बीका॰ + बाड़॰ + जोध॰ + चुरू]

→ इंदिरा गाँधी नहर से सिंचाई एवं पेयजल दोनों की आपूर्ति होती है। [सिंचाई (7) जिलों में, पेयजल (2) जिलों में]

→ झुन्झुनू व नागौर में केवल पेयजल

→ इसे उ॰ प॰ राज॰ की जीवनरेखा भी कहा जाता है

→ यह राज॰ की बहुउद्देशीय परियोजना है। विद्युत की आपूर्ति भी होती है

राज० में सबसे ज्यादा सिंचाई नलकूपों द्वारा होती है
[जयपुर में सर्वाधिक]

PAGE NO.
DATE : / /

(2) गंगनहर :- [1922-1927]
उद्गम:- हुसैनी वाला (पंजाब)
जल :- सतलज का पानी आता है।
सिंचाई :- गंगानगर में होती है।
→ यह राज० की वृहत् योजना है।

(3) नर्मदा नहर:-
उद्गम:- सरदार सरोवर (गुजरात)
जल :- नर्मदा
सिंचाई:- जालौर, बाड़मेर
→ 31 मार्च 2008 को राज० में लाया गया। सिलू गाँव से। (बाड़मेर के)

फसलें :- बाजरा, मूंगफली, ज्वार, ग्वार, चना, उड़द, मूंग, मोठ, आदि।

प्रमुख शब्दावली :-

(1) बरखान :-

→ गतिशील, अर्द्ध-चन्द्राकार रेत के टीले [मरुस्थलीय क्षेत्रों में]
→ सर्वाधिक चूरू के आसपास। (भलेरी गाँव में)

(2) धरियन :-

→ मरुस्थलीय क्षेत्रों में लहरदार, गतिशील रेत के टीले।
→ सर्वाधिक जैसलमेर (I), बाड़मेर (II) में

(3) पेराबोलिक :- इन रेत के टीलों की आकृति महिलाओं के बालों में लगायी जाने वाली पिन की आकृति जैसी होती है।
या परवलयिक

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

सहारा मरुस्थल में → हमाद
जैसलमेर में → हमादा

(4) **हमादा :-** जैसलमेर जिले में पोकरण, मोहनगढ़, रामगढ़ के आस-पास पथरीला मरुस्थल।
(पोकरण → खेतोलाई गाँव में परमाणु परीक्षण केन्द्र है)
(मोहनगढ़ → कस्बा)
(रामगढ़ → देश की पहली गैस विद्युत परियो…)

(5) **रैग | सरिर :-** कंकड़, पत्थर युक्त मरुस्थल रैग कहलाता है।

(6) **लाठी सीरिज :-** जैसलमेर जिले के लाठी गाँव में स्थित एक भुगर्भिय जल पट्टी

Note :- लाठी सीरिज क्षेत्र में वर्षाकाल में पशुओं की पौष्टिक सेवण घास पायी जाती है

(7) **बालसन :-**

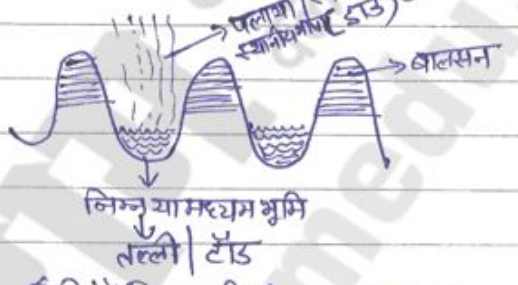

(8) **बजाड़ | बजाद :-** कोई ऊँचे पर्वत के ढलान पर

- बांगर → रेह | कल्लर ; भुड़ | मोरिंड
- खादर → बेट (पंजाब) ; खादर (U.P.)
- डेल्टाई → चार ; बील

9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

→ अरावली को प्रमुख रूप से (3) खण्डों में विभाजित किया गया है-

(1) उत्तरी अरावली / (अलवर खंड) :- सर्वाधिक विस्तार :- उ.पू. जयपुर, अलवर, दौसा, सीकर झुन्झुनू।

→ उत्तरी अरावली की सबसे ऊँची चोटी :- रघुनाथगढ़ (1055 m - सीकर)
→ उत्तरी अरावली की दूसरी ऊँची चोटी :- खो (920 m → जयपुर)

Note:-
(1) सीकर में अरावली को स्थानीय भाषा में मालखेत की पहाड़ियां कहते है

(2) मध्यअरावली / अजमेर खण्ड :- सर्वाधिक विस्तार :- अजमेर, द.प. जयपुर, भीलवाड़ा।

→ मध्य अरावली की सबसे ऊँची चोटी :- तारागढ़ (873 m → अजमेर)

(3) दक्षिण अरावली / उदयपुर खण्ड :- सर्वाधिक विस्तार :- उदयपुर, राजसमंद, सिरोही, पाली, डूंगरपुर, चित्तौड़ग.

→ दक्षिण अरावली की सबसे ऊँची चोटी :- गुरु शिखर (1722 - सिरोही) तथा मध्य भारत की तथा राज. की सबसे ऊँची चोटी

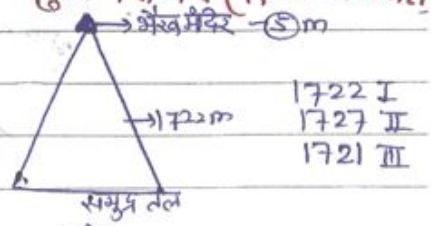

→ कर्नल जेम्स टॉड ने इसे संतो का शिखर कहा है।

(1) गुरु शिखर → 1722 m (सिरोही)
(2) सेर (सिरोही) → 1597 m
(3) देलवाड़ा (सिरोही) → 1442 m
(4) जरगा (उदयपुर) → 1431 m
(5) अचलगढ़ (सिरोही) → 1380 m
↓
मरम्मत (महाराणा कुंभा ने)

प्रमुख पर्वत :- दक्षिण अरावली के [

(1) डोरा, इसराना (जालौर)
(2) नाकोड़ा/छप्पन की पहाड़ियाँ [बाड़मेर जिले में गोलाकार पहाड़ियाँ)

प्रमुख पठार

(1) उड़ीया का पठार :- 1360 m (सिरोही)
→ राज० का सबसे ऊँचा पठार है। जो गुरुशिखर के नीचे स्थित है।

(2) आबू का पठार :- 1200 m (सिरोही)
→ राज० का दूसरा सबसे ऊँचा पठार

(3) भोराठ का पठार :- 920 m (

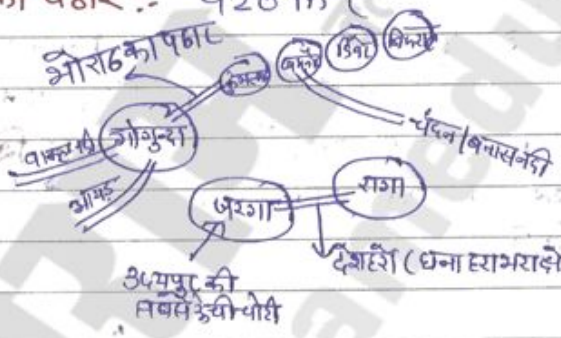

→ यह राज० का तीसरा सबसे ऊँचा पठार है जो गोगुन्दा की पहाड़ियाँ (उदयपुर) तथा कुंभलगढ़ की पहाड़ियाँ (राजसमंद) के मध्य स्थित है

(4) मेसा का पठार :- 620 m (चित्तौड़गढ़)
→ इस पठार पर चित्तौड़गढ़ का दुर्ग स्थित है

(5) लसाड़िया का पठार :- 360-640 m (उदयपुर)
→ उदयपुर जिले में जयसमंद झील के उत्तर-पूर्व में कटा-फटा विच्छेदित पठार।

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

सबसे अधिक क्षेत्रफल पर ब्लालाप्रान → अग्रजा III | राज. मारवाड़ I, मेवाड़ II

(6) उपरमाल का पठार :- यह पठार भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) तथा बिजौलिया (भीलवाड़ा) के मध्य स्थित है।

अन्य स्थलाकृतियाँ :-

(1) भाकर :- पूर्वी सिरोही में स्थित अरावली की तीव्र नुकीली पहाड़ियाँ

(2) नाल :- अरावली में स्थित दर्रे / तंगरास्ते को स्थानीय भाषा में नाल कहते है। देसूरी की नाल, हाथीनाल, जिल्वा / कल्या की नाल

(3) गिरवा :- उदयपुर शहर के तीन ओर से घिरी तस्तरीनुमा आकृति की पहाड़ियाँ।

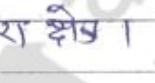

(4) देशहरो :- उदयपुर जिले में जरगा व रागा पहाड़ियों के मध्य स्थित हरा-भरा क्षेत्र।

(1) देसूरी की नाल :- पाली (मारवाड़), राजसमंद (मेवाड़)

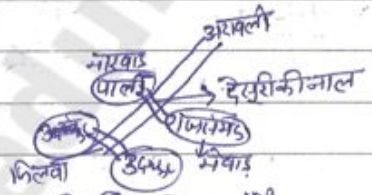

(2) जिल्वा / पगल्या की नाल :- उदयपुर तथा पाली को जोड़ता है।

(3) हाथीगुढ़ा की नाल :- मेवाड़ व मारवाड़ को जोड़ता है (राजसमंद)

(4) केलवा की नाल :- राजसमंद

(5) बर की नाल :- अजमेर

प्रमुख क्षेत्र :-

(1) मांड क्षेत्र :- जैसलमेर के आसपास का क्षेत्र

Note :- जैसलमेर व बीकानेर के आसपास मांड गायिकी गायी जाती है।
राज. की मरुकोकिला → अल्ला जिल्ला बाई (बीकानेर)

(2) मारवाड़ क्षेत्र :- जोधपुर, पाली के आसपास का क्षेत्र

अनुभवी, चयनित एवं विख्यात विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा अध्यापन - श्रीराम कोचिंग, सीकर

PAGE NO.
DATE: / /

Note:- वेलि किसन रुकमणी नामक साहित्यिक ग्रंथ पृथ्वीराज राठौड़ ने मारवाड़ी/उत्तरी मारवाड़ी भाषा में लिखा है

→ सबसे शुद्ध | विशुद्ध मारवाड़ी भाषा बोली जाती है → जोधपुर व पाली

(3) मेवाड़ क्षेत्र :- उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़ के आस-पास का क्षेत्र

(4) मेवल :- बांसवाड़ा व डूंगरपुर के मध्य स्थित पर्वतीय क्षेत्र

डूंगरपुर
~~~~~ पर्वतीय क्षेत्र (मेवल)
बांसवाड़ा

(5) वांगड़ :- डूंगरपुर व बांसवाड़ा के आस-पास का स्थानीय क्षेत्र

→ भोगीलाल पांड्या को वांगड़ के गाँधी कहा जाता है।

(6) कांठल :- प्रतापगढ़ के आस-पास ~~माही नदी द्वारा विस्तृत मैदान | क्षेत्र~~ का क्षेत्र

(7) छप्पन का मैदान :- बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ [माही नदी द्वारा विस्तृत मैदान]

→ यह राज. के दक्षिण भाग में स्थित है। [यह पूर्वी मैदानी प्रदेश का भाग है]

(8) बागड़ क्षेत्र :- शेखावाटी क्षेत्र [गोकुल भाई भट्ट को राज. के गांधी कहलाते है]

→ इस क्षेत्र में चूना निर्मित चट्टानों में जो कुएँ खोदे जाते है उन्हे स्थानीय भाषा में जोहड़ कहते है, इस क्षेत्र मे आन्तरिक प्रवाह प्रणाली पायी जाती है

(9) भोमट क्षेत्र :- उदयपुर व चित्तौड़गढ़ [दक्षिणी राज.] में स्थित आदिवासी भील क्षेत्र।

Note:- इस भील क्षेत्र से मोतीलाल तेजावत द्वारा एकी आंदोलन | भोमट भील आंदोलन शुरू किया गया था।

(10) मेरवाड़ा क्षेत्र :- अजमेर के आस-पास का क्षेत्र
~~~~~

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

(11) मेवात :- अलवर व भरतपुर के आस-पास का क्षेत्र।

इंसेलबर्ग :- मकस्थलीय क्षेत्रों में अवशिष्ट पहाड़िया एकाकी

(3) पूर्वी मैदानी प्रदेश

निर्माण :- टर्शियरी काल में हुआ [उत्तरी मैदानी प्रदेश का भाग]
कुल (10) जिले आते हैं।

विस्तार :- अलवर, भरतपुर, जयपुर, दौसा, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, टोंक तथा बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ [छप्पन का मैदान]

क्षेत्रफल :- 23%

जनसंख्या :- 39%

जलवायु :- आर्द्र प्रकार की [कोपेन के अनुसार [CWg] प्रकार की]

वर्षा :- 60-80 cm

मिट्टी :- जलोढ़ / कछारी मिट्टी [नदियों द्वारा बिछायी गयी उपजाऊ मिट्टी]

फसलें :- रुई, सरसों, गेहूँ, बाजरा, तम्बाकू आदि।

सिंचाई के साधन :- कुएँ व नलकूप [सर्वाधिक], जयपुर सर्वाधिक

वनस्पति :- मिश्रित पतझड़ वन

(4) दक्षिणी पठारी प्रदेश

निर्माण :- क्रिटेशियस काल में हुआ [प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश का भाग
→ विस्तार → (8) जिलों में।

DATE : / /

विस्तार :- कोटा, बूँदी, बाराँ, झालावाड़ (हाड़ौती क्षेत्र), द० भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा

क्षेत्रफल :- 6.9% | 7%
जनसंख्या :- 11%
जलवायु :- अति आर्द्र प्रकार की (कोपेन → AW) प्रकार की
वर्षा :- 80-110 cm
मिट्टी :- मध्यम काली | कपासी | लावा निर्मित |

फसलें :- सोयाबीन, धनिया, कपास, गन्ना |
सिंचाई के साधन :- ① नहरें (बूँदी, कोटा) ③ झरने → बांसवाड़ा
I II
② तालाब :- भीलवाड़ा
वनस्पति :- शुष्क सागवान प्रकार की तथा पर्णपाती | पतझड़ प्रकार की |

राज० का नदियाँ | अपवाह तंत्र

प्रवाह तंत्र :- कोई नदी उद्गम से लेकर अपने मुहाने तक जिस मार्ग से होकर निकलती है तो वह प्रवाह तंत्र कहलाता है।

अपवाह तंत्र :- कोई नदी उद्गम से लेकर अपने मुहाने तक जिस मार्ग से होकर निकलती है उसमें उसकी सहायक नदियों को भी शामिल कर दिया जाता है, वह अपवाह तंत्र कहलाता

→ राज० में प्रमुख रूप से ③ प्रकार की अपवाह तंत्र प्रणाली पायी जाती है

1. आन्तरिक अपवाह तंत्र प्रणाली :- 60% [सर्वाधिक]
2. अरब सागरीय " " " :- 17% [न्यूनतम]
3. बंगाल की खाड़ी " " " :- 23%

① आन्तरिक अपवाह तंत्र प्रणाली

→ इसके अन्तर्गत वे नदियाँ आती हैं जिनका जल सागर | समुद्र में ना पहुँचकर किसी झील या मरुभूमि में विलुप्त हो जाता है। इस प्रणाली का सर्वाधिक विकसित रूप भारत के राज० राज्य में देखने को मिलता है। तथा जम्मू कश्मीर में आंशिक रूप से देखने को मिलता है

1. घग्घर
2. काकनेय | काकनी
3. कांतली
4. साबी
5. रूपारेल
6. मेंढा
7. रूपनगढ़
8. खारी
9. खण्डेल
10. मेंथा

(6 से 10) → सांभर झील में गिरती हैं।

(1) घग्घर नदी :- 465 km लम्बी

→ यह आन्तरिक प्रवाह की राज० की सबसे लम्बी नदी है।
उद्गम :- कालका नामक स्थान, शिवालिक हिमालय (H.P.)
राज० में प्रवेश :- तलवाड़ा टिब्बी तहसील (हनुमानगढ़)
प्रवाह क्षेत्र :- H.P., हरियाणा, हनुमानगढ़, गंगानगर [राज०]
संगम/मुहाना :- भटनेर दुर्ग के पास हनुमानगढ़
विशेषता :- (i) अधिक वर्षा के समय घग्घर का जल गंगानगर के अनूपगढ़ तथा सूरतगढ़ तक पहुँच जाता है
(ii) घग्घर में बाढ़ आने पर इसका जल अंतिम रूप से फोर्टअब्बास (पाकिस्तान) तक पहुँच जाता है। जहाँ इसे हकरा नदी कहा जाता है
(iii) वैदिक काल में घग्घर को सरस्वती व दृषद्वती कहते थे।
(iv) वर्तमान में इसे मृत नदी/डैड रिवर कहते हैं
(v) इस नदी के तल में कालीबंगा भी बसा हुआ है
(vi) घग्घर का क्षेत्र गंगानगर व हनुमानगढ़ में नाली के नाम से जाना जाता है।

(2) काकनेय/काकनी नदी :- 17 km

उद्गम :- कोटरी गाँव (जैसलमेर)
प्रवाह क्षेत्र :- जैसलमेर
मुहाना :- बुझ झील (जैसलमेर)

विशेषता :- स्थानीय भाषा में इसे मसूरदी कहा जाता है

(3) कांतली :- 100 km
उद्गम :- खण्डेला की पहाड़ियाँ (सीकर)
संगम :- झुन्झुनू जिला, चुरू जिला की सीमा के निकट
प्रवाह क्षेत्र :- सीकर, झुन्झुनू
I II

विशेषता :- इस नदी का प्रवाह क्षेत्र तोरावाटी कहा जाता है।
→ यह नदी झुन्झुनू जिले को (2) भागों में विभाजित करती है
→ ताम्रकालीन गणेश्वर सभ्यता इस नदी के किनारे [गणेश्वर गाँव, नीमका थाना (सीकर)] स्थित है

(4) साबी नदी :-
उद्गम :- सेवर की पहाड़ियाँ (जयपुर)
प्रवाह क्षेत्र :- जयपुर, अलवर
संगम :- पटौदी गाँव, गुड़गाँव (हरियाणा)
→ यह नदी हर बार अपना मार्ग परिवर्तन करती रहती है जिस कारण इस पर कोई बाँध नहीं बनाया जा सका।

(5) रूपारेल नदी :-
उद्गम :- उदयनाथ की पहाड़ियाँ, सरिस्का (अलवर)
प्रवाह क्षेत्र :- अलवर, भरतपुर
संगम :- मोती झील बाँध, भरतपुर
विशेषता :-
(i) रूपारेल नदी में बाढ़ आने पर भरतपुर शहर डूब जाता है।

सांभर झील में गिरने वाली नदियाँ

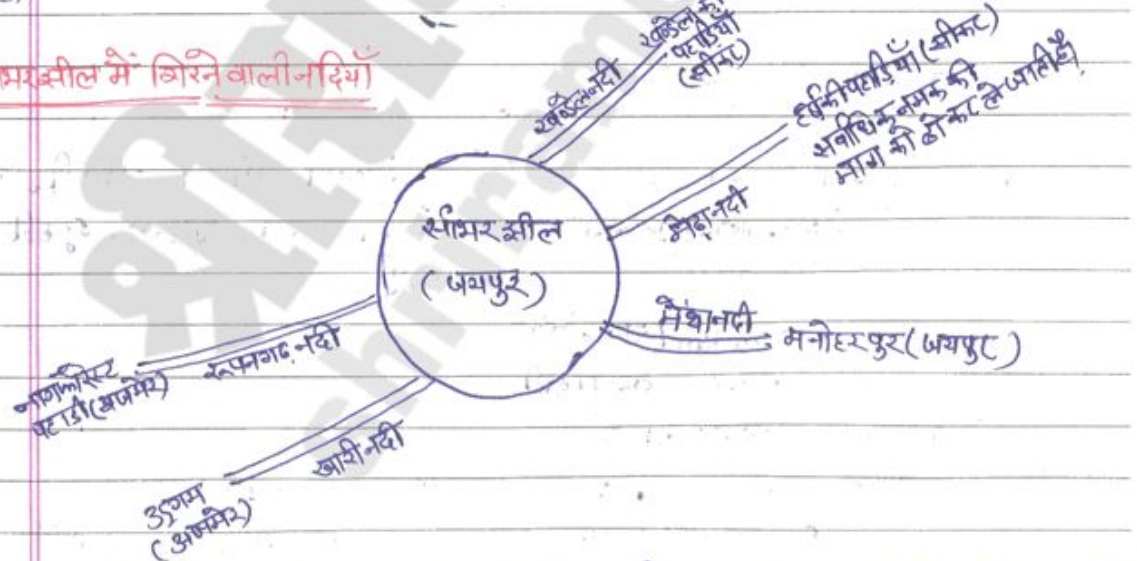

→ इस झील में आन्तरिक प्रवाह प्रणाली का सर्वाधिक विकसित रूप देखने को मिलता है।
→ सांभर झील में गिरने वाले प्रमुख नाले :- सर्पांक का नाला, तुरतई नदी, देवयानी का नाला, ह्योंद का नाला

(2) अरबसागर की तरफ जल ले जानेवाली नदियाँ

सूत्र :- सालू की मा सो जा पश्चिम मे
(साबरमती, लूनी, माही, सोम, जाखम, प. बनास)

(A) कच्छ का रन [अरब सागर, गुजरात] में बिलुप्त होने वाली नदियाँ :-

(i) लूनी एवं उसकी सहायक नदियाँ :- जोजड़ी, मीठड़ी, लीलड़ी, बाण्डी, बांडी, सागी, गुहिया, सूकड़ी, खारी, जवाई।

सूत्र :- "जो मिली बासागी सुखजाय"
जो सखा जब सू मिली

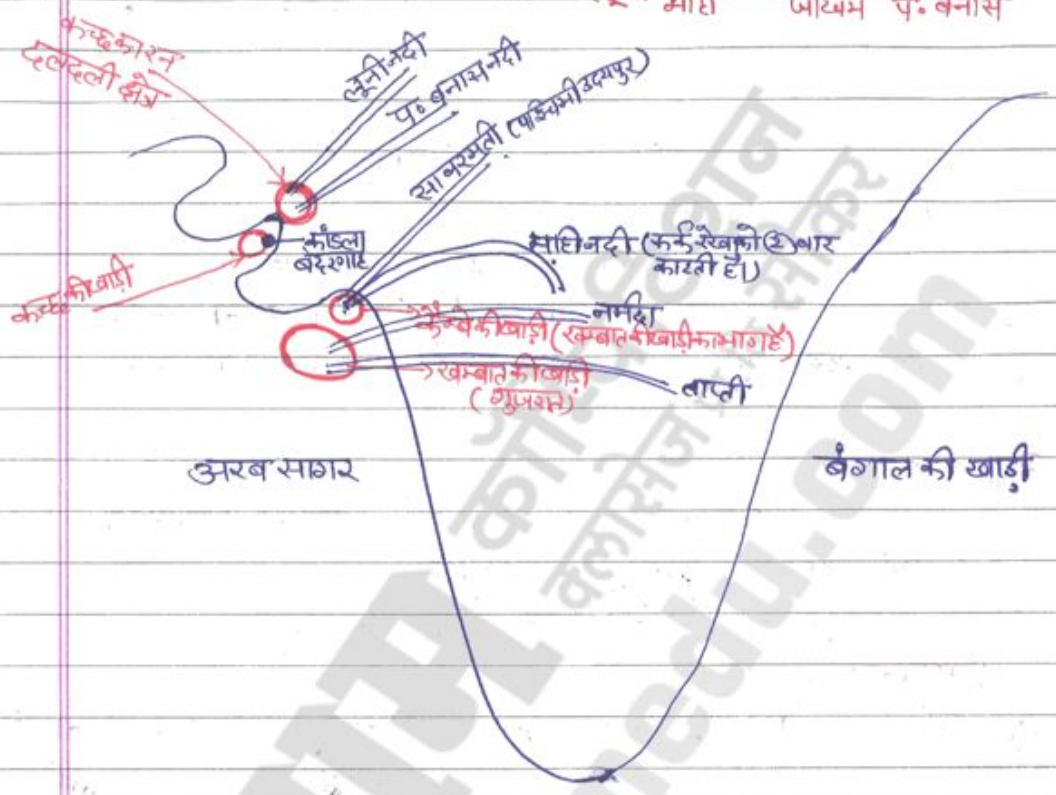

लम्बाई :- 320 km [राज. में]

अपवाह क्षेत्र :- 34,863 वर्ग कि. मी.

उपनाम :- मारवाड़ की गंगा

उद्गम :- नाग पहाड़, पुष्कर की पहाड़ियाँ (अजमेर)
उद्गम स्थल पर इसे सागरमती नदी कहा जाता है

→ यह उत्तरी-पश्चिम राज. की सबसे बड़ी नदी है

→ यह अधिक वर्षा के ~~क्षेत्र~~ से कम वर्षा वाले क्षेत्रों की ओर बहती है।

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल | REET L-I & L-II

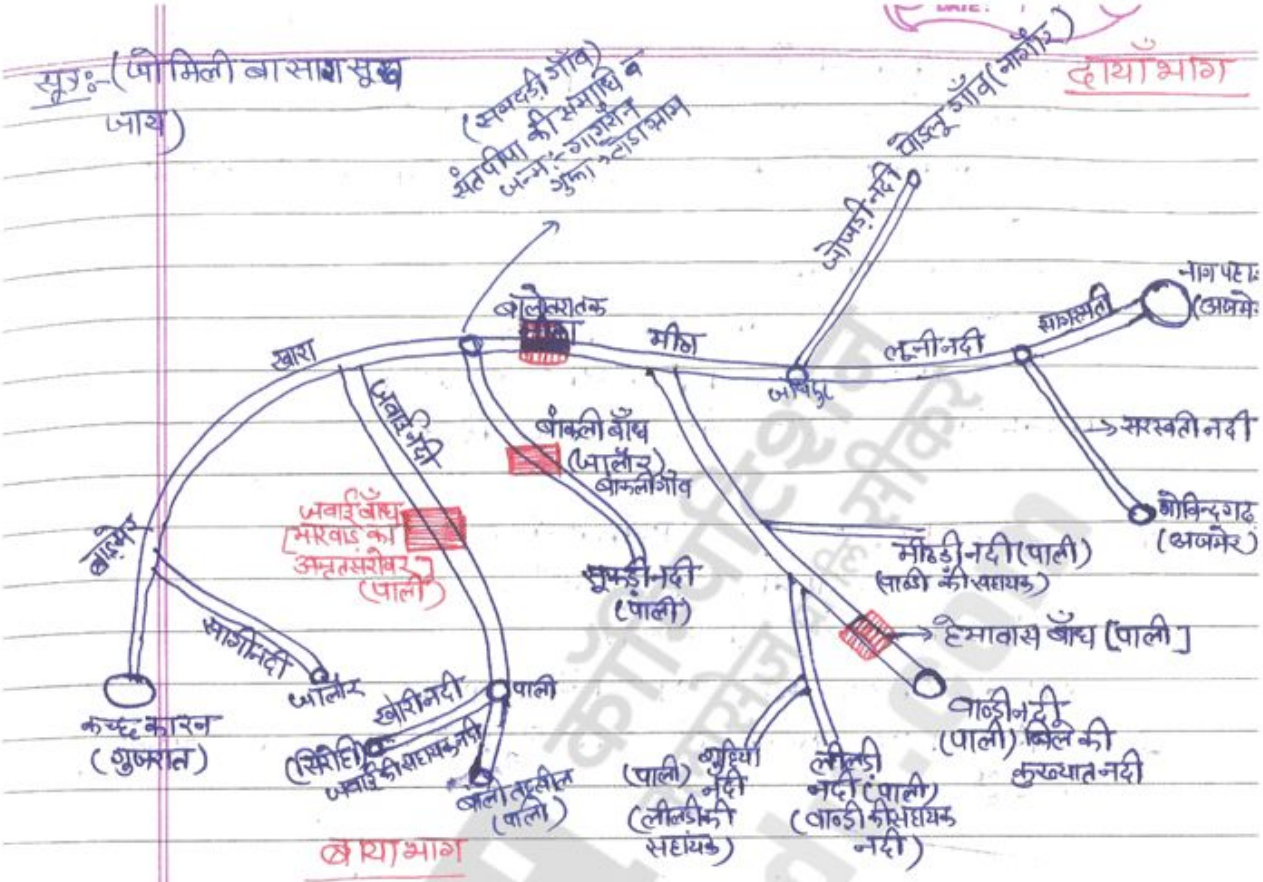

सूत्र:- (जोमिली बासासासुख जाय)

प्रवाह क्षेत्र :- अजमेर, नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर, जालौर से होते हुये अन्त में कच्छ का रन (गुजरात) में गिर जाती है

सहायक नदियाँ :-

(i) दाँयी ओर से मिलने वाली तथा अरावली से जिनका उद्गम नहीं होता है-

(1) जोजड़ी नदी :- पोइलू गाँव की पहाड़ियाँ (नागौर)
प्रवाह क्षेत्र :- नागौर, जोधपुर
अंत :- लूनी नदी (जोधपुर)

(2) बाँयी ओर से मिलने वाली सहायक नदीयाँ तथा जिनका उद्गम अरावली से होता है —

(1) बाड़ी नदी :- पाली, जोधपुर
प्रवाह क्षेत्र :-

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

अन्त → लूनी नदी जोधपुर
सहायक नदियाँ :- मीठड़ी, लीलड़ी, गुहिया आदि।
Note:- यह पाली जिले की कुख्यात नदी है। इस नदी पर हेमावास बाँध स्थित है।

(3) सुकड़ी नदी :- पाली
प्रवाह क्षेत्र :- पाली, जालौर, बाड़मेर
संगम :- लूनी नदी (समदड़ी गाँव, बाड़मेर)
→ जालोर में इस नदी पर बाँकली बाँध स्थित है।

(4) जवाई नदी :- उद्गम :- बाली तहसील (पाली)
प्रवाह क्षेत्र :- पाली, जालौर, बाड़मेर
संगम :- लूनी नदी बाड़मेर
सहायक नदी :- खिरवारी (सिरोही, पाली)
→ जवाई नदी पर जवाई बाँध बना है जिसे मारवाड़ का अमृतसरोवर कहते है।

(5) सागी नदी :- (जालौर, बाड़मेर)
→ यह लूनी नदी में अंतिम रूप से मिलने वाली नदी है।

Note:- लूनी नदी का प्रवाह क्षेत्र गौड़वाड़ प्रदेश कहलाता है। जबकि जालौर में इसका प्रवाह क्षेत्र :- नेड़ा कहलाता है।

[2] पश्चिमी बनास :-

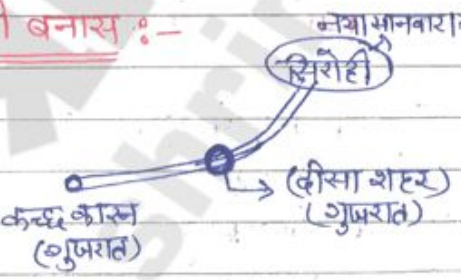

→ उद्गम :- नया सानवारा गाँव (सिरोही)
प्रवाह क्षेत्र :- सिरोही (राज०), गुजरात
संगम :- कच्छ का रन (गुजरात)
सहायक नदी :- सूकली (सीपू), कुकड़ी, धारवेल, गोहलन

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

राज० की माही, चम्बल व घग्घर नदी (3)-(3) राज्यों में बहती है
बनास, लूनी, चम्बल नदी (6)-(6) जिलों में बहती है

सूत्र :- सुकाराच्या।

Note :- गुजरात का दीसा शहर इस नदी के किनारे बसा हुआ है।

[8] खम्बात की खाड़ी अरब सागर मे गिरने वाली नदियॉं

(1) साबरमती नदी :- कुल लं० → 317 km
राज० में → 29 km

सूत्र (मेभावासे वे है।)

उद्गम :- कोटड़ा उदयपुर | दक्षिण अरावली
प्रवाह क्षेत्र :- उदयपुर (राज०), गुजरात
संगम :- खम्बात की खाड़ी अरबसागर

सहायक नदीयॉं :- मेश्वा, माजम, वाकल, सेई, वेतरक, हथमति

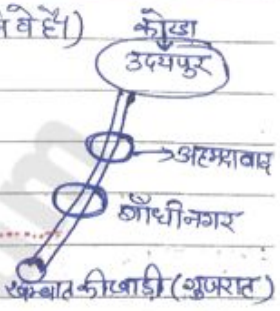

Note :- पश्चिमी बनास तथा साबरमती राज० की ऐसी (2) नदियॉं हैं जिनका उद्गम तो राज० से होता है परन्तु इनका प्रवाह क्षेत्र दूसरे राज्य (गुजरात) के अन्तर्गत आता है

[2] माहीनदी :- कुल लं० → 576 km
राज० में → 171 km

उपनाम :- बांगड़ की गंगा | कांठल की गंगा | दक्षिणी राज० की स्वर्णरेखा

→ यह दक्षिणी राज० की सबसे बड़ी नदी है।
उद्गम :- मेहदझील, धार जिला (mP)
विंध्याचल पर्वत
प्रवाह क्षेत्र :- m.P., बॉंसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर (राज०), गुजरात
संगम :- खम्बात की खाड़ी (गुजरात)
राज० में प्रवेश :- खांदू नामक स्थान (बांसवाड़ा)

सूत्र:(सोमीजाहैअन्याई)

माही परियोजना :- यह राज. तथा गुजरात की संयुक्त (45 : 55) परियोजना है, इस परियोजना के तहत कुल (3) बाँध बनाये गये है।

(1) माही बजाज सागर बाँध (बाँसवाड़ा) :- यह आदिवासियों की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय परियोजना है।

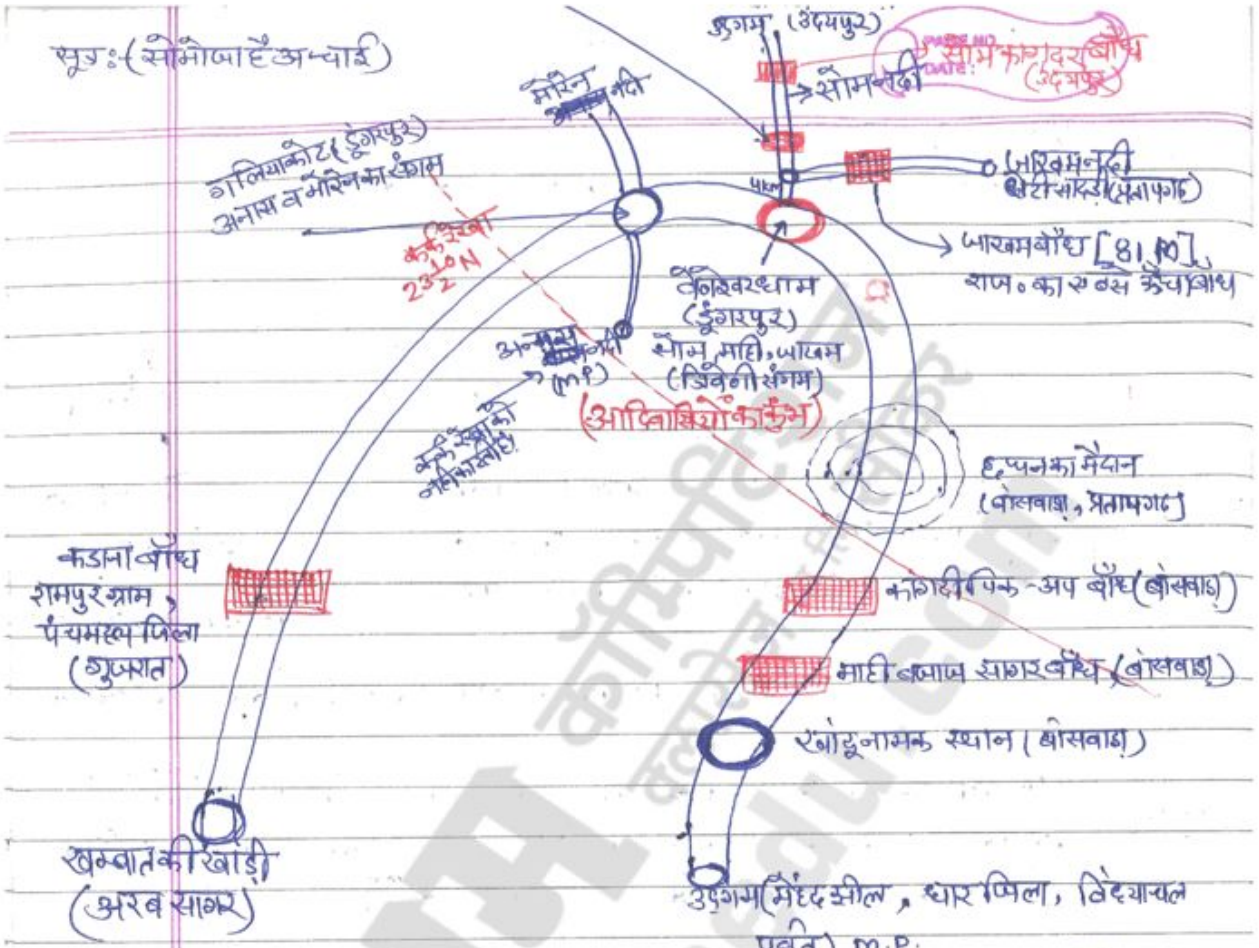

लाभान्वित जिले :- बाँसवाड़ा तथा डूंगरपुर की आसपुर, सीमलवाड़ा, सागवाड़ा तहसीलें।

(2) कागदी पिक-अप बाँध (बाँसवाड़ा) :- लाभान्वित जिला :- बाँसवाड़ा

(3) कडाना बाँध :- रामपुर ग्राम, पंचमहल जिला (गुजरात)

माही की सहायक नदियाँ :

चम्बल, अनास, माही, काली सिंध, नेवज, परवन, पार्वती, ...

① सोम नदी :- (उदयपुर)

उद्गम :- बिछामेड़ा की पहाड़ियाँ (उदयपुर)

प्रवाह क्षेत्र :- उदयपुर, डूंगरपुर [के मध्य सीमा]

संगम :- माही नदी, बेणेश्वरधाम (डूंगरपुर)

प्रमुख बाँध :- सोम कागदर (उदयपुर), सोम-कमला-अम्बा परियोजना (डूंगरपुर)

② जाखम नदी :- प्रतापगढ़

उद्गम :- छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़)

प्रवाह क्षेत्र :- प्रतापगढ़, उदयपुर के मध्य सीमा, डूंगरपुर

संगम :- सोम नदी (बेणेश्वर, डूंगरपुर)

जाखम बाँध | परियोजना :- 81 m [प्रतापगढ़ (अनूपपुरा गाँव)]

यह राज० का सबसे ऊँचा बाँध है।

लाभान्वित जिले :- उदयपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ [सिंचाई व जल]

Note: इस बाँध का निर्माण जनजाति उपयोजना (माड़ा) के तहत किया गया है।

बेणेश्वर धाम (डूंगरपुर) :- इस स्थान पर सोम-माही-जाखम तीनों नदियाँ त्रिवेणी संगम बनाती है, तथा इसे आदिवासियों का कुंभ कहते है।

अन्य सहायक नदियाँ :- अनास (MP), मोरेन (डूंगरपुर), इरू, चाप, इरू (बांसवाड़ा)

③ बंगाल की खाड़ी की तरफ जल ले जाने वाली नदियाँ

① चम्बल नदी :-

लम्बाई :- 965 km

राज० में :- 135 km

अपवाह क्षेत्र :- 19,500 वर्ग कि०मी०

उपनाम :- "राज० की कामधेनु" | चर्मण्वती नदी

Note:-

→ यह राज्य० की सबसे लम्बी, सर्वाधिक जल सतही वाली, सदावाहिनी नदी है।

→ यह एक गहरे गार्ज/खड्डे में होकर प्रवाहित होती है तथा इस नदी पर वाटर सफारी की सुविधा उपलब्ध है।

→ चम्बल नदी दक्षिणी-पूर्वी राज्य० में सर्वाधिक मृदा अपरदन/ अवनालिका अपरदन करती है।

उद्गम :- जानापाव की पहाड़ियाँ, महु तहसिल, इंदौर जिला, विंध्याचल पर्वत (MP)
[ऊँचाई :- 618 m]

राज्य० में प्रवेश :- चौरासीगढ़ (चित्तौड़गढ़)

प्रवाह क्षेत्र :- MP., चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर [राज्य०], उत्तरप्रदेश।

~~यमुना नदी~~ :-

संगम :- यमुना नदी में (मुरादगंज, इटावानगर U.P. में)

चम्बल परियोजना :- [1953-54]

→ यह राज्य० की प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना है।

→ यह राज्य० तथा मध्य प्रदेश की संयुक्त (50:50) परियोजना है

→ चम्बल नदी पर इस परियोजना के तहत (4) बाँध बनाये गये है—

(1) गाँधी सागर बाँध (मंदसौर (M.P.)) :- यह चम्बल नदी पर स्थित सबसे बड़ा बाँध है।

(2) राणा प्रताप सागर बाँध (रावतभाटा [चित्तौड़गढ़]) :- यह राज्य० का सबसे बड़ा बाँध है।

(3) जवाहर सागर बाँध / [पिक-अप बाँध] (कोटा, बूंदी) :-

(4) कोटा बैराज बाँध :- (कोटा)
ऐसा बांध जिसका उद्देश्य सिंचाई होता है
ऐसी नहर जिसके पानी का उपयोग नहीं किया जा सकता। फीडर कहलाती है।

9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

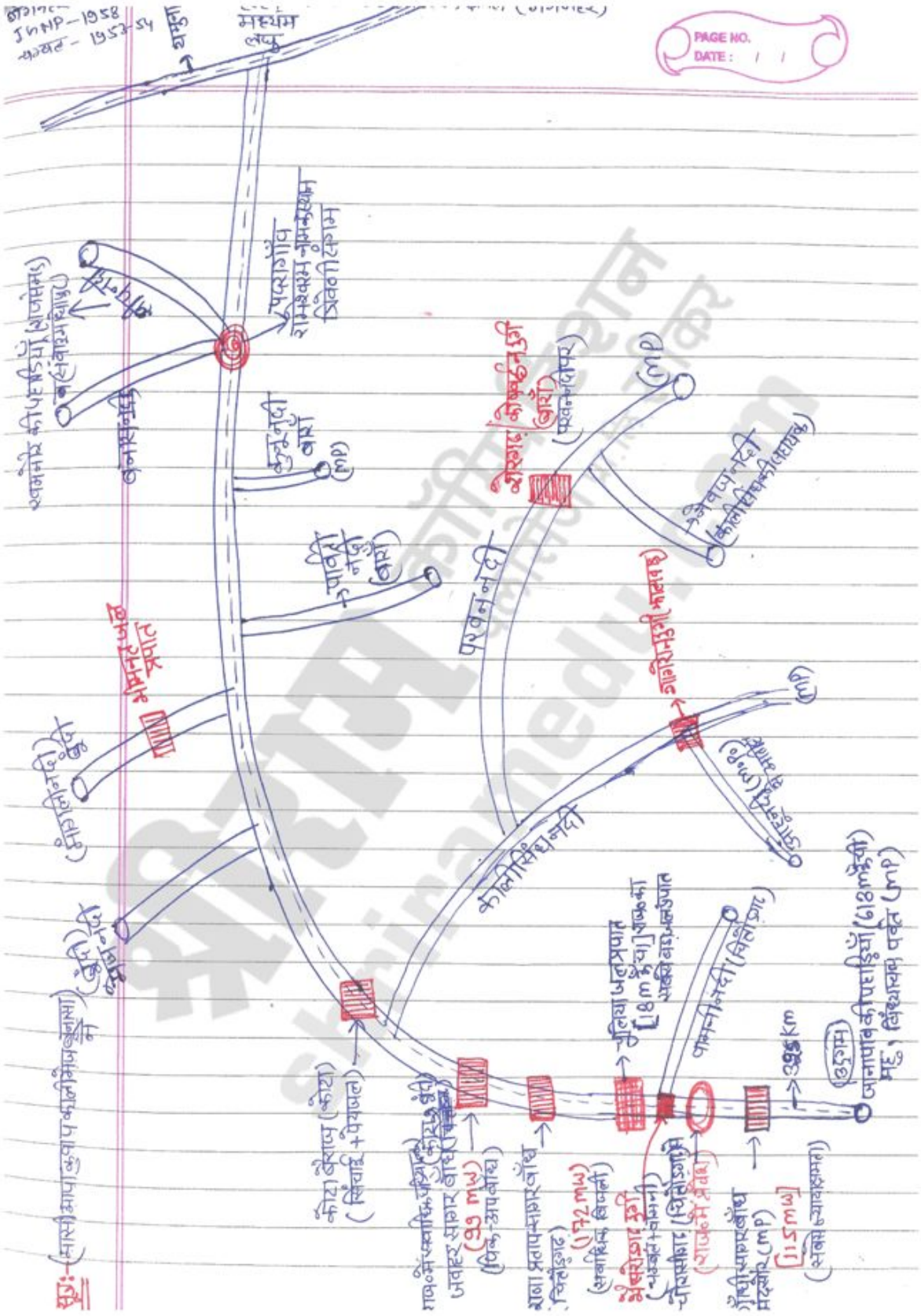

बनास नदी

लम्बाई :- 480 km
अपवाह तंत्र :- 64,800 वर्ग कि.मी.
उपनाम :- वन की आशा | चन्दन नदी | वशिष्ठि।

→ यह अपवाह तंत्र की दृष्टि से यह राज. की सबसे बड़ी नदी है।
→ पूर्णतः राज. में बहने वाली राज्य की सबसे लम्बी नदी है।
→ यह सर्वाधिक जल एकत्रित (संग्रहण) करने वाली नदी है।
→ इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में भूरी मिट्टी पायी जाती है।

उद्गम :- खमनौर की पहाड़ियाँ (राजसमंद)
प्रवाह क्षेत्र :- राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर।
अंत :- चम्बल नदी [रामेश्वरम स्थान (सवाईमाधोपुर)]

बीसलपुर बाँध :- टोडारायसिंह कस्बा (टोंक)

→ यह राज. की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना है। इस परियोजना से जयपुर (दूदू), किशनगढ़, नसीराबाद, ब्यावर, सरवाड़, केकड़ी, अजमेर, मालपुरा, देवली, टोंक शहरों को पेयजल की आपूर्ति करवायी जाती है।
→ तथा टोंक जिले में सिंचाई सुविधा उपलब्ध है।

Note:- तथ्य :-
राज. का सबसे बड़ा बाँध :- राणा प्रताप सागर बाँध (चित्तौड़गढ़)
राज. का " ऊँचा " :- जाखम बाँध (81 m) (प्रतापगढ़)
राज. की प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना :- चम्बल परियोजना (1953-1954)
राज. की प्रथम वृहत् सिंचाई परियोजना :- गंगनहर (गंगानगर) (1922-27)
राज. की मरु गंगा | उत्तरी प. राज. की जीवन-रेखा :- I.G.N.P. (31 मार्च 1958)
~~प्राथमिक विद्युत~~
सर्वाधिक जल विद्युत उत्पादन क्षमता वाला बाँध :- राणाप्रताप सागर बाँध (चित्तौड़गढ़) (172 mw)

→ राज० का सबसे ऊँचा जल प्रपात :- चुलिया जल प्रपात (18 m) राज०

बनास की सहायक नदियाँ :-

दायीं ओर से मिलने वाली सहायक नदियाँ :-

(1) मेनाल नदी :- भीलवाड़ा
संगम :- बीगोंद (मांडलगढ़) भीलवाड़ा
Note :- भीलवाड़ा में यह मेनाल जल प्रपात बनाती है।

(2) आयड़ नदी :- | बेड़च नदी
उद्गम :- गोगुंदा की पहाड़ियाँ, (उदयपुर)
प्रवाह क्षेत्र :- उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा
संगम :- बनास नदी, बीगोंद (भीलवाड़ा)

Note :- उदयसागर झील में गिरने के पश्चात आयड़ नदी को बेड़च नदी कहते है।

→ आयड़ नदी के किनारे उदयपुर में आहड़ सभ्यता स्थित है। जिसे स्थानीय भाषा में धूलकोट कहते है। प्राचीन नाम :- ताम्रनगरी | ताम्रवती कहते है।

गंभीरी नदी :- चित्तौड़गढ़
→ यह बेड़च नदी की सहायक नदी है गंभीरी नदी पर चित्तौड़गढ़ में घोसुण्डा बाँध स्थित है।

Note :- बेड़च तथा गंभीरी नदी के संगम के निकट चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित है।

बायीं ओर से मिलने वाली सहायक नदियाँ :-

(1) कोठारी नदी :- दिवेर की पहाड़ियाँ (राजसमंद)
(145 km)

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- **भूगोल**

REET L-I & L-II

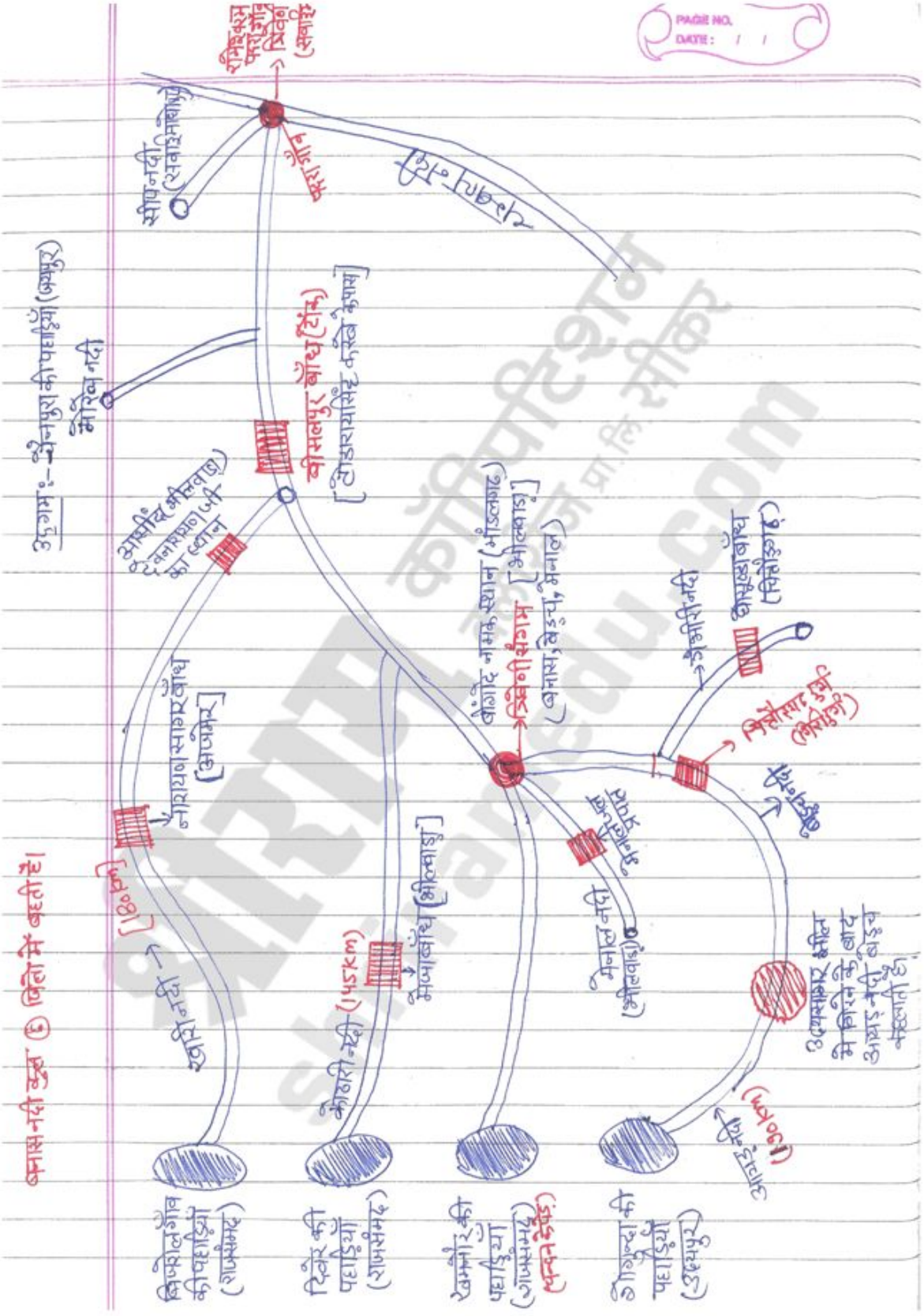

→ प्रवाह क्षेत्र :- राजसमंद, भीलवाड़ा
अंत/संगम :- बनास नदी (भीलवाड़ा)

Note:- कोठरी नदी पर भीलवाडा में मेज्या बाँध स्थित है।

② खारी नदी :- खारी नदी बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र है।
उद्गम :- बिजरोल गाँव की पहाड़ियाँ (राजसमंद)
प्रवाह क्षेत्र :- राजसमंद → भीलवाडा → अजमेर → टोंक
संगम :- बनास नदी टोंक (बीसलपुर बाँध से 4km पहले ही मिल जाती है)

Note:- खारी नदी पर अजमेर जिले में नारायण सागर बाँध स्थित है।

सीधे तौर पर यमुना नदी में गिरने वाली नदियाँ

① बाणगंगा नदी
② गंभीर नदी
③ चम्बल नदी

① बाणगंगा नदी :-
लम्बाई :- 380 km

उद्गम :- बैराठ की पहाड़ियाँ (जयपुर)
प्रवाह क्षेत्र :- जयपुर, दौसा, भरतपुर
संगम :- यमुना नदी (आगरा (U.P.))

Note:- बाणगंगा नदी को अर्जुन की गंगा भी कहते है।

② गंभीर नदी :-
लम्बाई → 110 km
उद्गम :- गंगापुर सिटी की पहाड़ियाँ (सवाईमाधोपुर | करौली)

प्रवाह क्षेत्र :- करौली → भरतपुर → धौलपुर
संगम :- यमुना नदी [आगरा (U.P.)]

Note:- ⓔ बाणगंगा तथा गंभीरी नदी के संगम पर भरतपुर में अजान बाँध स्थित है

③ पार्वती (धौलपुर)
यह गंभीर की सहायक नदी है

पांचना बाँध :- इस बाँध में ⑤ नदियों का पानी आता है
1. माची
2. अटा
3. भैंसावट
4. बरखेड़ा
5. भद्रावती

www.shriramedu.com

9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN

Classroom Coaching

NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

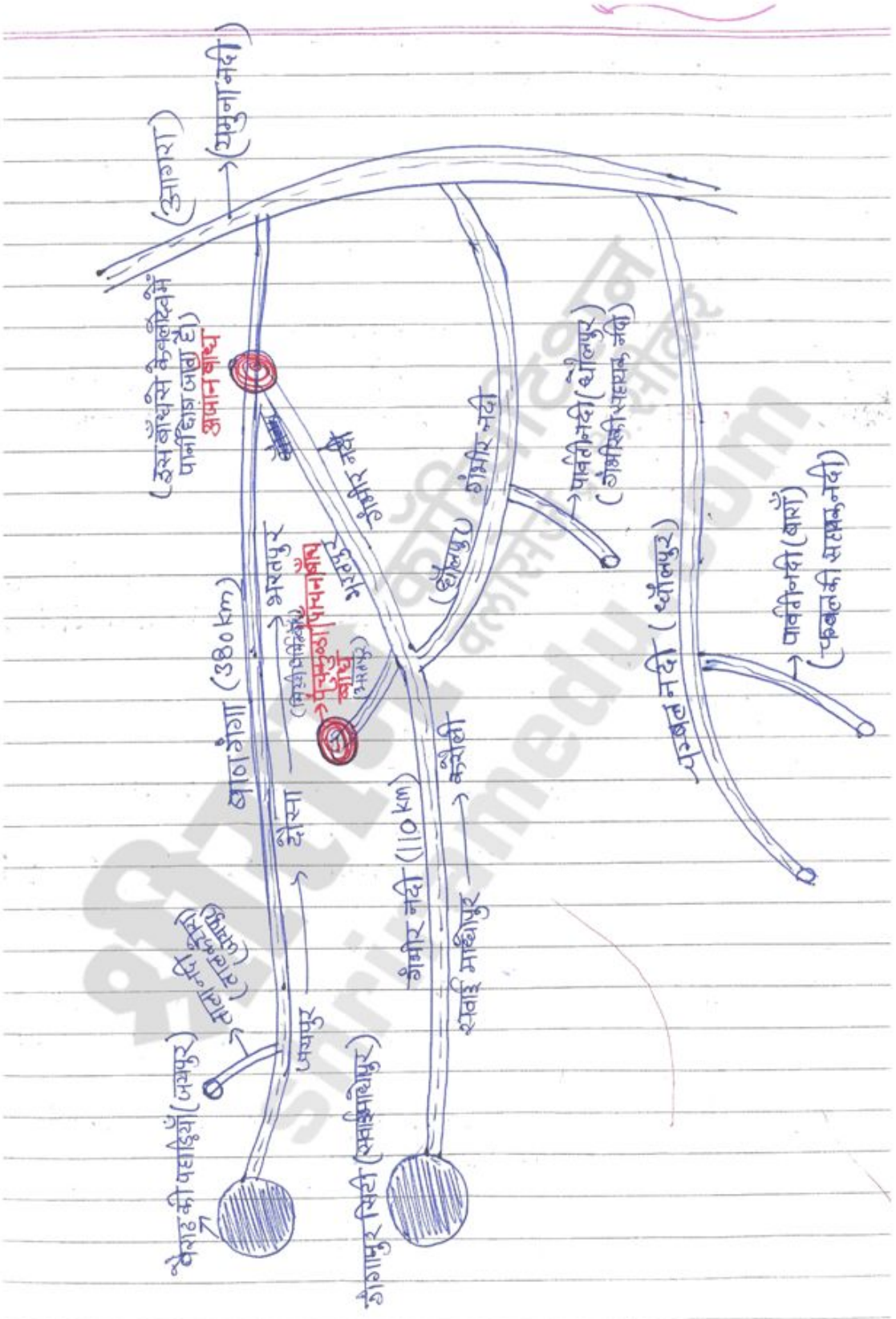

अनुभवी, चयनित एवं विख्यात विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा अध्यापन - श्रीराम कोचिंग, सीकर

→ भारत में बोयी जाने वाली फसलों को ऋतु के अनुसार (3) भागों में वर्गीकृत किया गया है—

[A] खरीफ [सावणु / स्यालु] की फसलें :– ये फसलें वर्षाकाल में / जून-जुलाई में बोयी जाती हैं तथा सितम्बर ऑक्टूबर में काट ली जाती है
जैसे:–
(1) खाद्यान्न फसलें :– धान / चावल, बाजरा, मक्का, ज्वार
(2) तिलहन फसलें :– मूंगफली, सोयाबीन, अरण्डी, तिल
(3) दलहन फसलें :– मोठ, मूंग, उड़द, चौंवला, अरहड़
(4) रेशेदार फसलें :– जूट / पटसन, कैना,
(5) अन्य फसलें :– गन्ना, ग्वार,

(अनाज / आनाज फसलें)

[B] रबी [उनालू] की फसलें :– ये फसलें शीतकाल में / अक्टूबर-नवम्बर में बोयी जाती है तथा ~~फरवरी~~ -मार्च, अप्रैल में काट ली जाती है.
जैसे:–
(1) खाद्यान्न फसलें :– गेहूँ, जौ
(2) तिलहन फसलें :– राई-सरसों, अलसी, तारामीरा
(3) दलहन फसलें :– चना, मटर, मसूर
(4) गरम मसाले :– मैंथी, धनियाँ, जीरा, घोड़ा जीरा (इसबगोल) सौंफ, अजवाईन
ऑक्सीडेंटाल

[C] जायद की फसलें :– ये फसलें ग्रीष्मकाल में अप्रैल-मई में बोयी जाती है तथा जून-जुलाई में काट ली जाती है
→ जैसे:– ककड़ी, खरबूजा, तरबूज, टिंडा, भिंडी, करैला तथा हरा चारा [बरसीम, रिजका]

फसलों का वर्गीकरण

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

★ **पेय फसलें :-** कोको, कहवा, चाय, तम्बाकू, अफीम

★ **दलहन फसलें :-** चना, मटर, मसूर, मोठ, मूंग, उड़द, अरहर, चँवला

★ **अनाज फसलें :-** चावल, गेहूँ, बाजरा, मक्का, ज्वार, जौ

★ **तिलहन फसलें :-** राई-सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, अलसी, अरण्डी, तारामीरा, तिल

★ **रेशेदार फसलें :-** कपास [हरा सोना], जूट | पटसन, ढैंचा, नारियल

वाणिज्यिक | व्यापारिक फसलें

→ इस प्रकार की फसलों को बोने का उद्देश्य "आर्थिक आय" है अर्थात पैसा कमाना है। अतः इन्हें नकदी फसलें भी कहते हैं।

नगदी फसलें :- गन्ना, चुकंदर, कपास, जूट, तिलहन, रबड़, सोयाबीन, नारियल, चाय, कॉफी आदि।

खेतीयाँ :-

विश्व के प्रमुख कृषि प्रदेश

(1) **चलवासी पशुचारण कृषि :-** पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर चराना ही इस प्रदेश का मुख्य व्यवसाय है। यहाँ आर्थिक तंत्र की धुरी "पशु" होते हैं। इस कृषि से जुड़े हुये प्रमुख कबीलों में गद्दी [J&K], खिरगीज [मध्य एशिया], रैबारी [राज.] जनजातियाँ हैं।

Note :- मध्य एशिया में खिरगीज जनजाति रेन्डियर पशु, लद्दाख क्षेत्र में गद्दी जनजाति याँक पशु, बकरी तथा मरुस्थलीय क्षेत्रों में रैबारी जनजाति ऊँट, भेड़, बकरी आदि पशु पालते हैं।

(2) व्यापारिक पशुपालन :- इस प्रकार की कृषि में बड़े-बड़े चारागाहों में बृहद् स्तर पर पशुपालन किया जाता है जैसे:- ऑस्ट्रेलिया के डाउन्स घास के मैदानों में भेड़-पालन, दक्षिणी अफ्रीका के वेल्ड घास के मैदानों में मोहेर बकरी पालन, अर्जेन्टीना के पम्पास घास के मैदानों में गौवंश पालन आदि किया जाता है।
(दुनिया का 35% माँस निर्यात)

(3) गहन निर्वाह कृषि :- इस प्रकार की कृषि दक्षिण एशिया (सार्क) तथा दक्षिण पूर्वी एशिया (आसियान) में अर्थात् सार्क तथा आसियान देशों में की जाती है। इन क्षेत्रों में चावल, गेहूँ, बाजरा, दलहन, तिलहन आदि की खेती होती है। इस कृषि में जोत का आकार बहुत छोटा होता है तथा खेत बहुत छोटे-छोटे एवं बिखरे हुये होते हैं इन क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक होता है।
उद्देश्य:- कम क्षेत्र पर अधिक से अधिक पैदावार उगाना)
प्रमुख क्षेत्र:-
(बांग्लादेश, चीन, भारत, इंडोनेशिया, कम्बोडिया)

(4) स्थानांतरण कृषि :- इसमें वनों को साफ करके उस भूमि पर कृषि का कार्य किया जाता है। इस कृषि को बुश-फैलो कृषि / स्लेश एण्ड बर्न कृषि / काटना एवं जलाना कृषि कहा जाता है। भारत में इसे झूमिंग / झूम कृषि कहा जाता है।

विश्व के प्रमुख स्थानांतरण कृषि क्षेत्र:-

कृषि		देश
रे	→	वियतनाम, लाओस (ऑस्ट्रिया)
चेना	→	श्रीलंका
लदांग	→	इंडोनेशिया
तुंग्या	→	म्यांमार
तमराई	→	थाईलैंड

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

रोका → ब्राजील
टावी → मालागासी (अफ्रीका)

भारत में :-

झूमिंग → असम, मेघालय
पोडू → आन्ध्रप्रदेश (सीमांध्र)
वालरा → राज० [पर्वतीय क्षेत्रों में → चिमाता]
[मैदानी " " → दजिया]

प्रमुख फसलें :- केला, मक्का, ज्वार, बाजरा

(5) उष्ण कटिबंधीय बागाती (बागवानी) कृषि :- यह कृषि फार्मों पर होती है इसमें श्रम तथा पूंजी का अधिक प्रयोग होता है।
प्रमुख क्षेत्र :- दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया, लैटिन (दक्षिण) अमेरिका, अफ्रीका

(6) भूमध्यसागरीय कृषि :- यहाँ की कृषि में अत्यधिक विविधता पायी जाती है यहाँ गहन तथा व्यापारिक और निर्वाहक सभी प्रकार की खेती की जाती है। → [शीतकाल में वर्षा होती]
प्रमुख क्षेत्र :-
कैलीफोर्निया [U.S.A का प्रांत], मध्य चिली (द० अमेरिका) द० प० द० अफ्रीका, भूमध्य सागर के आस-पास, द० प० ऑस्ट्रेलिया)
इन क्षेत्रों में प्रमुख रूप से जैतून, अंजीर, अंगूर तथा रसीले फलों आदि की व्यापारिक खेती होती है।
Note:- भूमध्य सागरीय कृषि को फलोद्यान कृषि के नाम से भी जाना जाता है।

(7) व्यापारिक अन्नउत्पादन कृषि :- इस प्रकार की कृषि प्रेयरी (उ० अमे०) स्टेपी (यूरोप), डाउन्स (ऑस्ट्रेलिया), पम्पास (अर्जेन्टीना) जैसे घास के मैदानों में की जाती है।

गन्ने से → ब्राजील में] → चीनी बनायी
चुकंदर से → चीन में] जाती है।

→ इस क्षेत्र की प्रमुख फसल गेहूँ है तथा इन क्षेत्रों को विश्व के अन्न के भण्डार के नाम से जाना जाता है

→ इस प्रकार की कृषि में अत्यधिक बड़े फार्म, मशीनों व कीटनाशकों का प्रयोग होता है

→ इन क्षेत्रों में उपजाऊ काले रंग की चरनोजम मिट्टी पायी जाती है जिसमें गेहूँ की खेती की जाती है

(8) मिश्रित कृषि :- यहाँ फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाता है

→ U.S.A. में प्रमुख रूप से मक्का की खेती होती है तथा इस क्षेत्र में सुअरपालन किया जाता है

→ यूरोप में मक्का, आलू, चुकंदर की खेती तथा साथ-साथ पशुपालन किया जाता है (चीनी बनाने में)

(9) दुग्ध पशुपालन कृषि :- इस प्रकार की कृषि में कृषि के साथ-साथ दुधारू पशुओं को पाला जाता है तथा इसमें श्रम तथा पूँजी का अधिक व्यय (खर्च) होता है

प्रमुख क्षेत्र :- रूस, जर्मनी, U.S.A., द. पूर्वी ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, हॉलैण्ड

Note:- हॉलैण्ड डेयरी उद्योग के रूप में विश्व प्रसिद्ध है तथा न्यूजीलैण्ड विश्व का सबसे बड़ा मक्खन निर्यातक देश है।

→ भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है

(10) विशिष्ट बागवानी कृषि :- इस प्रकार की कृषि में वृहत स्तर पर फलों एवं फूलों की खेती की जाती है। अर्थात् बाग-बगीचों की खेती की जाती है

www.shriramedu.com

✆ 9414015200

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

An ideal institute for Competitive Exams

हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777

HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES

Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

गन्ने से → ब्राजील में] → चीनी बनायी जाती है
चुकंदर से → चीन में]

→ इस क्षेत्र की प्रमुख फसल गेहूँ है तथा इन क्षेत्रों को विश्व के अन्न के भण्डार के नाम से जाना जाता है

→ इस प्रकार की कृषि में अत्यधिक बड़े फार्म, मशीनों व कीटनाशकों का प्रयोग होता है

→ इन क्षेत्रों में उपजाऊ काले रंग की चरनोजम मिट्टी पायी जाती है जिसमें गेहूँ की खेती की जाती है

(8) मिश्रित कृषि :- यहाँ फसल उत्पादन के साथ-2 पशुपालन भी किया जाता है

→ U.S.A. में प्रमुख रूप से मक्का की खेती होती है तथा इस क्षेत्र में सुअरपालन किया जाता है

→ यूरोप में मक्का, आलू, चुकंदर (चीनी बनाने में) की खेती तथा साथ-2 पशुपालन किया जाता है

(9) दुग्ध पशुपालन कृषि :- इस प्रकार की कृषि में कृषि के साथ-2 दुधारू पशुओं को पाला जाता है तथा इसमें श्रम तथा पूँजी का अधिक व्यय (खर्च) होता है

प्रमुख क्षेत्र :- रूस, जर्मनी, U.S.A., द. पूर्वी ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, हॉलैण्ड

Note:- हॉलैण्ड डेयरी उद्योग के रूप में विश्व प्रसिद्ध है तथा न्यूजीलैण्ड विश्व का सबसे बड़ा मक्खन निर्यातक देश है

→ भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है

(10) विशिष्ट बागवानी कृषि :- इस प्रकार की कृषि में वृहत स्तर पर फलों एवं फूलों की खेती की जाती है अर्थात् बाग-बगीचों की खेती की जाती है

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

कृषि के विशेष प्रकार

(1) विटीकल्चर :- अंगूरों की व्यापारिक स्तर पर खेती।

(2) सेरी कल्चर :- वृहत् स्तर पर रेशम उत्पादन करना।

(3) फ्लोरी कल्चर :- फूलों की खेती।

(4) पिसी कल्चर :- व्यवसायिक स्तर पर मत्स्य उत्पादन।

(5) ऐपी कल्चर :- मधुमक्खी पालन / शहद उत्पादन।

(6) सिल्वी कल्चर :- वनों की खेती ["संवर्धन एवं संरक्षण]

~~(7) संवर्धन एवं संरक्षण~~

(7) मेरी कल्चर :- समुद्री जीवों के उत्पादन से संबंधित कृषि

(8) मोनो कल्चर :- किसी एक फसल का उत्पादन

(9) ऑलेरी कल्चर :- जमीन पर फैलकर उत्पादन देने वाली सब्जियाँ [टिंडा, ककड़ी, खीरा, काचरा, टमाटर]

(10) ऑरबेरी कल्चर :- वृक्ष एवं झाड़ियों की खेती [सेब, संतरा, बेर, अंगूर]

(11) ट्रक फार्मिंग कृषि :- बड़े बाजारों के लिए फलों एवं सब्जियों का उत्पादन करना तथा इन उत्पादों के परिवहन में मुख्यत: ट्रकों का प्रयोग होने के कारण इसे ट्रक फार्मिंग कृषि कहते हैं

प्रमुख - क्रांतियाँ

(1) हरित क्रांति :-

उद्देश्य :- कम समय, उन्नत बीज एवं खाद, कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग करके अधिक से अधिक पैदावार प्राप्त करना।

→ विश्व में सर्वप्रथम हरित क्रांति का प्रारंभ :- 1960 के दशक में U.S.A. में हुआ था।

→ नॉर्मन - ई - बोरलॉग को विश्व में हरित क्रांति का जनक / पिता कहा जाता है

→ कृषि के क्षेत्र में नॉबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले ये ~~भारत~~ विश्व के प्रथम व्यक्ति थे।

→ भारत में हरित क्रांति के जनक :- M.S. स्वामीनाथन

→ भारत में सर्वप्रथम 1961-62 "सघन कृषि जिला कार्यक्रम" चलाया गया [UP, HR, Punjab]

→ 1966-67 में [1960-70 के दशक में] भारत में हरित-क्रांति की शुरूआत हुई थी।

→ हरित क्रांति का सर्वाधिक प्रभाव :- ① गेहूँ
② चावल
③ दलहन

② II हरित क्रांति
उद्देश्य :- खाद्यान्नों के उत्पादन में आत्म-निर्भर तथा दालों के उत्पादन में आत्म-निर्भर बनाना।

खाद्यान्न / अनाज फसलें

[1] धान / चावल :- भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है। भारत में सर्वाधिक क्षेत्रफल पर बोयी जाने वाली, भारत में सर्वाधिक उत्पादित होने वाली फसल है।

सर्वाधिक उत्पादन :- विश्व → चीन I
भारत II
बांग्लादेश III
थाईलैंड IV

Note :- थाईलैंड विश्व का सबसे बड़ा चावल निर्यातक देश है

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

भारत → प. बंगाल I
TN II

राज. → हनुमानगढ़ I, गंगानगर II

→ अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान केन्द्र :- मनीला (फिलीपीन्स)
→ राष्ट्रीय चावल अनुसंधान केन्द्र :- कटक (ओड़िशा)

→ भारत में धान का कटोरा :- छत्तीसगढ़
→ द. भारत में धान का कटोरा :- कावेरी नदी डेल्टा

→ धान के खेतों के आसपास मिथेन (CH_4) गैस पायी जाती है।

→ चावल की किस्में :- माही धवल, माही कंचन
माही धवल, माही कंचन → मस्का
↓
चम्बल, माही, सुगंधा, कावेरी, मंगला, बासमती

[2] गेहूँ :- भारत की दूसरी खाद्यान्न फसल
भारत में सर्वाधिक सिंचित फसल
उत्तर भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल → गेहूँ
दक्षिण भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल → चावल

→ राज. की प्रमुख खाद्यान्न फसल → गेहूँ
सर्वाधिक उत्पादन :- विश्व (i) चीन (ii) भारत
भारत → (i) U.P. (ii) पंजाब (iii) राज.
राज. → (i) गंगानगर (ii) हनुमानगढ़

Note :- शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान (प्रेयरी, स्टेपी, पम्पास) विश्व में अन्न का भण्डार कहलाते है।

→ यूक्रेन देश को विश्व की रोटी की डलिया/टोकरी कहते है

जहाँ सफलता के सपने संस्कारों के साथ सच होते हैं ... - श्रीराम कोचिंग, सीकर

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

→ U.P., पंजाब, MR गेहूँ की पेटी के रूप में विख्यात है।
→ गंगानगर को 'अन्न का भण्डार' कहते हैं

→ केन्द्रीय गेहूँ अनुसंधान केन्द्र :- पूसा (बिहार)
→ गेहूँ

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
shriramedu.com

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

(1) राई-सरसों :- पीला सोना
सर्वाधिक उत्पादन :- विश्व → भारत
भारत → राज॰ I, गुजरात II
राज॰ → गंगानगर I
भरतपुर II

Note:- राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र :- सेवर (भरतपुर)
स्थापना वर्ष :- 20 अग॰ 1993

(2) मूंगफली :- "गरीब का काजू" कहते हैं।
सर्वाधिक उत्पादन :- विश्व → चीन
भारत → गुजरात
राज॰ → बीकानेर I
जयपुर II

Note:- गुजरात के राजकोट शहर में एशिया की सबसे बड़ी मूंगफली की मण्डी है
लूणकरणसर (बीकानेर) में राज॰ की सबसे बड़ी मूंगफली की मण्डी है। इसलिए "लूणकरणसर" को "राज॰ का राजकोट" कहते हैं

मूंगफली की किस्में :- "कुफरी"

(3) सोयाबीन :- इसके बीजों में सर्वाधिक 42% प्रोटीन होता है।
सर्वाधिक उत्पादन :- विश्व → U.S.A.
भारत → मध्यप्रदेश
राज॰ → बारॉं I, झालावाड़ II

Note:- कोटा, बारॉं, झालावाड़ को "सोया" जिले के नाम से जाना जाता है।

(4) अरण्डी :- अरण्डी के बीजों में सर्वाधिक 45% तेल होता है
सर्वाधिक उत्पादन :- राज॰ → जालौर I
सिरोही II

(5) तिल :- पाली, बाराँ
(6) अलसी :- नागौर, बाराँ
(7) तारामीरा :- नागौर, जालौर
Note:- गोडावन पक्षी का मुख्य भोज्य पदार्थ है।

(8) सूरजमुखी :- भारत → कर्नाटक
राज. → नागौर, जालौर

Note:- कुल तिलहनों का सर्वाधिक उत्पादन :- विश्व → भारत
भारत → गुजरात
राज. → गंगानगर

दलहन फसलें

रबी की फसलें:

(1) चना :- "दालों का राजा"
सर्वाधिक उत्पादन :- चुरू
जयपुर
Note:- गोलूवाला (हनुमानगढ़) में राज. की सबसे बड़ी चने की मण्डी है।
(2) मटर :- नागौर, बूंदी
(3) मसूर :- बूंदी, भीलवाड़ा

खरीफ की फसलें:

(4) मोठ :- बाड़मेर, जयपुर (पहले जोधपुर)
(5) मूंग :- नागौर, अलवर
(6) अरहर :- उदयपुर, बाँसवाड़ा
(7) चँवला :- सीकर, झुन्झुनू
(8) तुँअर :- अलवर, उदयपुर
(9) उड़द :- भीलवाड़ा, बूंदी

Note:- दालें प्रोटीन का स्रोत है। भारत विश्व का सबसे बड़ा दलहन उत्पादक, उपभोक्ता, आयातक देश है

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर
विषय :- भूगोल
REET L-I & L-II

सर्वाधिक उत्पादन कुल दलहनों का :- विश्व → भारत
भारत → M.P.
राज. → नागौर

अन्य कृषि

(i) गन्ना :- विश्व → ब्राजील, भारत
भारत → U.P., महाराष्ट्र
राज. → गंगानगर, बूंदी

Note:- क्यूबा देश को "चीनी का कटोरा" कहते हैं
केन्द्रीय गन्ना अनुसंधान केन्द्र :- कोयम्बटूर (TN)

गर्म मसाले

(i) जीरा :- भारत → राज.
राज. → बाड़मेर, जालौर

(2) घोड़ा जीरा :- इसबगोल (सफेद रंग का)
राज. → नागौर, जालौर

(3) मैथी :- बीकानेर, सीकर
(4) पान मैथी / हरी मैथी :- नागौर (खुशबूदार मैथी एवं स्वादिष्ट पान मैथी के लिए नागौर जिले का ताउसर गाँव प्रसिद्ध है)

(5) धनिया :- बाराँ, झालावाड़
Note:- रामगंज मण्डी (कोटा) में सबसे बड़ी धनिये की मण्डी है।

(6) मिर्च :- सवाईमाधोपुर, टोंक (पहले (जोधपुर में)
Note:- मथानिया (जोधपुर) में सबसे बड़ी मिर्च की मण्डी है

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

आलू अनुसंधान केन्द्र :- शिमला

PAGE NO.
DATE : / /

→ देश की पहली सौर विद्युत परियोजना :- मथानिया (जोधपुर)

(7) अदरक :- उदयपुर , गंगानगर
(8) हल्दी :- बूंदी, उदयपुर
(9) लहसुन :- कोटा, चित्तौड़ [लहसुन मण्डी → छीपाबड़ौद (बाराँ)]
(रबी) (10) सौंफ :- नागौर, दौसा

Note :- कुल गर्म मसालों का सर्वाधिक उत्पादन :- बाराँ, कोटा

मेंहन्दी [सोजत (पाली)]

(i) सुर्खलाल मेंहदी :- गिलूण्ड (राजसमंद)
(2) गुलाब :- पुष्कर (अजमेर)
चैती | दमिश्क गुलाब → खमनौर (राजसमंद)

→ राज० को प्रमुख रूप से

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN
Classroom Coaching
NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

→ राज० देश का 22% खनिज उत्पादित करता है।

→ राज० में कुल 64 प्रकार के खनिज निकलते हैं, जिनमें से बड़े/प्रधान खनिज 23 हैं तथा शेष 41 छोटे खनिज निकलते हैं।

→ खनिजों की दृष्टि से राज० देश का समृद्ध प्रदेश है।

→ राज० को देश का "खनिजों का अजायबघर" कहते हैं।

→ खनिजों के उत्पादन की दृष्टि से राज० का देश में (5)वाँ तथा भण्डारण की दृष्टि से झारखण्ड के बाद (2)रा स्थान है।

→ जास्पर, वॉले स्टोनाइट, गार्नेट, खनिजों के उत्पादन में राज० का देश में एकाधिकार प्राप्त है।

→ राज० में पाये जाने वाले खनिजों को (3) वर्गों में बांटा जा सकता है —

(1) धात्विक खनिज
(2) अधात्विक खनिज
(3) ईंधन खनिज

धात्विक खनिज

→ यह विद्युत के सुचालक होते हैं। इन्हें रासायनिक क्रिया द्वारा मूल अयस्कों से अलग किया जा सकता है।

→ यह कठोर एवं तन्य होते हैं।

→ इनको पीटने पर इनका विस्तार होता है, टूटता नहीं है।

जैसे:-

(A) लौह धात्विक खनिज :- लोहा, मैंगनीज, निकिल (Nickel), मोलिब्डेनम (Molybdenum)

(B) अलौह धात्विक खनिज :- कॉपर (तॉबा), सीसा, जस्ता, चाँदी, सोना, एल्युमिनियम, टंगस्टन।

(A) लौह धात्विक खनिज

(1) **लौह अयस्क :-** इसके (4) अयस्क होते है –

उच्च कोटि के
- (1) चुम्बकीय लोहा | मैग्नेटाइट → 72% [लौहांश]
- (2) हेमेटाइट → 65-70% "

निम्न कोटि के
- (3) लिमोनाइट → 50-55% "
- (4) सिडेराइट → 40-45% "

→ भारत | राज. में सर्वाधिक हेमेटाइट प्रकार का लोहा निकलता है
→ उद्योगों की धुरी | रीढ → लौह अयस्क उद्योग
→ उत्पादक क्षेत्र :-
- (1) मोरीजा - बानोला क्षेत्र (जयपुर) सर्वाधिक
- (2) नीमला - राइसेला
- (3) भूर - इण्डेर, नाथरा की पाल - उदयपुर
- (4) डाबला सिंघाना - झुन्झुनू
- (5) नीम का थाना - सीकर
- (6) अरहर

~~उत्पादक क्षेत्र :-~~

Imp. (2) **मैंगनीज :-** इसका उपयोग लौह इस्पात उद्योग में किया जाता है

उत्पादक क्षेत्र :- विश्व → चीन
भारत → ओडिसा
राज. → बांसवाड़ा

→ राज. में उत्पादक क्षेत्र :-
- (1) लीलवानी, कालाखूंटा, सिवोनिया, नरड़िया - बांसवाड़ा (सर्वाधिक)

अन्य जिले :- उदयपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

अलौह धात्विक खनिज

(1) कॉपर (ताँबा) :-

→ मानव द्वारा खोजी गयी प्रथम धातु

→ यह विद्युत का सुचालक होता है तथा इसका उपयोग इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में किया जाता है।

उत्पादक क्षेत्र :-
(1) खेतड़ी - सिंघाना → झुंझुनू (सर्वाधिक)
(2) खो - दरीबा → अलवर
(3) अंजनी सलूम्बर → उदयपुर
(4) अकोला क्षेत्र → चित्तौड़गढ़

→ कॉपर के उत्पादन में MP के बाद राज्य का दूसरा स्थान है

(2) सीसा - जस्ता :- (टू - इन - वन / जुड़वा खनिज)

→ देश का 99% जस्ता तथा 77% सीसा राज्य से निकलता है।

उत्पादक क्षेत्र :-
(1) रामपुरा आगूचा → भीलवाड़ा (सर्वाधिक)
[एशिया की सबसे बड़ी खान]
(2) चौथ का बरवाड़ा → सवाई माधोपुर (Imp)
(3) राजपुरा - दरीबा क्षेत्र → राजसमंद
(4) देबारी → उदयपुर
जावर

Note: राज्य में जस्ता ② स्थानों पर गलाया जाता है या जस्ता गलाने के ② प्लांट है।

(1) हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड → ① चंदेरिया (चित्तौड़गढ़)
② देबारी (उदयपुर)

(3) चाँदी :- यह विद्युत का सबसे अच्छा सुचालक है।

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज shriramedu.com

→ इसका प्रयोग आभूषण बनाने में किया जाता है
→ देश की 90% चाँदी राज० से उत्पादित होती है
→ राज० का चाँदी में प्रथम स्थान है

उत्पादक क्षेत्र :-
(i) जावर (उदयपुर) → सर्वाधिक
(2) रामपुरा आंगुचा → (भीलवाड़ा)

(4) सोना :- भारत विश्व का सबसे बड़ा सोना आयातक, उपभोक्ता देश है

उत्पादक क्षेत्र :- (i) आनंद -भुकिया (बांसवाड़ा)
(ii) लीलवाणी (बांसवाड़ा) सर्वाधिक
अन्य जिले :- दौसा

(5) टंगस्टन :- इसका उपयोग विद्युत बल्ब का फिलामेन्ट बनाने में किया जाता है।

उत्पादक क्षेत्र :- डेगाना - भाकरी (नागौर) → [देश की सबसे बड़ी टंगस्टन की खान]
अन्य जिले :- पाली, सिरोही

अधात्विक खनिज

→ ये विद्युत के कुचालक होते हैं।
→ इन्हें मूल अयस्कों से रसायनिक क्रिया द्वारा अलग नहीं किया जा सकता है।
→ ये मुलायम होते है। तथा इनको पीटने पर ये टूट जाते हैं।

(A) बहुमूल्य पत्थर :- आभूषणों के प्रयोग में प्रयुक्त

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

(1) तामड़ा/गार्नेट :- इसका रंग लाल होता है। अतः इसे रक्तमणी कहा जाता है। इसके उत्पादन में राज० को देश में एकाधिकार प्राप्त है।

उत्पादक क्षेत्र :-
(1) राजमहल (टोंक) → सर्वाधिक
(2) सरवाड़ (अजमेर)

(2) पन्ना :- इसे एमरल्ड भी कहा जाता है। यह हरे रंग का होता है। इसलिये इसे हरी अग्नि कहते है। जयपुर में एशिया की सबसे बड़ी पन्ने की मण्डी है।

Imp उत्पादक क्षेत्र :- काला गुमान (उदयपुर) [सर्वाधिक]
Imp अन्य जिले :- अजमेर, राजसमंद

(3) हीरा :- इसका उपयोग कॉंच/शीशा काटने में किया जाता है।

उत्पादक क्षेत्र :- केसरपुरा- मानपुरा (~~प्रतापगढ़~~ चित्तौड़गढ़)

Note :- भारत में सबसे ज्यादा हीरा मध्यप्रदेश के पन्ना जिले से निकलता है।

[B] इमारती पत्थर :-

(1) संगमरमर :- [मार्बल]
→ नागौर जिले के मकराना क्षेत्र का सफेद रंग का मार्बल विश्व विख्यात है। जिसका उपयोग ताजमहल बनाने में किया गया था।
→ राजसमंद जिले से सर्वाधिक मार्बल निकलता है।
→ किशनगढ़ (अजमेर) में देश की सबसे बड़ी मार्बल मण्डी है।
→ देश का 90% मार्बल अकेले राज० से निकलता है।
↓
प्रथम स्थान (राज०)

उत्पादक क्षेत्र :-

विभिन्न रंग का मार्बल	उत्पादक क्षेत्र
(1) सफेद रंग का मार्बल	→ मकराना (नागौर) (प्रसिद्ध), मोरवड़ (राजसमंद)
(2) काले रंग का मार्बल	→ भैंसलाना (जयपुर)
(3) हरे रंग का मार्बल	→ उदयपुर
(4) पीला धीटदार रंग का मार्बल	→ जैसलमेर
(5) सतरंगी मार्बल	→ खादरा (पाली)
(6) बादामी रंग का मार्बल	→ जोधपुर
(7) गुलाबी रंग का मार्बल	→ भरतपुर
(8) लाल रंग का मार्बल	→ धौलपुर

Imp. (1)–(3)

(2) ग्रेनाइट :- जालोर में सर्वाधिक गुलाबी रंग का ग्रेनाइट निकलता है। इसलिये इसे ग्रेनाइट सिटी भी कहते है।

उत्पादक क्षेत्र :- (1) जालौर (सर्वाधिक)
(2) बाड़मेर

(3) कोटा स्टोन :- यह पत्थर सर्वाधिक कोटा से निकलता है इसलिये इसे कोटा स्टोन कहा जाता है।

उत्पादक क्षेत्र : (1) कोटा (सर्वाधिक)
(2) झालावाड़
(3) चित्तौड़गढ़

(4) स्लेट पत्थर :- अलवर

(5) सेण्डस्टोन / बालू पत्थर :- यह पत्थर जोधपुर जिले से सर्वाधिक निकलता है।

उत्पादक क्षेत्र :-

विभिन्न रंग का सेण्डस्टोन	उत्पादक क्षेत्र
(1) गुलाबी रंग का	धौलपुर, करौली, स॰ माधोपुर, भरतपुर

(2) लाल रंग का सेंडस्टोन → जोधपुर
(3) पीले → जैसलमेर

[c] उर्वरक खनिज :-

अम्लीय मिट्टी हेतु (रॉकफॉस्फेट)	क्षारीय मिट्टी हेतु (जिप्सम)
0 — 0-7 (PH मान) — 7	7-14 (PH मान) — 14

(1) जिप्सम :- इसे 'हरसौंठ' भी कहते हैं। [स्थानीय भाषा में]
इसका उपयोग क्षारीय मिट्टी के उपचार तथा P.O.P [प्लास्टर ऑफ पेरिस) बनाने में किया जाता है।
→ देश का 93% जिप्सम राज० से निकलता है।
(प्रथम स्थान)
उत्पादक क्षेत्र :- ① भदवाली (गोठ मांगलोद) [नागौर] → सर्वाधिक
② जामसर (लूणकरणसर) [बीकानेर]
अन्य जिले :- चूरू, जैसलमेर, गंगानगर

Note:- जामसर एशिया की सबसे बड़ी जिप्सम की खान है जो वर्तमान में बंद है।

(2) रॉक फॉस्फेट :- इसका उपयोग अम्लीय मिट्टी के उपचार में किया जाता है।
उत्पादक क्षेत्र :-
V. Imp (1) झामड़ कोटड़ा - सीसारमा [उदयपुर]
(2) बिरमानिया व लाठी क्षेत्र [जैसलमेर]
→ देश का 56% रॉकफॉस्फेट राज० से निकलता है।
अन्य जिले :- जयपुर, बांसवाड़ा

(3) पाइराइटस :- इसका उपयोग रासायनिक उर्वरक बनाने में किया जाता है।

✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर
विषय :- भूगोल
REET L-I & L-II

उत्पादक क्षेत्र :- सवेदीपुरा (सीकर)

[D] रासायनिक खनिज :-

(i) चूना पत्थर :- इसे "लाइमस्टोन" भी कहते है।
→ चूना पत्थर का उपयोग सीमेन्ट बनाने में किया जाता है।
→ चित्तौड़गढ़ जिले से सर्वाधिक चूना पत्थर निकलता है।
राज० में (3) प्रकार का चूना पत्थर निकलता है —
Imp (1) स्टील ग्रेड चूना पत्थर :- सानू (जैसलमेर)
(2) सीमेन्ट ग्रेड " " :- चित्तौड़गढ़ (राजसमन्द)
(3) कैमीकल ग्रेड " " :- जोधपुर, नागौर

अन्य जिले :- सिरोही, उदयपुर, जयपुर, कोटा

(2) फ्लोरसपार / फ्लोराइट :- इसका उपयोग इंग-रोगन बनाने, पैन्ट बनाने में किया जाता है

उत्पादक क्षेत्र :-
Imp (1) मांडो की पाल [डूंगरपुर]

अन्य जिले :- सिरोही, जालोर, सीकर

(3) बेराइट्स :-
उपयोग → रंग-रोगन बनाने में किया जाता है
उत्पादक क्षेत्र :- उदयपुर (सर्वाधिक)
तथा इसका उपयोग कागज उद्योग, तेल के कुएँ खोदने व ब्लीचिंग पाउडर बनाने तथा दवाईयों में किया जाता है।
अन्य जिले :- अलवर, भरतपुर, अजमेर, बूंदी।

(5) नमक :- यह भी रासायनिक खनिज है।
देश का 23% नमक राज० से निकलता है
(बारह)

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

नमक उत्पादन में गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु के बाद राज० का चौथा स्थान है

→ झीलों के खारे पानी से नमक बनाने में राज० का देश में प्रथम स्थान है।

सांभरझील :- जयपुर

→ इस झील के खारे पानी से देश का [8.7%] नमक उत्पादित होता है।

(5) **घीया पत्थर :-** इसका उपयोग टेल्कम पाउडर, रंगीनपेंसिल एवं खिलौने बनाने में किया जाता है।

→ देश का 90% (प्रथम स्थान) घीया पत्थर राज० से निकलता है।

उत्पादक क्षेत्र :- (1) सवाईमाधोपुर, (2) सीकर (3) उदयपुर

(E) **उष्मारोधी खनिज :-** ऐसे खनिज जो उच्च तापमान सहन कर सकते है।

V.Imp (1) **फेल्सपार :-**

उत्पादक क्षेत्र :- मकरेरा (अजमेर) [यहाँ से राज्य का 96% (प्रथमस्थान) फेल्सपार निकलता है।]

अन्य जिले :- जयपुर, पाली, टोंक, सीकर, डूंगरपुर, उदयपुर

Note :- राज० देश का 60% (प्रथम स्थान) फेल्सपार उत्पादित करता है।

(2) **वोलेस्टोनाइट :-** इसके उत्पादन में राज० को देश में एकाधिकार प्राप्त है।

उत्पादक क्षेत्र :- सिरोही (सर्वाधिक)

अन्य जिले :- उदयपुर, सीकर

अनुभवी, चयनित एवं विख्यात विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा अध्यापन - श्रीराम कोचिंग, सीकर

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

(3) मुल्तानी मिट्टी :-
उत्पादक क्षेत्र :- बाड़मेर (सर्वाधिक)
अन्य जिले :- जैसलमेर, बीकानेर

(4) फायरक्ले (मिट्टी)
बालक्ले → बीकानेर [खिलौने बनाने के काम में आती है]

(5) चायनाक्ले :- अलवर, सवाईमाधोपुर, उदयपुर, सीकर

Imp (6) सिलिकासेण्ड / बालुकाकाँच :- इसका उपयोग काँच बनाने में किया जाता है
उत्पादक क्षेत्र :- ① बारोदिया (बूँदी)
② झर, सांगोद (जयपुर)
③ स० माधोपुर
④ भरतपुर
⑤ करौली

(7) एस्बेस्टस :- इसका उपयोग सीमेन्ट की चादरें, टायलें, फिल्टर बनाने में किया जाता है
उत्पादक क्षेत्र :- ऋषभदेव - खैरवाड़ा (उदयपुर) सर्वाधिक
अन्य जिले :- अजमेर, जोधपुर, डूंगरपुर
→ देश का 90% एस्बेस्टस राज० से निकलता है

(8) क्वार्टज :- उत्पादन (अजमेर)

[F] इलेक्ट्रॉनिक्स खनिज :-

V.V. Imp ① अभ्रक :- / माइका
→ राज० देश का 22% अभ्रक उत्पादित करता है
उत्पादक क्षेत्र :- दांता - भूनास - फूलिया - बनेड़ी क्षेत्र (भीलवाड़ा) → सर्वाधिक
अन्य जिले :- टोंक, अजमेर, उदयपुर, जयपुर

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

Note: भीलवाड़ा में अभ्रक की ईंट बनाने का उद्योग है।

[6] परमाणु | आणविक खनिज

(1) यूरेनियम :-

→ इसका उपयोग परमाणु बिद्युत बनाने में किया जाता है

उत्पादक क्षेत्र :- उमरा (उदयपुर) → (सर्वाधिक)

खण्डेला (सीकर)

(2) बेरिलियम :-

इसका उपयोग परमाणु भट्टी में मंदक के रूप में किया जाता है

उत्पादक क्षेत्र :- बड़ी शिकारबाड़ी (उदयपुर)

कुम्परवाड़ा (जयपुर)

(3) थोरियम :-

इसे मोनोजाइट रेत से प्राप्त किया जाता है

→ इसका उपयोग परमाणु बिजली बनाने में किया जाता है

उत्पादक क्षेत्र :- वाल्दा (सिरोही)

आबूरेवदार (सिरोही)

नाना-कराब (पाली)

(4) ग्रेफाइट :- इसका उपयोग परमाणु भट्टी में मंदक के रूप में किया जाता है

उत्पादक क्षेत्र :- अजमेर

उदयपुर

DATE: / /

ईंधन खनिज

① कोयला
② प्राकृतिक गैस
③ खनिज तेल

① कोयला :-

→ राज० में टरशियरी क्रम की चट्टानों से लिग्नाइट प्रकार का कोयला निकलता है।

→ लिग्नाइट कोयले के उत्पादन में तमिलनाडु (I) के बाद राज० (II) का देश में दूसरा स्थान है

→ राज्य के बाड़मेर जिले में सर्वाधिक कोयले के भण्डार है एवं यहाँ से सर्वाधिक उत्पादन होता है

उत्पादक क्षेत्र :-
① गिरल - कपुरड़ी, जालिपा, कैसलू (बाड़मेर) → सर्वाधिक
② पलाना, बरसिंहसर, पानेरी, गुढ़ा (बीकानेर)
③ मेड़ता रोड, मातासुख, इग्यार क्षेत्र (नागौर)

② प्राकृतिक गैस :-

→ कृष्णा, गोदावरी डेल्टा (आन्ध्रप्रदेश) भारत का प्रमुख प्राकृतिक गैस उत्पादन क्षेत्र है।

→ राज० में सर्वप्रथम प्राकृतिक गैस की खोज 1983 में घोटारू (जैसलमेर) में हुई थी।

→ जैसलमेर में सर्वाधिक प्राकृतिक गैस के भण्डार है।

उत्पादक क्षेत्र :-
① रामगढ़, घोटारू, तनोट, साँदेवाला, मनिहारटिब्बा, घुमनेवाला (जैसलमेर) → सर्वाधिक

Note:- रामगढ़ में देश की प्रथम गैस आधारित विद्युत परियोजना है। घोटारू क्षेत्र से मिथेन तथा हिलियम गैसों का मिश्रण निकलता है।

③ खनिज तेल :-

→ राज० में सर्वप्रथम 1984 में साँदेवाला के निकट कमलीतला (जैसलमेर) नामक स्थान पर खोज हुई थी।

→ बॉम्बे हाई (महाराष्ट्र) (I) के बाद खनिज तेल उत्पादन में राज० का (II) दूसरा स्थान है

→ बाड़मेर जिले से सर्वाधिक खनिज तेल का उत्पादन है तथा यहाँ पर खनिज तेल के सर्वाधिक भंडार है

① मंगला I (बाड़मेर) :-

यहाँ से खनिज तेल का दोहन सर्वप्रथम — 29 अगस्त 2009 को शुरू किया था।

→ यहाँ से प्रतिदिन 1.75 लाख बैरल खनिज तेल का दोहन हो रहा है।

→ खनिज तेल का दोहन यहाँ पर केयर्न इंडिया लिमिटेड (स्कॉटलैण्ड) द्वारा किया जाता है।

② भाग्यम (बाड़मेर)

→ यहाँ से खनिज तेल का दोहन सर्वप्रथम 21 जनवरी 2012 को शुरू किया गया था।

→ यहाँ से प्रतिदिन 45000 बैरल खनिज तेल का दोहन हो रहा है।

→ यहाँ पर खनिज तेल का दोहन केयर्न इंडिया लिमिटेड (स्कॉटलैण्ड) (भारत) O.N.G.C. [ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कम्पनी] के सहयोग से किया जाता है

अन्य खनिज तेल के कुएँ

(1) विजया
(2) ऐश्वर्या
(3) रागेश्वरी
(4) राजेश्वरी
(5) भाग्येश्वरी
(6) कामेश्वरी

→ बाड़मेर

(7) नानूवाला :- हनुमानगढ़
(8) तूबरी वाला :- बीकानेर
(9) तनोट सरस्वती क्षेत्र :- जैसलमेर

→ उदयपुर जिले से सर्वाधिक खनिज निकलते हैं।

खनिज का नाम	सर्वाधिक उत्पादन
[A] धात्विक खनिज	
(1) लौह अयस्क	मोरिजा - बानोला क्षेत्र - [जयपुर]
(2) कॉपर / ताँबा	खेतड़ी - सिंघाना [झुन्झुनू]
	खो - दरीबा [अलवर]
(3) चाँदी	जावर [उदयपुर]
(4) मैंगनीज	लीलवाणी - कालाखूंटा [बाँसवाड़ा]
(5) सोना	आनंद - भूकिया [बाँसवाड़ा]
(6) टंगस्टन	डेगाना - भाकरी [नागौर]
(7) सीसा - जस्ता	रामपुरा - आँगूचा [भीलवाड़ा]
	चौथ - का बरवाड़ा [सवाई माधोपुर]
[B] अधात्विक खनिज	
(i) बहुमूल्य पत्थर	

www.shriramedu.com
✆ 9414015200
श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर
An ideal institute for Competitive Exams
हैड ऑफिस: भाटी मेंशन, बजाज रोड, सीकर ✆ 01572-254777
HAND WRITTEN Classroom Coaching NOTES
Best Faculty Team + Super Coaching System + Personal care = श्रीराम कोचिंग, सीकर

विषय :- भूगोल

REET L-I & L-II

(1)	गार्नेट / तामड़ा	राजमहल (टोंक), सरवाड़ (अजमेर)
(2)	पन्ना / एमरल्ड	कालागुमान (उदयपुर)
(3)	हीरा	केसरपुरा (चित्तौड़गढ़)

(2) इमारती पत्थर

(1)	संगमरमर / मार्बल [सफेद, काला, हरा] → मकराना (नागौर), भैंसलाना (जयपुर), (उदयपुर)	राजसमंद
(2)	ग्रेनाइट	जालौर
(5)	सैण्डस्टोन / बालू पत्थर	जोधपुर
(6)	स्लेट पत्थर	अलवर
(7)	कोटा स्टोन	कोटा

(3) उर्वरक खनिज

(1)	जिप्सम	भदवाली - गोठ मांगलोद (नागौर)
(2)	रॉक-फॉस्फेट	झामर-कोटड़ा (उदयपुर)
(3)	पाइराइट्स	सलेदीपुरा (सीकर)

(4) रासायनिक खनिज

(1)	चूना पत्थर	चित्तौड़गढ़
	(A) स्टीलग्रेड चूना पत्थर →	सानू (जैसलमेर)
	(B) सीमेण्टग्रेड " " →	चित्तौड़गढ़, (राजसमंद)
	(C) कैमीकलग्रेड " " →	जोधपुर, नागौर
(2)	फ्लोरस्पार / फ्लोराइट	मांडो की पाल (डूंगरपुर)
(3)	बेराइट्स	उदयपुर
(4)	नमक	सांभर झील (जयपुर)
(5)	घीया पत्थर	सवाईमाधोपुर

उष्मारोधी खनिज

(1) फेल्सपार	मकरेरा (अजमेर)
(2) वोलेस्टोनाइट	सिरोही
(3) मुल्तानी मिट्टी	बाड़मेर
(4) बालक्ले, फायरक्ले →	बीकानेर
(5) चायना क्ले	अलवर
(6) सिलिकासैण्ड	बूंदी, जयपुर
(7) एस्बेस्टस	उदयपुर
(8) ग्रेनाइट	अजमेर

इलेक्ट्रॉनिक्स खनिज

(1) अभ्रक | माइका	दांता-भूणास (भीलवाड़ा)

परमाणु खनिज \| आणविक खनिज

(1) यूरेनियम	उमरा (उदयपुर), खण्डेला (सीकर)
(2) बेरिलियम	बड़ी शिकारबाड़ी (उदयपुर), गुजरवाड़ा (जयपुर)
(3) थोरियम	वाल्दा (सिरोही), आबू रेवदार (सिरोही), नानाकराव (पाली)
(4) गेलाइट	अजमेर

[C] ईंधन खनिज

कोयला	कपूरड़ी - जालीपा, गिरल, कोसलू (बाड़मेर)
प्राकृतिक गैस	रामगढ़, तनोट, साढेवाला, मनिहारी टिब्बा, घोटारू (जैसलमेर)
खनिज तेल	मंगला, भाग्यम → बाड़मेर